

जैनाचार्य प्रवर्त्तनी श्रीमती हीरश्री जी महाराज

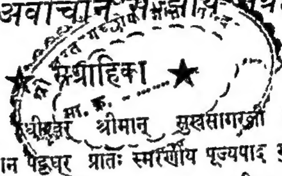
जन्म—सम्वत १९३८ ज्येष्ठ शुद्ध – १०, फलोदी मे

दीक्षा—सम्वत १९५६ वैशाख सुदी—५

स्वर्गवास—सम्वत १९८३ फाल्गुन सुदी—८, गुडा गांव मे

।। सुखसागर भगवत जिन हरि आनद सद्गुरुभ्यो नम ।।

* प्राचीन अर्वाचीन सज्झाय संग्रह *



★ संग्राहिका ★

पूज्यपाद गणाधीश्वर श्रीमान् सुखसागरजी महाराज
साहब के वर्तमान पट्टधर प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद गुरुवर्य
वीर पुत्र श्रीमान् जिन आनन्द सागर सूरीश्वर जी
महाराज साहब की आज्ञानुयायिनी, प्रवर्तिनी
जी श्रीमती पुण्य श्री जी महाराज साहिबा की
शिष्या श्रीमतीजी हीरश्रीजी महाराज सा०
की शिष्या रत्न विदुषी रंभाश्रीजी

प्रकाशक

संग्राहिका साध्वीजी रम्भाश्रीजी
के सदुपदेश से आर्वी
आदि शहरों के भाविक
भक्तों द्वारा प्रदत्त

द्रव्य से—

जोगराजजी गुलाबचन्दजी गुलेच्छा मु० फलोदी।

प्रथमवार	मूल्य	वीर संवत् २४८७
प्रति १०००	सदुपयोग	वि० संवत् २०१७

प्रस्तुत पुस्तक श्री सज्झाय संग्रह में जिन महानुभावों ने द्रव्य सहायता प्रदान की उसकी शुभ

नामावली

१०१) ज्ञान पूजन का

१०१) श्रीमान् गुलाबचन्दजी मुकनचंदजी गोलेछा, फलोदी।

१०१) श्रीमान् जोगराजजी बडेर की धर्मपत्नी, राजोबाई, धुलिया।

१०१) ,, लक्ष्मीचंदजी गोलेछा की ,, आसीबाई, बागबहारा।

१०१) ,, नेमीचंदजी श्री श्रीमाल की ,, ठेलाबाई, ,,

१०१) ,, राखुलालजी गोठी की ,, जेठीबाई, खरियार रोड।

५१) ,, मीश्रालालजी चतुर मुहता की मातेश्वरी राजोबाई ,,

५१) ,, माणकचंदजी वेद की धर्मपत्नी चम्पाबाई, ,,

३१) ,, कोठारी भाई गुजराती, ,,

२५) ,, नाथालाल भाई, ,,

४१) श्रीमती छोटीबाई तथा उनकी मातेश्वरी पुंगलिया, ,,

२१) श्रीमान् पेमराजजी मालु ,,

५१) श्रीमान् दीपचंदजी सीपी की धर्मपत्नी लुणीबाई, कुसुमकसा।

१५) ,, कन्हैयालालजी लुणीया की ,, आसीबाई, ,,

५१) ,, बख्तावरमलजी श्री श्रीमाल की ,, जमनाबाई, महासमुन्द।

२१) ,, शंकरलालजी गोलेछा, ,,

५१) ,, ताराचन्दजी बोथरा की धर्मपत्नी, नवापारा राजिम

२५) ,, धर्मचंदजी बोथरा की ,, कमलाबाई ,,

२५) ,, जमनालालजी बोथरा की ,, छोटीबाई ,,

२५) ,, भीखमचंदजी मोहनोत की ,, सुखदेवबाई खैरागढ़

२५) ,, गुलाबचंदजी ,, की ,, सुरजबाई, ,,

२१) ,, पन्नालालजी ,, की ,, जोरावरबाई, ,,

२५) ,, संपतलालजी लुणीया की ,, राजनांदगांव

२५) ,, फुलचंदजी सेठीया की ,, गोनाबाई, फलोदी

१५) ,, मिश्रीलालजी गोलेछा की ,, डाईबाई, ,,

२५) श्रीमती चचलबाई बोथरा,			रामपुर
११) ,, पानीबाई लुणीया,			राजनांदगांव
१०) श्रीमती कमलाबाई एवं ताराबाई कोठारी,			महासमुंद
११) श्रीमान् कनैयालालजी गोलेछा की धर्मपत्नी		छमाबाई,	राजनांदगाव
११) ,, हीरालालजी लुणावत की	,,	मोतीबाई	,,
१०) ,, गुनराजजी वेद की	,,	जमनाबाई,	,,
१०) ,, राणुलालजी लुणीया की	,,	ठगियाबाई,	,,
१०) ,, वृद्धिचंदजी लुणीया की	,,		,,
६) श्रीमती ढलाबाई की मातेश्वरी			,,
५) श्रीमान् लक्ष्मीलालजी गोलेछा,			,,
७) एक गुप्त श्राविका,			,,
५) श्रीमती जीवणीबाई बरदिया,			,,
५) ,, सुंदरबाई गोलेछा,			,,
५) श्रीमान् गुमानमलजी वेद की मातेश्वरी			,,
५) ,, धुडमलजी दुगड की	,,		,,
५) ,, मानचंदजी कोठारी की	,,		,,
२१) श्रीमती चचल देवी वेद,			फलोदी
११) श्रीमान् जवरीमलजी,			खैरागढ़
७) ,, पन्नालालजी भावुक की धर्मपत्नी			,,
५) ,, बिजेलालजी मोहनोत की	,,		,,
११) ,, भाईदानजी,			कुरुमकला
७) श्रीमती मागीबाई की मातेश्वरी लूणावत,			,,
६) श्रीमान् सुगनचंदजी सींपो,			,,
११) ,, मोहनलालजी कानूगा की धर्मपत्नी		चंचल देवी	रायपुर
११) ,, जीवनलालजी सोलंकी की	,,	मनोरी बाई,	,,
७) ,, श्रीचन्दजी लूणावत की मातेश्वरी,			,,
५) श्रीमती मगनलोया बाई गोलेछा,			,,
५) ,, पंताबाई,			,,
५) श्रीमान् पुनमलालजी कानूगा,			,,

ॐ अर्हम् ।

(श्रीमत् सुखसागर सद्गुरुभ्यो नम)

॥ नमस्ते = वीतरागाय ॥

अनेकों उत्तम कविशेखर रचित

* सज्झाय संग्रह *

मङ्गल व प्रार्थना

(शार्दूल विक्रीडित वृत्तम्)

सिंदूर प्रकरस्तपः करिशिरः क्रोडे कषायाटवी-
दावार्चिर्निचयः प्रबोधदिवसप्रारम्भसूर्योदयः ।
मुक्तिस्त्रीवदनैककुंकुमरसः श्रेयस्तरो पल्लव-
प्रोल्लास· क्रमयोर्नखद्युतिभरः पार्श्वप्रभोः पातुनः ॥१॥

अर्हन्तो ज्ञान भाजः, सुरवर महिताः सिद्धिसौधस्थ सिद्धाः ।
पचाऽचार प्रवीणा· प्रगुण गणधराः पाठकाश्चागमानाम् ।
लोके लोकेशवंद्या· सकलयति वरा·, साधुधर्माभिलीनाः ;
पंचाप्यते सदाप्ता विदधतु कुशलं विघ्ननाशं विधाय ॥२॥

छे प्रतिमा मनोहारिणी दुःखहरी, श्रीवीर जिणन्दनी ;
भक्तों ने छे सर्वदा सुखकरी, जाने खिली चान्दनी ।

आ प्रतिमां नां गुण भाव धरीने, जे माणसो गायछे ;
पामी सर्वदा सुखने जगतमां, मुक्ति पुरी जाय छे ॥३॥
आयो शरणे तुमारे जिनवर ! करजो आशापूरी हमारी ;
नाऽयो भव पार म्हारो तुम विन जग में सार ले को हमारी ।
गायो जिनराज आजे हर्ष अधिक थी, परम आनन्द कारी;
पायो तुम दर्श नाशे भव भव भ्रमणा, नाथ ? सर्व हमारी ॥४॥
त्हाराथी न समर्थ अन्य दीननो, उद्धारनरो प्रभु ।
म्हाराथी नहीं अन्य पात्र जगमां, जोता जडे हे विभु ?
मुक्ति मंगलस्थान ? तोय मुझने, इच्छा न लक्ष्मी तणी ;
आपो सम्यग्रत्न श्याम जीवने, तो तृप्ति थाये घणी ॥५॥

❀ प्रार्थना ❀

ॐ अर्हम् जय हे महावीर, शासन नायक गुण गम्भीर ।
त्रिशला नन्दन श्री महावीर, शासन नायक गुण गम्भीर । टेर
जय जय शान्तिनाथ भगवान, पतित पावन तुम हो स्वाम ।
मन वांछित देवो अभिराम, विश्वशान्ति का अविचल धाम ॥१॥
घर घर वर्ते मंगल माल, हो त्रिशला के नन्दन लाल ।
काटो कर्मों की तुम जाल, शरणे आये है रखवाल ॥२॥
सद्बुद्धि देना भगवान्, करना मेरा तुम कल्याण ।
जिन अरिहंत तुम्हारा नाम, वीतराग पद पाये स्वाम ॥३॥
जय जय हो जिनवर भगवान संघ के नायक गुण मणि खाण ।
जय जय हो हरि पूज्य प्रधान, कान्तिसागर गावे गुणगान् ॥४॥

॥ ॐ ॥

॥ सुखसागर सद्‌गुरुभ्यो नम ॥

सज्झाय संग्रह

श्री धन्ना अणगारनी सज्झाय

ज्ञानसागरजी कृत

दोहा

कर्म रूप अरि जीतना, धीर पुरुष महावीर
प्रणमु तेहना पाय कमल, अे कचित साहस धीर ॥१॥
गुण धन्ना अणगारना, कहेता मनने कोड ।
सान्निध्य करजो शारदा, जापे थापे जोड ॥२॥

"ढाल पहली"

(राग—नणदल चिन्दली ले)

काकदी नगरी केरो, जितशत्रु राय भलेरो हो राय जिन गुणरागी,
भुज वले करी अरीयण जीते, तेजे करी दिणयर दीपे हो रा. ॥१॥
तेह नयरी माहे निरावाह, वसे भद्रा मार्थ्य वाह हो सुन्दर सोभागी,
घर सोवन बत्तीस कोडी, कोई न करे तेहनी जोडी हो सु. ॥२॥
तस सुत धन्नो इणे नामे, अनुक्रमे जोबनवय पामे हो सु.
एक लगने बत्तीस सागी, परणावी मात्रे नारी हो सु. ॥३॥
सोवन वरणी शशिवयणी, मृगनयणी ने मन हरणी हो सु.
लही विलसे सुख सयोग, दोगुन्दकनी परे भोग हो सु. ॥४॥

श्रे हुवे श्रीजिन महावीर, विचरन्ता गुण गंभीर हो जिनजी सोभागी,
आव्या काकंदीनो उद्याने, पहोंत्या प्रभु निर्वद्य थाने हो ॥५॥
वनपाले विनव्यो राय, आव्या धर्मी जन सुखदाय हो जि.
त्रणलोक तणा हितकारी, भविजनने तारणहारी हो जि. ॥६॥
प्रीतिदान हरखशुं देई,
चतुरंगी दल साथे लेई हो राय जिनगुण रागी,
पांच अभिगमे जिन वन्दे, सुणे देशना मन आनंदे हो राय. ॥७॥
परिवारशुं पाले धन्नो, आव्यों वन्दण ते एक मन्नो हो सु.
सुणी देशना अमिय समाणी,
वैरागी थयो गुण खाणी हो सुन्दर सो. ॥८॥
घेर आवी अनुमति मांगे, धन्नों संयमने रागे हो कुंवर सोभागी,
इम सुणी ने मूर्छा खाई, जागी कहे भद्रा माई हो कुंवर सो. ॥९॥
तुं जोवनवय सुकुमाल, भोगव भोग रसाल कुवर सो. ।
अनुमति कोई न देशे, पाडोशी संयम लेशे हो कुवर सो. ॥१०॥
श्रे हवे बत्तीश तिहां आखे,
भामिनी भरी भरी आंखे हो पिउडा सोभागी ।
गद् गद् वचने कहे गुणवंती, आगल खोला नांखंती हो पिउडा ॥११॥
बक्षशो गुनाह अबला नार, तुमची प्रीतम प्राणाधार हो पिउडा ।
विण अपराधे व्हाला एवो, कां द्यो टाढो मारएवोहो पिउडा ॥१२॥
भर जोवन मां ममता मूको, छेहदो कुण माटे चूको हो हिउडा ।
शाने तो परणी पियु अमने,
सहु लोकतणी मली साखे हो पिउडा ॥१३॥

पद्मिनी ने पीडा उपाई, कोणे कहो मुगति पाई हो पिउडा ।
जो छोडो छो तो पियु अमने,
अवगुण कोइ दाखो अमनेहो पि. ॥१४॥
पालव झाली प्रेमे एह , गोरी कहे सुणो गुणगेह हो पिउडा ।
उंडो जाणी ने आदरियो एह छीलर थईने दियो छेह हो पि. ॥१५॥

"ढाल दूजी"

कहे धन्नो कामिनी प्रत्ये, काज न आवे कोय रे ।
परभव जातां जीवने, म्हे वात विचारी जोय रे कहे. ॥१॥
माता पिता बंधव सहु, पुत्र कलत्त परिवार रे,
स्वारथना सहु को सगा, मलिया छे संसार रे कहे. ॥२॥
नारी नरकनी दीवडी, दुर्गतिनी दातारो रे,
वीरे वखाणी वखाणमा, मे आज सुण्यों अधिकारोरे कहे. ॥३॥
तिणे रति अे घरवासमा, हुँ रहेता नथी लहतो रे,
सुख पामीश संयम थकी, अरिहंतनी आण वहतो रे कहे ॥४॥
माता ने मानिनी हवे, वड वैरागी जाणे रे,
अनुमति आपे दीक्षा तणी, प्रीति न होय पराणे रे कहे ॥५॥

"ढाल तीजी"

(राग—वीरा चांदला)

गई भद्रा लेई भेटणुं, नृप जितशत्रु पास,
नृपति ने प्रणमी कहे, अवधारो अरदासो रे वैरागी थयो ॥१॥
म्हारो नानडियो सुकुमाल रे, वीर वचन सुणी,
चारित्र ले उजमालो रे, वैरागी थयो ॥२॥

तिणे प्रभु तुमने विनवुं, करवा ओच्छव काज,
छत्र चामर दियो राउला, वली नोबत नो साज रे वै. ॥३॥
ते निसुणी राजा कहे, सुणो भद्रा ससनेह,
ओच्छव धन्नानो अमें, करशुं दीक्षानो अे हरे वै. ॥४॥
जितशत्रु राजा हवे, आप थई असवार,
भद्रा ने घेर आवियो, जिहाँ छे धन्नोकुमार रे वै. ॥५॥
धन्ना ने न्हवरावी ने, पहेरावी शणगार,
सहस वाहन सुखपालमां, वेसार्यो वेणीवार रे वै. ॥६॥
छत्र धरी चामर करी, वाजां विविध प्रकार,
आडंवर थी आवीयो, जिन कने वनह मोझारो रे वै. ॥७॥
तिहाँ शिविका थी ऊतरी, कूंण इशाने आय,
आभरण देई मात ने, लोच करे चित्त लाय रे वै. ॥८॥
वांदी भद्रा वीर ने, कहे सुणो करुणावन्त,
देऊं हूँ भिक्षा शिष्यनी, वोहरो त्रिभुवन कंतोरे वै. ॥९॥
श्रीमुखे श्री जिनवीरजी, पंच महाव्रत एव,
धन्ना ने त्रिभुवन धणी, उच्चरावे ततखेव रे वै. ॥१०॥
पंच महाव्रत उच्चरी, कहे धन्नो अणगार,
आज थकी कल्पे हवे, सुणो प्रभु जगदाधार रे वै. ॥११॥
छठ तप आंबिल पारणे, करवो जावज्जीव,
ईण मांही ओछों नहीं, अे तप करवो सदीव रे वै. ॥१२॥
भद्रा वांदी ने वल्या, करता वीर विहार,
नगरी राजगृही अन्यदा, पहोंत्या बहु परिवार रे वै. ॥१३॥

भाव सहित भक्ति करी, श्री श्रेणिक भूपाल,
वादी ने श्री वीर ने, पूछे प्रश्न रसाल रे गौ. ॥१४॥
चौद सहस अणगारमा, कुण चढते परिणाम,
कहो प्रभुजी ! करुणा करी, निरुपम तेहनुं नाम रे गौ. ॥१५॥

"ढाल चौथी"
(राग—निंद्रडी वेरण हुइ रही)

श्रेणिक ! सुण सहस चौदमा, गुणवन्तो हो गिरुओ छे जेह के,
चारित्रीयो चढते गुणे, तपे नलियों हो तपसी मांहि अेह के
ते मुनिवर जग वन्दीये ॥१॥
एक धन्नो हो धन्नो अणगार के, काया ते कीधी कोयलो,
वन्यो वाव्ल हो जाणे हुनो छार के ते मुनिवर ।नत्य ॥२॥
छट्ठ तप आंबिल पारणे, लीये नीरस हो विरस तिम आहार के,
माखी न वछे तेहने, दीये आणी हो देहने आधार के ते. ॥३॥
वेलीथी नीलुं तुं बडुं, तोडी ने हो तडके धर्यों जेम के,
सूकवी लीलरियो वली, ते ऋषिनुं हो माथुं थयु तेम के ते. ॥४॥
आंखो वे ऊंडी तगतगे, तारा तणी हो परे दीसे तास के,
होठ बे सूका अति घणा, जीभ सूकी हो पानडलु पलाश के ते. ॥५॥
जूं जुई दीसे आगुली, कोणी बे हो निसरीया तिहां हाड के,
जंघा बे सूकी कागनी, दीसे जाणो हो के जीरण ताड के ते. ॥६॥
आंगुली पगनी हाथनी, दीसे सूकी हो जिम मगनी शींग के,
गांठा गणाय्रे जुजुया, तपसी माहीं हो धोरी अेह धींग के ते. ॥७॥
गोचरी जाटे खडखडे, हिंडता हो जेहना दीसे हाड के,
ऊंटना पगला सारिखां, दोय आसन हो नेठा थई खाड के ते.॥८॥

पिंडी सूकी पग तणी, थई जाणे हो धमण सरखी चाम के,
चाले ते जीव तणे बले, पण कायनी हो जेने नहीं हाम के ते. ॥९॥
परिहरी माया कायनी, सोसवाने हो रुधिर ने मांस के,
अनुत्तरोववाई सूत्रमाँ, फरी वीरे हो ऋषिनीप्रशंस के ते. ॥१०॥
गुण सुणी श्री अणगारना, देखवाने हो जाय श्री श्रेणिक राय के,
हिंडे ते वनमां शोधता, ऋषि ऊभो हो पण
नवि ओलखाय के ते. ॥११॥
जोतां रे जोतां ओलख्या, जाई वन्दे हो ऋषिना पाय भूप के,
जेवुं वीरे वखाणयुं तेहवुं, दीठुं हो तपसीनुं रूप के ते. ॥१२॥
वान्दी स्तवी राजावल्यो, ऋषि कीधो हो अणसण तिहाँ एव के,
वैभारगिरी एक मासनो, पालीने हो चवी उपन्यो देव के ते ॥१३॥

'ढाल पांचवीं"

(राग—धन धन सम्प्रति०)

धन धन धन्नो ऋषीश्वर तपसी, गुण तणो भण्डार जी,
नाम लिया थी पाप पणासे, लहीये भवनो पार जी, धन० ॥१॥
तपीया नौ जव अणशन सीधुं, भण्डो पगरण लेईजी,
साधु आवी जिनने वन्दे, त्रण प्रदक्षिणा देइ जी, धन० ॥२॥
प्रभुजी शिष्य तमारो तपसी, जे धन्नो अणगार जी,
हमणां काल कियो तिण मुनिवरे, अमें आव्या इणवार जी धन०॥३॥
सांभली वृद्ध वजीर प्रभुना, श्री गोतम गणधार जी,
पूछे प्रश्न प्रभुने वांदी, कर जोड़ी तिणवार जी धन० ॥४॥
कहो प्रभुजी धन्नो ऋषि तपसी, ते चारित्र नव मास जी,
पालीने ते किण गति पहोंतो, तेह प्रकाशो उल्लास जी धन० ॥५॥

सुण गोतम ! श्रीवीर पयंपे, जिहाँ गति स्थिति श्रीकार जी,
सर्वार्थसिद्ध नाम विमाने, पाम्यो सुर अवतार जी, धन० ॥६॥
आयु सागर तेत्रीशनुं पाली, चवी विदेह उपजशे जी,
आर्यकुल अवतरीने केवल, पामी सिद्ध निपज शेजी धन० ॥७॥
एवा साधुतणा पाय वन्दी, करीये जन्म प्रमाण जी,
जिह्वा सफल होवे गुण गाता, पामीए कल्याण जी धन० ॥८॥
रही चोमासुं सत्तर एकवीशे, खभात गाम मोझार जी,
श्रावण वदी तिथि बीज तणे दिन, भृगुनदन भलो वारजी धन॥६॥
मुज गुरु श्रीमुनि माणेकसागर, पामी तास पसाय जी,
इम अणगार धन्नाना हरखे, ज्ञानसागर गुण गायजी धन० ॥१॥

॥ समाप्त ॥

★ पृथ्वीचन्द्रनी सज्झाय ★

जीवविजयजी कृत

"दोहा"

शासन नायक सुख करु, वंदी वीर जिणंद,
पृथ्वीचन्द्र मुनि गाईशुं गुणसागर गुणकंद ॥१॥
उत्तमना गुण गावतां, गुण आवे निज अंग,
वात घणी वैराग्यनी, साभलजो मनरंग ॥२॥
शंख कलावती भवथकी, भव एकवीश संबंध,
उत्तरोत्तर सुख भोगवी, एकवीश में भवे सिद्ध ॥३॥

शेठ कहे सुणो साहिबा, एक विनोदनी बात मेरे लाल,
सांभलतां सुख उपजे, भाखुं ते अवदात मेरे लाल च. ॥२१॥

दोहा

कौतुक जोता बहु गयो, काल अनादि अनन्त,
पण ते कौतुक जगवडुं, सुणतां आतम शान्त ॥१॥
कौतुक सुणतां जे हुऐ, आतमनो उपकार,
वक्ता श्रोता मन गहगहे, कौतुक तेह उदार ॥२॥

"ढाल दूजी"

(राग—सुरमणि सम०)

आव्या गजपुर नयरथी, तिहाँ वसे व्यवहारी रे लो,
रत्नसंचय तस नाम छे, सुमंगला तस नारी रे लो ॥१॥
गुणसागर तस नंदनो, विद्या गुणनो दरियो रे लो,
गोखे बैठो अन्यदा, जुऐ ते सुख भरियो रे लो ॥२॥
राजपथे मुनि मलपता, दीठा शम भरियो रे लो,
ते देखी शुभ चिंतवे, पूरव चरण सांभरियो रे लो ॥३॥
मात पिता ने अेम कहे, सुखियो मुझ कीजे रे लो,
संयम लेशुं हूं सही, आज्ञा मुझ दीजे रे लो ॥४॥
माता पिता कहे नानडा, संयमे उमावो रे लो,
तो पण परणो पद्मणी, अम मन हरखावोरे लो ॥५॥
संयम लेजो ते पछी, अन्तराय न करशुं रे लो,
विनयी वात अंगीकरी, पछी संयम वरशुं रे लो ॥६॥
आठ कन्याना तातने, इम भाखे व्यवहारी रे लो,
अमसुत परणवा मात्र थी, थाशे संयम धारी रे लो ॥७॥

इभ्य सुणी मन चमकिया, वर बीजो करशु रे लो,
कन्या कहे निज तातने, आभव अवर न वरशुं रे लो ॥८॥
जे करशे ओ गुण निधी, अमे तेह आदरशुं रे लो,
राग वैरागी होय अमे, तस आणा शिर धरशुं रे लो ॥९॥
कन्या-आठना वचन थी, हरख्या ते व्यवहारी रे लो,
विवाह महोत्सव मांडियां, धवल मंगल गावे नारी रे लो ॥१०॥
गुणसागर गिरुओ हवे, वरघोडे वर सोहे रे लो,
चौरी माहे आवीया, कन्याना मन मोहे रे लो ॥११॥
हाथ मेलावो हर्षशुं, साजन जव सहु मलियोरे लो,
हवे कुंवर शुभ चिंतवे, धर्म ध्यान सांभरियो रे लो ॥१२॥
सयम लेई सुगुरु कने, श्रुत भणशुं सुखकारी रे लो,
समता रसमें झीलशुं, काम कषायने वारी रे लो ॥१३॥
गुरु विनय नित्य सेवीशु, तप तपशु मनोहारी रे लो,
दोष बेंतालीश टालशु, माया लोभ निवारी रे लो ॥१४॥
जीवित मरणे समपणुं, सम तृण मणी गणशु रे लो,
संयम योगे थिर थई, मोह रिपुने हणशु रे लो, ॥१५॥
गुणसागर गुणश्रेणिये, थयो केवल नाणी रे लो,
नारी पण मन चिंतवे, वरीये अमे गुण खाणी रे लो ॥१६॥
अमे पण संयम साधशु, नाथ नगीना साथे रे लो,
अेम आठे थई केवली, ते सवि पियुडा साथे रे लो ॥१७॥
अंबर गाजे दुदुंभि, जय जय रव करता रे लो,
साधुवेष दे सुरवरा, सेवाने अनुसरता रे लो ॥१८॥

गुणसागर मुनि राजना, मात पिता ते देखी रे लो,
शुभ संवेगे केवली, घातीचार उवेखी रे लो ॥१६॥
नरपति आवे वांदवा, मन आश्चर्य आणी रे लो,
शंख कलावती भव थकी, निज चारित्र वखाणी रे लो ॥२०॥
भव एकवीश ते सांभली, बूझ्या केई प्राणी रे लो,
सुधन कहे सुणो साहिबा, अत्र आव्यो उमाही रे लो ॥२१॥
पण ते कौतुक देखीने, मनडो मुझ हरखायो रे लो,
केवल ज्ञानी मुझ कहे, शुं कौतुक उल्लसायो रे लो ॥२२॥
अेहथी अधिकुं देखशो, अयोध्या नाम ग्रामे रे लो,
तीनिसुणी मुनिपाय नमी, आव्यो इण ठामे रे लो ॥२३॥
कौतुक तुम प्रसादथी, जोशुं सुख कामी रे लो,
अेम कहीने सुधन तिहाँ, ऊभो शिरनामी रे लो ॥२४॥

दोहा

पृथ्वीचंद्र ते सांभली, वाध्यो मन वैराग,
धन धन ते गुणसागरुं, पाम्यो भवजल ताग ॥१॥
हुं निज तातने दाक्षिण्ये, पडियो राज्य मोझार,
पण हवे नीसरशुं कदा, थाशुं कव अणगार ॥२॥

"ढाल तीजी"

धन धन जे मुनिवर ध्याने रमे, करवा आत्म शुद्ध मुनीसर,
राजा चिंते सद्गुरु सेवना, करशुं निर्मल बुद्ध मुनीसर
धन धन जे मुनिवर ध्याने रमे ॥१॥
कबहूँ सम दम सुमति सेवशुं, धरशुं आत्म ध्यान मु.
इस चिंतवंता अपूरव गुण चढे, श्रेणिय शुक्ल ध्यान मु.ध. ॥२॥

ध्यान बले सवि आवरण क्षय करी, पाम्या केवल ज्ञान मु.
हर्ष धरी सोहमपति आविया, सहु वंदे बहुमान मु.ध. ॥३॥
साभली मातपिता मन सभ्रमे, आव्या पुत्रनी पास मु.
अेशुं अेशुं अेणीपेरे बोलता, हरिसिंह हर्ष उल्लास मु.ध. ॥४॥
दयिता आठ सुणी मन हर्षथी, उलट अंग न माय मु.
संवेग रग तरंग मे झीलती, आठे केवल थाय मु. ध. ॥५॥
सारथ सुधन पण मन चिंतवे, कौतुक अद्‌भुत दीठ मु.
नरपति पूछे मुनि चरणे नमी, स्नेहनुं कारण जिठ मु.ध. ॥६॥
केवली कहे पूरव भव साभलो, नयरी चपा जयराय मु.
सुन्दरी प्रियमति नामे तेहने, कुसुमायुध सुत थाय मु. ध. ॥७॥
दपति समये पाली शुभमना, विजयविमाने ते जाय मु.
अनुत्तर सुख विलसी सुर ते चव्या, थया तुम राणी ने राय मु.ध.॥८॥
कुसुमायुध पण संयम सुर चवी, थयो तुम सुत तणे नेह मु.
मातपिता पण पृथ्वीचन्द्रना, सुणी थया केवली तेह मु ध. ॥९॥
सारथ पूछे पृथ्वीचन्द्रने, गुणसागर तुमे केम मु.
मुनि कहे पूरव भव अम नंदनो, कुसु मकेतु तस नाम मु.ध. ॥१०॥
अेहिज दयिता दोय छे ते भवे, समये पाली ते साथ मु.
मम धर्मे मवि अनुत्तर ऊपन्या, आभव पण थई नार मु.ध. ॥११॥
साभली सुधन श्रावक व्रतलहे, बीजा पण सहु बोध मु.
पृथ्वीचन्द्र पृथ्वी पर विचरे, साहि अनत थया सिद्ध मु.ध. ॥१२॥
नित नित उठी हु तस वदन करुं, जेणे जग जीत्यो रे मोह मु.
चढते रग हो समसुख सागरुं, करतो श्रेणी आरोह मु.ध. ॥१३॥

जग उपकारी हो जग हित वच्छलु, दीठे परम कल्याण मु.
विरह म पडशो हो एवा मुनितणो, जाव लहुं निर्वाण मु.ध.॥१४॥
मुनिवर ध्याने हो जिन उतमपदवरे, रूप कला गुण ज्ञान मु.
कीर्ति कमला हो विमल विस्तरे, जीवविजय धरे ध्यान मु.ध.॥१५॥

३

"श्री सुकुमालिकानी सज्झाय"

'रामविजय कृत'

"ढाल पहेली"

(तर्ज—मुनीसर धन्न धन ते अणगार)

वसंतपुर सोहामणुं रे, राज्य करे तिहाँ राय;
सिंहसेन नृपति राजियो रे, राणी सिंहल्या नाम रे,
प्राणी जुओ जुओ कर्मनी वात,
छांडे पण छूटे नहीं रे, कर्या कर्म विशेष रे प्राणी. ॥१॥
रसिक भसिक दोय तेहनारे, उपन्या ते बालकुमार,
बालिका एक सुकुमालिकारे, रूप तणो भण्डार रे प्राणी ॥२॥
रसिक भसिक सुकुमालिकारे, वाधे ते रूप विवेक,
अनुक्रमे मोटा थया रे, ज्ञानादि गुण सुविशेष रे प्राणी ॥३॥
साधु समीप दीक्षा ग्रहीरे, रसिक भसिक कुमार,
पछी तेहनुं शुं थयो रे, जुओ जुओ कर्म विटंबरे प्राणी ॥४॥
गाम नगर पुर विचरतारे, पाले जिनवर आण,
तप करता अति आकरां रे, तोडे कर्म निदान रे प्राणी ॥५॥

बालिका एक सुकुमालिका रे, तेनु अनुपम रूप;
निरखीने हु वर्णवु रे, जोना आवे भूप रे प्राणी. ॥६॥
भ्राता दोय चोकी करे रे, मेली कुल आधार,
ऋतु धरी न खमनिया रे, अट्ठम तप अनुसार रे प्राणी. ॥७॥
अ गोपाग हाले नहीं रे, जीव थयो असराल;
कठे तो कांटा पडे रे; मरण जाण्यु सुकुमाल रे प्राणी. ॥८॥
मरण जाणी मेलिगया रे, थई घडी एक दोय;
शीतल वायो वायरो रे, प्राण सचेतन होय रे प्राणी. ॥६॥
चार दिशाये जुए वलि रे, वन मोटु विकराल;
नयणे तो आसु झरे रे, बैठी वडतरु छाय रे प्राणी. ॥१०॥

जुओ अ वो कर्मनी वात

"ढाल दूसरी"

हवे एक समय आव्यो परदेशी, वेपारी व्हेपार रे.
पाच सो पोठ भरीने लाव्यो, सार्थवाह शिरदार रे.
जुओ जुओ जन्म जरा जग जोरो, कर्म न मेले केड़े ॥१॥
पोठ उत्तारी सरोवर तीरे, भर्यु घोर गभीर रे;
वट तले मोटी वादलनी छाया, तेमा भर्या नीर रे जुओ. ॥२॥
इंधण पानी जोवा सारु, फरे अनुचर जोता रे;
बैठी बाला वनमा देखी, त्या कने जईप होता रे जुओ. ॥३॥
रे बाई तूं एकली वनमा, इहा केमज आवी रे;
कहे वेनी साभल वीरा, कर्मे मुझने लावी रे जुओ. ॥४॥
अनुचरे जईने सभलावीयु, सार्थवाहनी पासे रे;
महावनमा एक नारी अनुपम, बैठी वडतरु छाया रे जुओ. ॥५॥

इन्द्राणी ने अपसरा सरखी, रूपा रूपी गात्र रे;
कहो तो अहिंयाँ तेडी लावुं, जोवा सरखी पात्र रे जुओ. ॥६॥
सार्थवाह कहे तेडी लाओ, घड़ी न लगाओ विलंब रे;
अनुचर तेडी ने लाविया, सार्थवाहनी पासे रे जुओ. ॥७॥
वात विनोदनी करी समझावी, भोलवी, ते नारी रे;
सार्थवाहे घरमां बेसाडी, कर्म तणी गती न्यारी रे जुओ. ॥८॥
कर्म करे ते कोई न करे, कर्मे सीता नारी रे,
दमयंती छोड़ी नल नाठो, जुओ जुओ वात वीचारी रे
जुओ. ॥९॥
सुकुमालिकाए मनमां विमासी, छोड्यो संजम जोग रे;
सार्थवाहना घरमां रही ने, भोगवे नित्य नवा भोग रे
जुओ. ॥१०॥
भाई पोताना संयम पाले, देश देशान्तर फरता रे;
अनुक्रमे तेना घरमां आव्या, घर घर गोचरी फरता रे
जुओ. ॥११॥
मीठा मोदक भाव धरीने , मुनि ने व्होरावी रे;
मुनि पण मनमाँ विस्मय पाम्या समता शुं मन लावी रे
जुओ. ॥१२॥
कहे बेनी सांभल वीरा, शी चिन्ता छे तुमने रे;
मनमां होय ते मुझने कहो, जे होय तुम्हारा मन में रे,
जुओ. ॥१३॥
त्हारा जेवी एक बेन अपारी, शुद्ध संजम पाली रे;
मोटुं कुल मरीने पामी, ते मनमाँ शुं विमाशी रे जुओ. ॥१४॥

सुकुमालिका कहे साभलनीरा, जे बोल्या ते साचु रे
कर्मे लख्यु ते मुझने थयु छे, तेमा नहि काई काचु रे
जुओ जुओ कर्म तणा फल जुओ ॥१५॥

"ढाल तीजी"

(तर्ज—नदी यमुना ने तीर.)

मनमा समज्या होय वदेगे इम कहे,
साभल बेनी बात ते तो तू लहे,
नहीं काई तारो दोष, रखे काई मन धरो
ए सहु छे कर्म नो दोष तमे इम शुं करो ॥१॥
आगल सिद्धा अनन्त, सजम थी लडथड्या;
तप ने बले वली शिव-मन्दिर मा ते चढ्या,
आ ससार असार नाटक नवलो सही ।
ते देखी मन रंग्यो, तुमे काय सही ॥२॥
जेवो रग पतग के, सुख ससारनुं;
साकल वरस्यो पान के मोती ठारनुं;
एम मीठे वचने, बेनी प्रति बूझवी;
सजम लही मन शुद्ध, वैरागे मन ठवी, ॥३॥
समेत शिखर गिरनार, आबूनी यात्रा करी;
वली शत्रुजय गिरिराज तेणे फरसी करी,

पर नहीं कहते लोभविवश हो के पुत्र पिता को माराजी
सुर. ॥९॥

धिक् २ पामर लोभी पुत्र को, धिक् है धन अभिलापजी,
धिक् २ सुन्दर मायाधारी को धिक् है सकल विलासजी
सुर. ॥१०॥

सुन्दर मरके चन्दनगोह हुवा, जहाँ रहा था हारजी,
नित्य विलोके सुरप्रिय ध्यान से, मिले निधान न सारजी
सुर. ॥११॥

एक दिन गोधा= हार ग्रहार लेके, क्रीड़ा करे तस उपरेजी,
गोह को मारी हार ग्रहण किया, हर्ष हृदय में उछरेजी
सुर. ॥१२॥

लेकर हार को अपने घर चला, कानन विच मुनि राजजी,
काउसग्ग ध्याने देख शंका हुई, कथन किया कृत काज
सुर. ॥१३॥

सुनके ललना पति को विनवे, हार हाल मुनि जानेजी,
जो नरपति प्रति वद्दे मुनिवर, भूप हार को तानेजी
सुर. ॥१४॥

पट कर्णों का मंत्र भेदन होवे, शत्रु रूप मुनि वध्यजी,
कर में तीक्ष्ण असि[1] लेकर आया, मुनिमारण को सद्यजी[2]
सुर. ॥१५॥

कटुक वचन से मुनिप्रति बोलता, शीघ्र कहो मनभावजी,

तलवार २ शीघ्र ।

अन्यथा करहुं न छोडुजीनता सुगोर रौद्र प्रभावजी
सुर. ॥१६॥
लाभ जान के मुनिपुङ्गव कथे, तीन ज्ञान अधिकारीजी,
त् था हाथी तात मृगारी[1] था, इस ही वन अवतारीजी सुर. ॥१७॥
गज को मारा हरिने गतभवे, हरि अष्टापद से मराजी,
निकल नरक से सुन्दर भव पाया, गज मर नर भव तू धराजी
सुर. ॥१८॥
पूर्व वैर वश लोभ के बहाने मारी डिया गोह-तातजी,
मर के गोधा श्येन पक्षी हुआ, मुझ पर भपय ज्ञातजी सुर. ॥१९॥
मुझको मारण कारण यहा आया, कही मनोगत भावनाजी,
सकल वृतान्त मुनि मुख से सुनी, आनन्द वैरागी ध्यावनाजी
सुर. ॥२०॥

---

1 सिंह ।

"ढाल दूसरी"

(आवो आवो यशोदाना कथ०)

वदो वदो सुरप्रिय सत, आनन्द पावो रे,
आतम निन्दा विचरन्त, प्रेम से ध्यावो रे-वदो. ॥१॥
धिक् धिक् मम दुष्टाचार, हृदय विचारे रे.
दु ख नरक भयङ्कर हाय, कैसे निवारे रे वदो. ॥२॥
नव मारण आदि कर्म, उदय से आवे रे,
दस गुण लघु उतकृष्ट, पार न पावे रे वदो. ॥३॥
सुरप्रिय मुनि को निर्वेद, अतिशय भावे रे,

आदेश करो ममयोग्य, दुःख सब जावे रे ॥४॥
कृपा सिंधु महामुनिराज, कृपा कर बोले रे,
स्वीकारो धर्मजिनेन्द्र, नहीं कोई तोले रे ॥५॥
राग द्वेश शत्रु दुर्जित, जीते सुख भारी रे,
इत्यादि सुनी उपदेश, मूर्छा वारी रे-वंदो. ॥६॥
गुरु वन्दन करी घर आय, बोले अतिवेगे रे,
प्रिये हार देकर भूपाल, संयम लेंगे रे वंदो. ॥७॥
चारित्र लिया गुरु पास श्रुत बहु पाया रे,
धन्य २ सुरप्रियनाम, हम मन भाया रे, वंदो. ॥८॥
निज जन्म नगरी उद्याने, एक दिन आये रे,
काउसग्ग ध्याने तल्लीन, कर्मरिपु छाये रे ॥९॥
पटरानी बिछोने हार, रख के स्नान करे रे,
बाजपक्षी उपाडी हार, मुनि के कंठ धरे रे. वंदो ॥१०॥
पूर्व वैर विरोधे पंक्षी, गजब किया सही रे,
स्नान करके देखे रानी, हार पाया नही रे. वंदो ॥११॥
दूती मुख से सुनके हाल, राजा आदेशे रे,
क्रूर पुरुष करत हैं तलाश, जानो जम जैसे रे ॥१२॥
अटवी बीच देख साधु, हार गले धरारे,
चोर यहि दिलमें ठान, नृपति पुर करारे वंदो. ॥१३॥
शुभध्याने मुनि रहे मौन, राजा बहु रूठा रे.
कंठ पाशदिया बहुवार, तंतुसम तूटारे वंदो. ॥१४॥

आश्चर्य व्याकुल राय, हुकुम शूली करारे,
आदेशी कदर्थना कारी, शीघ्र शूली धरारे–वंदो–वंदोरे. ॥१५॥
पूर्व कर्म विपाक विचारी, क्षमा गुण धरारे,
शुक्ल ध्यान से केवल ज्ञान, आनन्द मुनि वरारे वंदो. ॥१६॥

ढाल तीजी

(हुवे शक्र मुघोषा बजावे०)

धन्य धन्य मुनि जयकार, चन्दन से लाभ अपार,
देवताने किया शूली पद्म, रहीन सफा एक पद्म. ध. ॥१॥
भावना करे नृप भक्ति, धरणी धरकी गई शक्ति,
अहो मैंने किया है अनर्थ, निर्दोष यतिका कदर्थ. ध. ॥२॥
वीर कलंक दिया हाय हाय ! शुभ गति अहो नहीं आय,
निज निन्दा करत है नरपति, अपराध खमावे मुनिप्रति–ध. ॥३॥
कर जोड पूछे मुनिराय, हार हाल कहो दुख जाय,
वृत्तांत सकल कह डाला, श्येन पक्षी सुना तत्काला ध. ॥४॥
सुन के पक्षी को भान, हुआ जातिस्मरण ज्ञान,
अपने जाने भव तीन, आतम निन्दा लयलीन- ध. ॥५॥
पार्श्व वर्ती वृक्ष के नीचे, उतर के मुनि क्रम नीचे,
दुख करते हृदय कल कलता, नेत्रे नीर अविरल झरता. ध. ॥६॥
उत्तम मानव भव खोया, चिन्तामणि अब्धि डूबोया,
अब जीवन व्यर्थ है धारी, अनशन धार सुखकारी. ध. ॥७॥
काल करके गया सौधर्म, हलकाहु व पक्षी कर्म,

नर देव पूछे मुनिराज, कहे तात जीव यह श्राज-ध. ॥८॥
धर्मशास्त्रे कही कर्म गति, विचित्रा सुनो तुम भूपति,
सुनके वैराग्ये भीना, संयम लेइ श्रुत पीना—ध. ॥९॥
चारित्र पाली ब्रह्मलोके, पहुँचे कृतकर्मों को धोके,
अन्ते सुरप्रिय सुखकार, पहुँचे मोक्ष नगर जयकार-ध. ॥१०॥
सुनके सुरप्रिय चरित्र, भवि करना हृदय पवित्र,
आनन्द बधाई बाजे, वीतराग वचन विश्व गाजे. ध. ॥११॥
सुखनाथ जगत सुखकारी, भगवान त्रैलोक्य आधारी,
आनन्द रत्नाकर गाया, आनन्द दिल में उछलाया-ध. ॥१२॥

॥ समाप्त ॥

---

(५) "श्री कलावती का चोढालिया"

मालवदेश मनोहरूं, तिहां नयरी उज्जेनी नाम हो नरिन्द,
शंख राजा तिहाँ सोभतो, सहु शुभ गुणकेरो धाम हो नरिन्द
शियल तणा गुण सांभलो ॥१॥
शियले लहिये बहुमान हो नरिन्द, शियले सतीये कलावती,
जेमपामी सुख प्रधान हो नरिन्द ॥२॥
अन्तेउरी साठमांहे वडी, लीलावती पटराणी कहाय हो नरिन्द, ।

नेपाल देशनो नरपति, नामे जितशत्रु राय हो नरिन्द-शि. ॥३॥
जयसेन विजयसेन सुत भला, कलावती पुत्री उदार हो नरिन्द,
मालवपति शंखराय ने, परणावी प्रेम अपार हो नरिन्द शि. ॥४॥
पंच विषय सुख विलसता, कलावती राय सघात हो नरिन्द,
गर्भ रह्यो पुण्य योगथी, हरख्यो नृप मात हाथ हो नरिन्द
शियल तणा. ॥५॥
आघरणी ओच्छव मांडियों, गीत गावे बहु भलीनार हो नरिन्द,
पेटी आवी पियर थकी, कलावती ने तेणी वार हो नरिन्द
शियल तणा. ॥६॥
शकाती बहु शोक्यथी, लेई गोपावी गोठण हेठ हो नरिन्द,
एकाते उकेलता, दोय बेरखा दीठा दृष्टि हो नरिन्द
शियल तणा. ॥७॥
नग जड्या माहे निरमला, अंधारे करे उजवास हो नरिन्द,
नामांकित वेहु भ्रातनां, पहेरीने पामी उल्लास हो नरिन्द
शियल तणा. ॥८॥
खाट हिंडोंले हींचता, बेरखा झबूके जेम बीज हो नरिन्द,
दासी लीलावती तणी, देखी वरे दिलमा खीज हो नरिन्द
शियल तणा. ॥९॥
कहो बाई ए केणे दिया, आभूषण दोय अमूल्य हो नरिन्द,
मुझने जे घणो वाहलो, तेणे दिधा बहु मूल हो नरिन्द
शियल तणा. ॥१०॥

दासी लीलावती भणी, भांख्यों ते सघलो भेद हो नरिन्द,
सांभली क्रोधातुर थई, उपन्यो चित्तमां बहु खेद हो नरिन्द
शियल तणा. ॥११॥

राणी प्रति महीपति कहे, केणे दूहव्यां तुमने आज हो नरिन्द,
बहुमूल्या तुमने बेरखा, केम किधा कलावती काज हो नरिन्द
शियल तणा. ॥१२॥

मैं न घडाव्या बेरखा, तस खबर नहीं मुझने कांय हो नरिन्द,
पूछी निरती करो तुमे, सुणी लीलावती तिहां जाय हो नरिन्द
शियल तणा. ॥१३॥

राय छानो उभो रह्यो, तब पूछे लीलावती नेह हो नरिन्द,
साचूं कहो बाई कलावती, केणे दिधा बेरखा एह हो नरिन्द
शियल तणा. ॥१४॥

हुं घणी जेहने व्हाली, तेणे मोकल्या मुझने एह हो नरिन्द,
रात दिवस मुझ सांभरे, पण भाई न कह्यो तेह हो नीरन्द
शियल तणा. ॥१५॥

राजा क्रोधातुर थयो, सुणी कलावती ना वचन हो नरिन्द,
प्रीति पूरवला पुरुष शुं, मूक्या ए तेणे प्रच्छन्न हो नरिन्द
शियल तणा. ॥१६॥

कौल दियो लीलावती भणी, दोय बेरखा सेती बांह हो नरिन्द,
छेदावी तुझने देऊं, सुणी पामी परम उत्साह हो नरिन्द
शियल तणा. ॥१७॥

"ढाल दूजी"

(तज–सुग्रीव नयर सोहामणो जी)

राय हुकम एहवो कह्योजी, चडाल ने तेणीवार,
कलावती कर कापीने जी, आणीयो एणी वार सुण सुण रे,
प्राणी कर्मतणा फल एह ।
जन्मातर जीवे क्रियाजी, आवे उदय सहु तेह सुण २ प्राणी
कर्म. ॥१॥
साँभली अंत्यज थरहर्योजी, चडाली ने कहे तेह,
राय हुकम रुडो नही जी, सुकिये नगरी एह सुण सुण. ॥२॥
पापीणी कहे तू शंगीहेजी, एछे मारू काम,
शिर नामी उभी रहीं जो, राय खड्ग लियो तामरे सुण. ॥३॥
रथ जोडी रंडा कहे जी, वेसो बाईजी इणी माय,
पियर तुझने मोकले जी, राय घर बहु चाय सुण. ॥४॥
गलीयल गाभा केहवाजी, श्याम ऋषभ बलिकेम,
पुत्र रहे नहीं रायने जी, कियो कारण एम. सुण. ॥५॥
रथमा वेसाडी राणीनेजी, चाली ऊजड वाट,
सूके वन रथ छोडियो जी, राणी पामी उचाट. सुण. ॥६॥
पियर मारग एह नहीं जी, चडाली कहे ताम,
राये मुझने मोकली जी, कर कापण ने काम. सु. ॥७॥
जमणों पोते छेदियो जी, डाबों चंडालिय दीध,
वेरखा सहित वेहुकर ग्रहीजी, आणी रायने दीध. सुण. ॥८॥

नारी भ्रात नाम निरखताँजी, मूर्च्छांणो ततकाल,
शीतल वाये सज्ज कर्योंजी, रोवे तत्र महिपाल सुण. ॥९॥

किसी कुमती मुझ उपनीजी, कीयो सबल अन्याय,
ए जीव्युं कोण कामनुंजी, राज रमणी न सुहाय. सुण. ॥१०॥
चय रचावे चन्दनेजी, बलवाने तिहां जाय,
लोक मली वारे घणुजी, वचन न माने राय सुण सुण रे
प्राणी. ॥११॥

ढाल तीजी

कलावती ने जे थयो, ते सुण जो अति कार, भवि प्राणी,
कर छेदन भेदन वेदन थकी, सुत जनम्यो तेणी वार
भवि प्राणी. ॥१॥
शियलनो महिमा जाणिये, शियले संपती थाय भवि प्राणी,
विघन विषय दूरे टले, सुर नर प्रणमें पाय भवि प्राणी
शियलनो महिमा जाणिये ॥२॥
पुत्र प्रत्ये कहे पदमणी, शुं करुं ताहरी सार भवि प्राणी,
माहरी कुखे अवतर्यो, तूं निर्भाग्य कुमार भवि प्राणी शि. ॥३॥
अशुचि पणु केम टालशुं पालशुं ए केम बाल भवि प्राणी,
शोच करे रोवे वली, वन म्होर्यो ततकाल भवि प्राणी
शियल. ॥४॥
शियले सूकी नदी नहीं प्राणी आव्युं नजदीक भवि प्राणी,
जाणे के जल लेई जाशे, वच्चे बेठी निर्भीक भवि प्राणी
शियल. ॥५॥

आंटो देई चिहुँ दिशे, नदी वही दोय धार भवि प्राणी,
बोले ग्राह निची करी, जल माहे तेणी वार भवि प्राणी
शियल. ॥६॥

नव पल्लव नवली थई,बेरखा सेती गाह भवि प्राणी,
बीजी पण तिम हीज थई, पामी परम उत्साह भवि प्राणी
शियल. ॥७॥

अचरिज देखी आवियो, तापस एक तेणीवार भवि प्राणी,
जनक नो मित्र जाणी करी, बोलावे सुविचार भवि प्राणी
शियल. ॥८॥

रे पुत्री ! तापस कहे, एकली अटवी मझार भवि प्राणी,
केम आवी मुझने कहो, तव भाख्यो सघलो विचार भवि प्राणी
शियल. ॥९॥

कोप्यो तापस इम कहे, राजा ने करूं उतपात भवि प्राणी,
कलावती तव विनवे, कोप म करो मुझ तात भवि प्राणी
शियल. ॥१०॥

तापसे तिहा विघावले, अचल रच्यो आवास भवि प्राणी,
कलावती सुत स तिहा, अहोनिश रहे उल्लास भवि प्राणी
शियल. ॥ १॥

कठियारा तेणे अवसरे, देखी एह विचार भवि प्राणी,
दोड्या देवा वधामणी, राजाने तेणी वार भवि प्राणी
शियल. ॥१२॥

मंत्री अरज करे तिसे, सुणो राजन सुकुमार भवि प्राणी,
अवधि दियो एक मासनी, खबर करुं ततकाल भवि प्राणी
शियल. ॥१३॥

एम कही शोध करन चले, एहव आव्या कठियार भविप्राणी,
राणी विगत कही सबे, हरख्यो चित्त मझार भवि प्राणी
शियल. ॥१४॥

सुकुं वन सर्व मोरियुं, सुकी नदी वहे पूर भवि प्राणी,
राणी ए सुत तिहां जनमीयो, कर उग्या ससनूर भवि प्राणी
शियल. ॥१५॥

राजने आवि विनव्यो, पाम्यो हरख विशाल भवि प्राणी,
राणीने तेडवा मोकल्यो, मंत्री ने ततकाल भवि प्राणी
शियल. ॥१६॥

राय राणी रंग मनशुं, आव्या नगर मझार भवि प्राणी,
उच्छव रंग वधामणां, हुवो ते जय जय कार भवि प्राणी
शियल. ॥१७॥

ढाल चोथी

एक दिन राय राणी मन रंगे, वनमां खेलण जावेजी,
तव तिहां साधु धर्म धुरंधर, तेहना दर्शन पावेजी ॥१॥
भवियण धर्म करो शुद्धे, धर्मे मन वंछित सवि होवे,
धर्म पाप पलाय जी, भवियण धर्म करो मन शुद्धे ॥२॥
पाय प्रणामी साधुने पूछे, भगवन मुझने भाखोजी,

राणी कर छेद्यां किण कारण, तेहनो उत्तर दाखोजी
भवियण धर्म. ॥३॥

साधु ज्ञानी इणी पर बोले, महा विदेह मां रहता जी,
माहेन्द्र पुरी नयरी विक्रम, लीलावती विलसंतां जी
भवियण धर्म. ॥४॥

पुत्री प्रसवी रूप अनोपम, सुलोचना गुण खाणी,
विद्यावत विदेसी सूडो, वदतो अमृत वाणीजी
भवियण धर्म. ॥५॥

सुलोचना सोवन पिंजरमां, सूडो घाली राखेजी,
गायन गूढा नवला गावे, मनोहर मेवा चाखे जी
भवियण धर्म. ॥६॥

मनमां कीर विमासे एहवुं, पिंजर बंधन रहेवोजी,
आश पराई करवी अहो निश, परवश सुख न लहेवोजी
भवियण धर्म. ॥७॥

एक दिन पिंजर बार उघडियो, पोपट तव निकलियोजी,
वनमां तरु शाखा ए बेठो, मन वंछित सवि फलियोजी
भवियण धर्म. ॥८॥

सुलोचना सूडाने विरहे, तत्क्षण मूर्छित थावेजी,
राजा पास नखावी सुडो, बंधावी ने लावेजी
भवियण धर्म. ॥९॥

रीसाणी सुवडां शुं कुंवरी, पाखों वेहु तस छेदेजी,

सुडो पण तनु मोह तजीने, भूख तृपा बहु वेदेजी
भवियण धर्म. ॥१०॥

शुभ परिणामे सूडो चविन, सुर लोके सुर थावेजी,
कंवरी तस विरहे तनु तजीने, देवांगना पद पावेजी
भवियण धर्म. ॥११॥

सुरलोके सुर सुख विलसीने, इहां कणे राजा हुवोजी,
देवी पणाते त्यांथी चवीने, हुई कलावती जुओजी
भवियण धर्म. ॥१२॥

पूरव वैर तुझ इहां प्रगट्यो, तिण कारण कर छेद्याजी,
जन्मांतर किधाँ जे जीवें, नव छूटे विण वेद्याजी
भवियण धर्म. ॥१३

राजा राणी सुणीने तत् क्षण, जाती स्मरण ज्ञाने जी,
पूरव भव संपूरण पेखे, तहत्ति करीने माने जी
भवियण धर्म. ॥१४॥

करम तणी गती विरुई जाणी, वैरागे मन भीनोजी,
राजा राणी निर्मल भावे, संयम मारग लीनोजी
भवियण धर्म. ॥१५॥

तप बल ध्यान शुकल आराधी, भव बंधन सवि छेद्याजी,
राजा राणी केवल पामी, शिव रमणी सुख वेद्या जी
भवियण धर्म. ॥१६॥

* कलश *

इम दुरित खंडन शियल मंडण आराधी शिव पद लह्यो,
संवत अठार पात्तीश, श्रावण शुक्ल पंचमी, दिन कह्यो ।
लोंका ऋषि श्री करमशी तस शिष्य रंगे उच्चरे,
भुज नगर भावे रही चोमासो, मानसिंह जय जय वरे ।

इति

(६) ❀ श्री नन्दीषेण मुनि की सज्झाय ❀

* मेरु विजय जी कृत *

"ढाल पहली"

राजगृही नगरी नो वासी, श्रेणिक नो सुत सुविलासी हो
मुनिवर वैरागी,
नन्दीषेण देशना सुणि भीनो, ना ना करता व्रत लीनो हो
मुनिवर वैरागी ॥१॥
चारित्र नित्य चोखो पाले, संयम रमणीसुं माले हो मुनि.,
एक दिन जिन पाय लागी, गोचरी नी आज्ञा मागी हो
मुनिवर. ॥२॥

पांगरियो मुनि वोहरेवा, क्षुधा वेदनी कर्म हणेवा हो मुनि
ऊंच नीच मध्यम कुल मोटा, अटतो संजम रस लोटा हो
मु. ॥३॥

एक ऊंचो धवल घर देखी, मुनिवर पेठो शुद्ध गवेषी हो मु,
तिहां जई दीधो धर्मलाभ, वेश्या कहे इहां अर्थलाभ हो
मु. ॥४॥

मुनि मन अभिमान ज आण्यो, खंड करी नाख्यों तिण ताण्यो
हो मु.,

सोवन वृष्टि हुई साढ़ो बारे क्रोड, वेश्या वनिता कहे कर जोड हो
मुनिवर वैरागी ॥५॥

* ढाल दूसरी *

थे तो उभा रहीने अरज हमारी, सांभलो साधुजी,
थे तो मोटा कुलना जाण, मुकि दो आमलो साधु जी ॥१॥

थे तो लई जावो सोवन कोडी, गाडा ऊंटे भरी साधुजी,
थारे केसरिये केश बीने, कपड़े मोही रही साधुजी ॥२॥

थारी मुर्ति मोहनगारी, जगत मे सोहिनी साधुजी,
थारे आंखडियारो नीको, पाणी लागणो साधुजी ॥३॥

थारो नवलो जोबन वेष, विरह दुःख भांजणो साधुजी,
ए तो जंत्र जडित कपाट, कूंची मैं कर ग्रही साधुजी ॥४॥

मुनि वलवा लाग्या जाम के, मैं आडी उभी रही साधुजी,

मैं तो ओछी स्त्रीनी जाति, मति कहीं पाछली साधुजी ॥५॥

थे तो भोग पुरंदर हू, पण सुन्दरी ताहरी साधुजी,
थे तो पेहरो नवलो वेश, गेणा घणा जडावका साधुजी ॥६॥

मणि मुक्ता फल मुकुट, निराजे हेम का साधुजी.
अमे सजीये सोलह सिणगार, के पियुरस अंगना साधुजी ॥७॥

जे होवे चतुर सुजाण के, कदिय न चूकशे साधुजी,
एहवो अवसर साहब कदियन आवशे साधुजी ॥८॥

इम चितवे चित्त मभार, नदिसेण बावलो हो साधुजी,
रहेवा गणिका ने धाम, के थई ने नाहलो साधुजी ॥९॥

"ढाल तीसरी"

भोग कर्म उदय तस आव्या, शासन देवी समलाव्या हो
मुनिवर, वैरागी,
रहेवा बारे वर्ष तस आवासे, वेष लई मुक्यो एक पासे हो
मुनिवर वैरागी ॥१॥

दश नर दिन प्रति बूजे, दिन एक मूर्ख नहि बूझे हो मु.,
बूझवा हुई बहु वेला, भोजन नी हुई अवेला हो
मुनिवर. ॥२॥

कहे वेश्या उठो स्वामी, आज दशमा तुमहीज कामी हो. मु.,
वेश्या वनिता कहे धममसती, आज दशमो तुमहीज हसती
हो मुनिवर ॥३॥

एह वयण सुणीने चाल्यो, फिर संजम में मन वाल्यो हो. मु.,
फिर संजम लियो उल्लासे, वेष लई गयो जिन पासे हो
मुनिवर वैरागी. ॥४॥

चारत्र नित्य चोखो पाली, देवलोगे गयो दई ताली हो. मु.,
तप जप संयम क्रिया सोधी, घणां जीवाने प्रतिबोधी हो
मुनिवर वैरागी ॥५॥

जय विजय गुरु शिष्य, तस हर्ष नमे निशदीश हो. मु.,
मेरुविजय इम बोले, एहवा गुरु ने कोण तोले
हो मुनिवर वैरागी ॥६॥

---

(७) ★ जम्बू स्वामी की सज्झाय ★

राजगृही नगरी का वासी घर में लीला विलासी,
ऋषभ दत्त तो तात जम्बूजी का, धारिणी ज्यारी माया
तुम पर वारी, वारी हो जम्बूजी वैरागी ॥१॥

आठ सगाई करी रे कुंवर की, सुन्दर रूप रसाला,
हाथ काम जब लियारे कुंवरका, शुभ मुहुर्त सावो दिखायो
तुम पर वारी, वारी हो ॥२॥

वंदोला खावेने गुडिया उडावे, नारी मंगल गावे,
सुधर्मा स्वामी राजगृही नगरी पधार्या, लोक वन्दन कुं चाल्या,
तुम पर वारी, वारी हो. ॥३॥

जम्बू कंवर तो वन्दन कु चाल्या, गुरु वन्दन चित लाया,
सुधर्मा स्वामी उपदेश सुणायो, जग सुपना की माया
तुम पर वारी, वारी हो ॥४॥

वाणी सुणी ने भिना रे कुवरजी, शियल रुची ने घर आया,
कहे माताजी ने मैं तो सयम लेसुं, आज्ञा दीजे ढील न कीजे
तुम पर वारी, वारी हो. ॥५॥

अपूर्व वचन जब सुण्या रे कुंवरका, माताजी बहु मूर्छायां,
दिक्षा की बात मती काढोरे जाया, नार्या परणी ने घेर लानो
तुम पर वारी, वारी हो. ॥६॥

हाथ जोडी ने कहे रे कुंवर जी, साभल जो मोरी माजी,
तन मन मे म्हारे शियल रुच्यो छे, परणाई ने कई होशो राजी
तुम पर वारी, वारी हो. ॥७॥

माता पिताजी के वचनसुं परण्या, नार्यां आईने पाय लगी,
आज्ञा लेईने जम्बु महल पधार्यो, नार्या ने कहे रहो आगी
तुम पर वारी, वारी हो. ॥८॥

छपन्न क्रोड सोनैया घर मे, निनाणु क्रोड म्हेलाई,
रत्न जटित को महल पियुजी, फुलडा सेज बिछाई
तुम पर वारी, वारी हो. ॥९॥

इन्द्र धनुप ज्यूं जोबन उलटे, नयणे काजल रल के,
हो प्रीतमजी मासु हसकर बोलो, गाठ हियारी खोलो
तुम पर वारी, वारी हो. ॥१०॥

बादला दाई रूप विलाये, नदिया जल जोवन जावे,
काल अण चिंत्यो पकड ले जासी, कुण राजा कुण रावे
तुम पर वारी, वारी हो ॥११॥

चन्द्र वन्दनी मृग लोचनी वाला, सुन्दर रूप रसाला,
केलि गर्भसी हुई सुकमाला, हर्ष धरी ने मुखड़े बोलो
तुम पर वारी, वारी हो ॥१२॥

"ढाल दूसरी"

एकरस्यां तो मांसु हंसकर बोलो, पीछे लीजो जी धर्म को ओलोरा,
पियुजी वाणी सुणो
थेतो होगया धर्म ना रागी मने उभाही करदी त्यागी रा
पियुजी वाणी सुणो ॥२॥
थाने सुधर्मा स्वामी भरमाया, सासु धारिणि राणी मा जायारा,
पियुजी वाणी सुणो ॥३॥
माने राते परणी ने आणी, म्हैं तो नहीं घाल्यो मुखड़े में पाणीरा,
पियुजी वाणी सुणो ॥४॥
मैं तो रमणी गमणी ठमणी, मैं तो आठु हीं केसर वरणीरा,
पियुजी वाणी सुणो ॥५॥
मैं तो आठूं ही ऊभी ढोल्या ढोलो, मांसु हंसकर मुखडे बोलोरा,
पियुजी वाणी सुणो ॥६॥
मैं तो आठुं ही लागो थाने खारी, माने जहर जड़ी जिम जाणीरा,
पियुजी वाणी सुणो ॥७॥

मैं तो कब लग भरमाइ ने राखो थांने, नहीं तो लारे ले
चालो म्हाने रा,
पियुजी वाणी सुणो ॥८॥

ढाल तीसरी

आठ कथा तो कहे रे सुन्दरीया, आठु ही जम्बू कुमारा,
काम भोग है महादुःख दाई, फल किंपाक अनुहारा
तुम पर वारी, वारी हो. ॥१॥

शियल रत्न मैं तो परख लियो है, काच मणि कुण लेवे,
दाख अमृत रस मेवा तजी ने, निंबोला कौन खावे
तुम पर वारी, वारी हो. ॥२॥

नारी जमारो दोहिलो पियुडा, पियु बिना कौन आधार,
लोग हसे ने मुझ जोबन चेरे, भलो नहीं रे घरवार
तुम पर वारी, वारी हो. ॥३॥

किस्यो पियर नें किस्योजी सासरियो, पियु बिना कौन आधारी,
इण ससार में पियु बिना नारी, सब को लागे खारी
तुम पर वारी, वारी हो. ॥४॥

सजोडा से जम्बु महल पधार्या; प्रभव आयो रे धन लेवा,
धन भाले तब उणरा पावन ऊपड्या, आवे जम्बूजी ने केवा
तुम पर वारी, वारी हो. ॥५॥

प्रभव कहे म्हांकने दोय छे विद्या, एक विद्या माने दीजे,

जम्बू कहे म्हांकने विद्या नहीं छे, संसार में कुण रींजे
तुम पर वारी, वार हो. ॥६॥

राने परण्या थे आठुं ही नार्यां, कांई छोडोरे भोला भाई,
घर में माया ने कोमल काया, कांई छोडो रे निरधारी
तुम पर वारी, वारी हो. ॥७॥

आउखो रे भाई अंजली को पाणी, काया काचकी शीशी,
इम जाणी हम हुआ रे वैरागी, दीनो संसार त्यागी
तुम पर वारी, वारी हो. ॥८॥

बात सुणीने बूझ्या हो प्रभवजी, हाथ जोडीने इम कहतां,
पाप कर्म में तो कीधारे घणेरां, थाँ साथे संयम लेता
तुम पर वारी, वारी हो. ॥९॥

पांच से चोर सत्ताईस जणासुं, संजम लियो सुखकार,
चरम केवली हुआ रे जम्बूजी, तज दीनो संसार
तुम पर वारी, वारी हो. ॥१०॥

शिवरमणी तो वर्या जी जम्बूजी, सादी अनन्ती वार,
ऐसा मुनि ने होज्यो जी वंदना, नित्य उठी प्रभात
तुम पर वारी, वारी हो. ॥११॥

इति

---

(८) ❀ प्रभंजना कन्या की सज्झाय ❀

—देवचन्द्रजी महाराज कृत—

❀ढाल पहली❀

गिरि वैताढ्य ने ऊपरे, चक्राङ्का नयरी रे लो अहो च.,
चक्रायुध राजा तिहां, जीत्या सब वयरी रे लो अहो जीत्या
सब वैरी रे लो ॥१॥

मदनलता तस सुन्दरी, गुणशील अचमा रे लो अहो गु.,
पुत्री तास प्रभंजना, रूपे रति रम्भा रे लो अहो रु. ॥२॥

विद्याधर भूचर सुता, बहु मली एक पते रे लो अहो व.,
राधावेध मंडानियो, वर वरवा सुते रे लो अहो व. ॥३॥

कन्या एक हजार थी, प्रभंजना चाली रे लो, अहो प्र.,
आर्यखंडमा आवतां, वन खंड निचाली रे लो अहो व. ॥४॥

निर्ग्रंथी सुप्रतिष्ठिता, बहु गुरुणी संगे रे लो अहो व.,
साधु विहारे विचरती, वन्दे, मन रंगे रे लो अहो व. ॥५॥

आर्या पूछे एम डो, उमाओ श्यो छे रे लो अहो उ.,
विनये कन्या विनवे, वर वरवा इच्छे रे लो अहो व. ॥६॥

ऐस्यों हित जाणो तुमे, एहथी नवि सिद्धी रे लो अहो ए.,
विषय हलाहल विष जिहा, शी अद्भुत बुद्धि रे लो अहो शी. ॥७॥

भोग संग कारमा कह्या जिन राज सदाई रे लो अहो जिन.,
राग द्वेप संगे वधे, भव भ्रमण सदाई रे लो अहो भ. ॥८॥

राजसुता कहे साच ए, जो भाखो वाणी रे लो अहो जी.,
पण ए भूल अनादिनी, किम जावे छंडाणी रे लो अहो किम. ॥९॥

जेह तजे ते धन्य छे, सेवक जिन जीना रे लो अहो से.,
अमे जड़ पुद्गल रस रम्या. मोहे लयलीना रे लो अहो मो. ॥१०॥

अध्यातम रस पान थी, भीना मुनि राया रे लो अहो भी.,
ते पर परिणति रति तजी, निज तत्व समाया रे लो अहो
नि. ॥११॥

अमने पिण करवो घटे, कारण संयोगे रे लो अहो का.,
पण चेतनता परिणमें, जड़ पुद्गल भोगे रे लो अहो
ज. ॥१२॥

अवर कन्या पण उच्चरे, चिंतित हवे कीजे रे लो अहो चि.,
पछी परम पय साधवा, उद्यम साधी जे रे लो अहो उ. ॥१३॥

प्रभंजना कहे हे सखी, ए कायर प्राणी रे लो अहो ए.,
धर्म प्रथम करवो सदा, देवचन्द्रनी वाणी रे लो अहो
देवचन्द्रनी वाणी रे लो ॥१४॥

"ढाल दूसरी"

कहे साहुणी सुन कन्यकारे धन्या, ए संसार क्लेश,
एहने जे हितकारी गणेरे धन्या, ते मिथ्या आदेश रे
सु ज्ञानी कन्या सांभल हित उपदेश,

जग हितकारी जिनेश छेरे सु. कन्या, कीजे तसु आदेश रे
सुज्ञानी कन्या साभल. ॥१॥

खरडी ने वली धोवबु रे कन्या, तेह न श्रेष्ठाचार,
रत्न त्रयी साधन करो रे कन्या, मोहाधीनता वार रे सु ज्ञानी
कन्या साभल हित उपदेश. ॥२॥

जेह पुरुष वरवा तणी रे कन्या, इच्छे छे ते जीव,
स्यो संबध पणे भणो रे कन्या, धारी काल सदीव रे
सु ज्ञानी कन्या साभल. ॥३॥

तव प्रभंजना चिन्तवेरे अप्पा, तू छे अनादि अनन्त,
ते पण सुझ सत्ता समोरे अप्पा, सहज अकृत सुमहन्त रे
सु. सा. ॥४॥

भव भमता सवी जीवथी रे अप्पा, पाम्या सवि सम्बन्ध,
माता पिता भ्राता सुता रे अप्पा, पुत्र वधु प्रतिबन्ध रे
सु. सा. ॥५॥

स्यो सम्बन्ध कहुं इहारे अप्पा, शत्रु मित्र पण थाय,
मित्र शत्रुता वली लहेरे अप्पा, इम ससार स्वभाव रे
सु. सा. ॥६॥

सत्ता सम सवी जीव छेरे अप्पा, जोता वस्तु स्वभाव,
एह माहरो एह पारकोरे अप्पा, सवि आरोपित भावरे
सु. सा. ॥७॥

गुरुणी आगल एहवु रे अप्पा, झूंठ केम कहेवाय,

स्वपर विवेचन कीजतारे अप्पा, महारो कोई न थाय रे
सु. सा. ॥८॥

भोग्य पणुं पण भूलथी रे अप्पा, माने पुद्गल खंध,
हूँ भोगी निज भावनो रे अप्पा, परथी नहीं प्रतिबंध रे
सु. सा. ॥९॥

सम्यक् ज्ञाने वहेंचतारे अप्पा, हूँ अमूर्त चिद्रूप,
कर्त्ता भोक्ता तत्वनो रे अप्पा, अक्षय अक्रिय अरूप रे
सु. सा. ॥१०॥

सर्व विभाव थकी जुदो रे अप्पा, निश्चय निज अनुभूत,
पूर्णानन्दी परिणमेरे अप्पा, नहीं पर परिणती रीत रे
सु. सा. ॥११॥

सिद्ध समो ए संग्रहरे अप्पा, पर रंगे पलटाय,
संभागी भावे करी रे अप्पा, अशुद्ध विभाव अपाय रे
सु. सा. ॥१२॥

शुद्ध निश्चय नये करीरे अप्पा, आतम भाव अनन्त
तेह अशुद्ध नये करी रे अप्पा, दुष्ट विभाव महन्त रे
सु. सा. ॥१३॥

द्रव्य कर्म कर्त्ता थयो रे अप्पा, ते अशुद्ध व्यवहार,
तेह निवारो स्वपदे रे अप्पा, रमतां शुद्ध व्यवहार रे
सु. सा. ॥१४॥

व्यवहारे समरे थके रे अप्पा, समरे निश्चय तिवार,

प्रवृत्ति समारे विकल्पनेरे अप्पा, तेह स्थिर परिणति सार रे
सु. सा. ॥१५॥

पुद्गलने पर जीवथी रे अप्पा, कीयो भेद विज्ञान,
वाधकता दूरे टली रे अप्पा, हवे कुण रोके ध्यान रे
सु. सा. ॥१६॥

आलंबन भावन वसे रे अप्पा, धर्म ध्यान प्रगटाय,
देव चन्द्र पद साधना रे अप्पा, एहिज शुद्ध उपाय रे
सु. सा. ॥१७॥

ढाल तीजी

(तर्ज—धन्या श्री तूठो २ रे गुरु साहिब जगनो तूठो)

आयो आयो रे अनुभव आतम चो आयो, शुद्ध निमित आलंबन
भजतां, आत्मालम्बन पायोरे ॥१॥

आतमा क्षेत्री गुण पर्याय विधि, तिहाँ उपयोग रमायो,
पर परिणति पर रीते जाणी, तास विकल्प गमायो रे
आयो. ॥२॥

पृथक्त्व वितर्क शुक्ल आरोही, गुण गुणी एक समायो,
परजय द्रव्य वितर्क एकता, दुर्द्धर मोह खपायोरे
आयो. ॥३॥

अनन्तानुबंधी, सुभटने काढी, दर्शन मोह गमायों।

तिरिगति हेतु प्रकृतिक्षय करी, थयो आतमरस रायो रे
आयो. ॥४॥

द्वितीय तृतीय चोकड़ी खपावी, वेद युगल क्षय थायो,
हास्यादिक सत्ता थी ध्वंसी, उदय वेद मिटायो रे
आयो. ॥५॥

थई अवेदी ने अविकारी, हण्यो संज्वल नो कषायो,
मार्यो मोह चरण क्षायक करी, पूर्ण समता समायो रे
आयो. ॥६॥

घन घाति त्रिक योधा लड़िया, ध्यान एकत्व ने ध्यायो,
ज्ञानावरणादिक भट पड़िया, जीत निशान घुरायो रे
आयो. ॥७॥

केवल ज्ञान दर्शन गुण प्रगट्या, महाराज पद पायो,
शेष अघाति कर्म क्षीण दल, उदय अबंध दिखायो रे
आयो. ॥८॥

सयोगी केवली थया प्रभंजना, लोकालोक जणायो,
तीन काल की त्रिविध वर्तना, एक समय उलखायो रे
आयो. ॥९॥

सर्व साध्वीये वंदना कीधी, गुणी विनय उपजायो,
देव देवी तत्र स्तवे गुण स्तुति, जय जय पड़ह बजायो रे
आयो. ॥१०॥

सहस कन्या दीक्षा लीधी, आश्रव सर्व तजायो,

जग उपगारी देश विहारी, शुद्ध धर्म दिपायो रे
आयो. ॥११॥

कारण योगे कारज साधे, तेह चतुर गाईजे
आतम साधन निर्मल साधे, परमानन्द पाईजे रे
आयो. ॥१२॥

एह अधिकार कह्यो गुण रागे, वैरागे मन भावी,
वसुदेवहिंडी तणे अनुसारे, मुनि गुण भावना भावी रे
आयो. ॥१३॥

मुनि गुण थुणता भाव विशुद्धे, भाव विच्छेद न थावे,
पूर्णानन्द इहाँ थी उलसे, साधन शक्ति जमावे रे
आयो. ॥१४॥

मुनि गुण गावो भावना भावो ध्यावो सहज समाधि,
रत्न त्रयी एकत्वे खेलो, मेटी अनादि उपाधि रे
आयो. ॥१५॥

राज सागर पाठक उपगारी, ज्ञान धर्म दातारी,
दीपचन्द्र पाठक खरतरवर, देवचन्द्र सुखकारी रे
आयो. ॥१६॥

नगर लींबडी, माहीं रहने, वाचंयम स्तुति गाई,
आत्म रसिक श्रोता जन मनने, साधन रुचि उपजाई रे,
आयो. ॥१७॥

इम उत्तम गुण माला गावो, पावो हर्ष वधाई,

जैन धर्म मार्ग रुचि करतां, मंगल लीला सदाई रे
आयो. ॥१८॥

इति

---

(७) ❀ खंधक मुनि की सज्झाय ❀

(मोहन सागर जी कृत)

नमो नमो खंधक महा मुनि, खंधक क्षमाता भण्डार रे,
उग्र विहारे मुनि विचरंतां, चारित्र खड्गनी धाररे
नमो नमो खंधक महा मुनि. ॥१॥

सुमति गुप्तिने धारतो, जित शत्रु राजानो नन्द रे
धारिणी उदरे जनमियो, दर्शन परमानन्द रे नमो. ॥२॥

धर्म घोष मुनि देशना, पामियो तिण प्रति बोध रे,
अनुमति लई मात तातनी, कर्म शुं युद्ध थयो यो योद्ध रे
नमो. ॥३॥

छट्ठ अट्ठम आदि करी, दुष्कृत तपे तनु शोष रे,
रात्रि दिवस परिषह सहे, तो पिण मन नहीं रोष रे नमो. ॥४॥

दव दीधा खेजड़ा देहमां, चालता खड खडे हाडरे,
तो पिण तप तपे आकरां, जाणतो अथिर संसार रे नमो. ॥५॥

इक मर्में भगिनी पुरी प्रते, अविया साधुजी सोय रे,
गोख बैठी चिंते बेनडी, ए मुझ बाधव होय रे. नमो. ॥६॥

बेनने बाधव साभर्यो, उलट्यो विरह अपार रे,
छातडी लागी छे फाटवा, नयणे वहे जिम नीर रे नमो. ॥७॥

राय चिंते मनमा इस्यो, ए कोई नारीनो यार रे,
सेवक ने कहे साधुनी, ल्यावो जी खाल उतार रे नमो. ॥८॥

"ढाल दूजी"

राय सेवक कहे साधुने, लाकडीथी जीव हणसु रे,
अम ठाकुरनी एछे, आणा ते अमे आजे करशु रे

अहो अहो साधुजी समता वरिया ॥१॥

मुनिवर मन माहि आणंदा, परिषह आव्यो जाणीरे,
कर्म खपाना अवसर एहनो, वली नहीं आवे आणी रे अहो. ॥२॥

एतो वलीय सखाई मलियो, भाई थकी भलेरो रे,
प्राणी, कायर पणो परिहरो, जिम न थाये भव फेरोरे अहो. ॥३॥

राय सेवक ने तव कहे मुनिवर, कठिन फरस मुझ काया रे,
बाधा रखे तुम हाथे थाये, कहो तिम रहिये भाया रे अहो. ॥४॥

चार शरण चतुर करीने, भव चरम आवते रे,
शुक्ल ध्यान सु तान लगाव्यु, काया वोसिराई अंते रे अहो. ॥५॥

चड चड चामडी तेह उतारे, मुनि समता रस भीले रे,

क्षपक श्रेणी आरोहण करीने, कर्म कठिन ने पीले रे अहो. ॥६॥
चोथो ध्यान धरन्ता अन्ते, केवल लई मुनि सिद्धा रे,
अजर अमर पद मुनिवर पाम्या, कारज सगला सिद्धारे अहो. ॥७॥

हवे मुहपति लोहिये खरडी, पंखिये आमिष जाणी रे,
राजद्वारे ते लेई नांखी, सेवक लीधी ताणी रे अहो. ॥८॥

सेवक मुखथी वात सुणीने, बहिने मुहपति दीठी रे,
निश्चय भाई हणियो जाणी, हीये उठी अंगीठी रे अहो. ॥९॥

विरह विलाप करे राय राणी, साधुनी समता वखाणी रे,
अथिर संसार स्वरूप तेजाणी, संयम ले राय राणी रे अहो. ॥१०॥

आलोई पातिक सवि छंडी, कर्म कठिन ने निंदी रे,
तप दुक्कर करी काया गाली, शिव सुख लहें आणंदीरे
अहो. ॥११॥

भवियण एहवा मुनिवर वंदी, मानव भव फल लीजे रे,
कर जोडी मुनि मोहन विनवे, सेवक सुखियो कीजे रे
अहो अहो साधुजी समता वरिया. ॥१२॥

(१०) ❀ सुबाहु कुमार को सज्झाय ❀

हवे सुबाहु कुंवर इम विनवे, अमे लेशुं संयम भार माडी मोरीरे,
माँ मैं वीर प्रभुनी वाणी सांभली, तेणे मैं जाण्यो अथिर संसार
माडी मोरीरे हवे हुं न राचुं संसारमां ॥१॥

हांरे जाया तुझ विना सुना मन्दिर मालिया,
जाया तुझ विना सुनो ससार जाया मोरा रे,
माणक मोती ने मुद्रिका काई ऋद्धि तणो नहीं पार जाया मोरारे,
तुझ विना धडिय न नीसरे ॥२॥

हांरे माजी तन धन जोवन कारमों, कारमो कुटुम्ब परिवार
माडी मोरी रे,
कारमां सगपणमा कुण रहे, मैं तो जाण्यो अथिर ससार
माडी हवे. ॥३॥

हारे जाया सजम पन्थ घणो आकरो, व्रत छे खाडानी धार जाया.
बावीस परिसह जीतवा, रहेवुं छे वनवास धार जाया मोरा रे
तुझ. ॥४॥

हांरे माजी वनमा रहे छे जिम मृगलो, तेहनी कोण करे छे
समार माडी,
वन मृगनी परे चालस्युं, अम्हे एकलडाँ निरधार मा हवे. ॥५॥

हारे माजी नरक निगोदमा उपनो, अनन्ती अनन्ती वार माडी,
छेदन भेदन बहु सह्या, कहतां नावे पार मा. हवे. ॥६॥

हारे माजी काची ते काया कारमी सडी पडी विणसी जाय मा,
जीव जास्ये ने काया पडी रहेसी, मुवा पीछे बाली करे वार
मा. हवे. ॥७॥

हांरे जाया पाँचसौं नारिया, रूपे ते रम्भा समान जाया,

ऊंचाते कुलनी उपनी, रहेवा पांचसौ पांचसो महेल जा. ॥८॥

हांरे माजी घरमां निकले एक नागिनी, सुखे निद्रा न विश्राय मा.
तो पांचसौं नागिणियों में किम रहुं, मारु मनड़ं आकुल व्याकुल
थाय मा. हवे. ॥९॥

हांरे जाया एटला दिवस हुँ जाणती, रमाड़ीश बहु केरा बाल जाया,
पिण दिवस अटारो अवियों, तूं ले छे संयम भार जाया.
तुम्भ. ॥१०॥

हांरे माजी मुसाफिर आव्यो कोई परुणलो, फरी भेगो थाय न
थाय मा.,
एम मानव भव पामवो दोहिलो, धर्म विना दुर्गति थाय
मा. हवे. ॥११॥

हवे पांचसौं नारियाँ इम विनवे, तेमाँ वडोडी करे रे विचार,
वालम मोरा हो,
स्वामी तमे तो संयम लेवा संचर्या. वालम अमने कोण आधार वालम
मोरारे वालम विना किम रही सकूं. ॥१२॥

हांरे माजी मात-पिताने भाई बेनडी, नारी कुटुम्ब परिवार मा.,
अन्त समय अलगा रहे, एक जैन-धर्म तारण हार मा. हवे. ॥१३॥

हवे धारणी माता इम विनवे, सह पुत्र न रहे घरवास भविक जनरे,
एक दिवस नो राज भोगवी, संयम लीधो महावीर स्वामी पास
भविकजन रे सोभागी कुंवर संयम आदर्यो. ॥१४॥

तप तज करी काया सोखवी, आराधी गया देव लोक भविक जनरे,
पनरहे भव पूरा करी, महाविदेह क्षेत्रमा जासी मोक्ष भविक जनरे
सोभागी कुंवर समय आदर्यो. ॥१५॥

इति

★ (११) वज्र स्वामी की सज्झाय ★

● पद्मविजय जी कृत सज्झाय ●

सांभल जो तुमे अद्भुत वाता, वयर कुंवर मुनिवरनी रे,
षट् महिना ना गुरु झोलीमा, आवे केली करन्ता रे,
तीन वर्षना साध्वी मुख थी, अग इग्यारे भणन्ता रे सा. ॥१॥
राजसभामां नवि क्षोभाणा, मात सुखडली देखी रे,
गुरुए दीधो ओघो मुहपत्ति, लीधा सर्व उवेखी रे सा. ॥२॥
गुरु सगाते विहार करे मुनि, पाले शुद्ध आचार रे,
बालपणा थी महा उपयोगी, संवेगी सिरदार रे सा. ॥३॥
कोला पाकने घेवर भिक्षा, दोय ठामे नवि लीधी रे,
गगन गामिनी वैक्रिय लब्धि, देवे जेने दीधी रे सा. ॥४॥

दश पूर्व भणिया जे मुनिवर, भद्रगुप्त गुरु पास रे,
क्षीरास्त्रव प्रमुख जे लब्धि, प्रकट जास प्रकाश रे सा. ॥५॥
कोडी सैंकडा धनने संचे, कन्या रुक्मणी नाम रे,
सेठ धन्ना वह दीये पण न लिये, वधते शुभ परिणामरे सां. ॥६॥
देई उपदेश ने रुक्मणी नारी, तारी दीक्षा आपी रे,
युग प्रधान जे विचरे जग में, सूरज तेज प्रतापी रे सां. ॥७॥
समकित शियलतुम्ब धरी करमां, मोह सागर क्यों ओछोरे,
ते किम डूबे नार-नदीमां एह तो मुनिवर मोटोरे सां. ॥८॥
जेणे दुर्भिक्षे संग लेईने, मूक्यो नगर सुकाल रे,
शासन सोभा उन्नति कारण, पुष्प पद्म सुविशाल रे सां. ॥९॥
बौद्ध रायने पण प्रतिबोध्यो, कीधो शासन रागी रे,
शासन सोभा जयपताका, अम्बर जईने लागी रे सां. ॥१०॥
विसर्यो सूंठ गांठियो काने, आवश्यक वेला जाणी रे,
विसरे नहीं पण एह विसर्यो, आयु अल्प पिछाणी रे सां. ॥११॥
लाख सौनैये हाँडि चढे जिम, बीजे दिवस सुकाल रे,
इम संभलावी वीरसेन ने, जाणी अणसण काल रे सां. ॥१२॥
रथावर्त गिरी जई अण सण कीधो, सोहम हरि तिहां आवेरे,
प्रदक्षिणा पर्वत ने देईने, मुनिवर वन्दे भावेरे सां. ॥१३॥
धन्नसिंह गिरी सूरि उत्तम, जेहना एह पट धारी रे,
पद्म विजय कहे गुरु पद पंकज, नित्य नमिये नर नारी रे सां ॥१४॥

इति

(१२) ★ स्थूलिभद्र स्वामी की सज्झाय ★

(ऋषभ दास कृत)

श्री स्थूलि भद्र मुनिगण में सिरदार जो चोमासो आयोंने कोश्या घरें जो,
चित्रामण शालाए तप जप आदर्यो जो, आदरियां व्रत आव्या छे अम घेरजो
सुन्दर सुन्दरी चम्पक वरणी देहजो, हम तुम सरिखो मेलो आसंसार माजो ॥१॥

संसार में जोयो सकल स्वरूप जो, दर्पणनी छायामें जेहवो रूप जो,
सुपनानी सुखडली भूख भागे नहीं जो ॥२॥

ना कहे शो तो नाटक करशु आज जो, नाग्ह सर्पनी माया छे मुनिराज जो,
ते छोडी किम जाऊं हूँ आशा भरी जो ॥३॥

आशा भरियो चेतन काल अनादिजो, भमियो धम ने हीन थयो प्रमादीजो,
न आणी में तो सुखनी करणी जोगीनी जो ॥४॥

जोगी तो जंगल में वासो वसियो जो, वेश्याने मंदिरे भोजन रसिया जो,
तुमने दीठा एहवा संयम साधतां जो ॥५॥

साधु सो संजम इच्छारोध विचारी जो, कुर्मा पुत्र थया नाणी
घर वारी जो,
पाणी मांहि कोरो पंकज जाणिये जो ॥६॥

जाणी येतो सघली तुमारी वात जो, मेवा मीठा रसवंता
वहु जात जो,
अमर भूषण नित नवली भांते लावताजो, ॥७॥

लावतां तो देती आदर मान जो, काया जाणे रंग पतंग समान जो,
ठाली ने शी करवी एहवी प्रीतडलीजो ॥८॥

प्रीतलडी तो करतां रंगभर सेज जो, रमताने देखाडतां वहु हेज जो,
रीसाणी मनावी मुझने सांभरे जो ॥६॥

सांभरे तो मुनिवर मनडुं वाले जो, ढांकी अग्नि उघाडे पर जाले जो,
संजम मांहीं एह छे दूषण मोटको जो ॥१०॥

मोटकुं तो आव्युं नन्दन तेडुं जो, जाते ने कहि वहे तुम्हारो
मनडुं जो,
मैं तुमने तिहां कौल करने मोकल्या जो ॥११॥

मोकल्या तो मार्ग मांही मलिया जो, संभूति आचारज ज्ञानी
वलियाजो,
संयम दीध समकित तेणे शीखव्युं जो ॥१२॥

शीखव्युं तो कही देखाडो हमने जो, धर्म करतां पुण्य वडेरो
तुमने जो,

समताने घर आवी कोश्या एम वदे जो ॥१३॥

वदे मुनिवर शंकाने परिहार जो, समकित मूले श्रावकना व्रत बार जो,
प्राणातिपातादिक थूलथी उच्चरे जो ॥१४॥

उच्चरे तो वीत्यो छे चौमासो जो, आणालईने आव्या गुरुने पासजो,
श्रुतनाणी कहेवाणा चउदे पूर्वी जो ॥१५॥

पूर्वी थई ने तार्या प्राणी थोक जो, उज्वल ध्याने तेह गया देवलोक जो,
ऋषभ कहे नित तेहने हो जो वन्दना जो ॥१६॥

इति

---

(१३) ★ श्री स्थूलिभद्र स्वामी की सज्झाय ★

(राग—भरतरी)

मूर इदु-वृत

कोशा—वेश जोई स्वामी आपनो, लागी तनडामा [illegible]पजी,
अण धार्युं स्वामी आशुं कर्यो, लाजे [illegible] कायजी
कोण [illegible] मोलव्या ॥१॥

(

आवी खबर होत तो, जावा देत नहीं नाथ जी,
छेतरी छेह दीधो मने, पण छोड़ुं नहीं साथजी
कोण. ॥२॥

स्थूलिभद्र—बोध सुणी सुगुरु तणो, लीधो संयम भारजी,
मात-पिता परिवार सहु, जूठो आल पंपाल जी
नथी रे धुतारे मने भोलव्यो ॥३॥

एवुं जाणी कोशा सुन्दरी, धर्यो साधु वेशजी,
आव्यो गुरुनी आज्ञा लई, देवा तुंने उपदेश जी
नाथी. ॥४॥

कोशा—काल सवारे भेगा रही, लीधा सुख अपारजी,
ते मने बोध देवा आवीया, जोग धरी आचार जी
जोग स्वामी आंहीं नहीं रहे ॥५॥

कपट करी मने छोडवा, आव्या तमे निरधारजी,
पण छोड़ुं नहीं कदी नाथजो, नथी नारी गमारजी
जोग स्वा. ॥६॥

स्थूलिभद्र—छोड्या मातपिता वली, छोड्या सहु परिवार जी,
ऋद्धि सिद्ध मैं तजी दीधी, मानी सघलुं असारजी
छेटी रही कर वात तूं ॥७॥

जोग धर्यो अमें साधुनो, छोड्यो सघलानो प्यारजी,
मात समान गणुं तने, सत्य कहुँ निरधार जी
छेटी रही ॥८॥

कोशा—बार वरसनी प्रीतडी, पलमा तूटी न जायजी,
पस्तावो पाछल थी थसे, कहुँ लागी ने पाय जी
जोग स्वामी. ॥९॥

नारी चरित्र जोई नाथजी, तुरत छोडशो जोगजी,
माटे चेतो प्रथम तुमे, पछी हसस सहु लोकजी
जोग स्वामी. ॥१०॥

स्थल भद्र—चाला जोई तारा सुन्दरी, डगु नही हूं, लगारजी,
काम शत्रु में कबजे कर्यो, जाणी पाप अपार जी
छेटी, ॥११॥

छेटी रही गमेते करे, मारे माटे उपायजी,
पण तारा सामु जोउं नही, शाने करे हाय हाय जी
छेटी. ॥१२॥

कोशा—मांछी पकडेछे जालमां, जलमा थी जेम मीनजी,
तेम मारा नेत्रना बाण थी, करीश तमने आधीनजी.
जोग. ॥१३॥

ढोंग करवा तजी दई, प्रीते ग्रहो मुज हाथ जी,
कालजु कपाय छे माहरुं, वचन सुणने नाथ जी
जोग स्वामी ॥१४॥

स्थूलि भद्र—बार वरस तुज आगले, रहयो तुज आवासजी,
विध विध सुख में भोगव्या, कीधा भोग विलासजी
आशा तजो हवे माहरी ॥१५॥

त्यारे हतो अज्ञान हूं, हतो कामनो अंधजी,
पण हवे ते रस में तज्यो, सुणी शास्त्रनां वंधजी
आशा ॥१६॥

कोशा—ज्ञानी मुनिने ऋषिओ, मोटा विद्वान् भूप जी,
ते पण दासवनी गया, जोइ नारीनु रूपजी
जोग. ॥१७॥

साधु पणो स्वामी नहीं रहे, मिथ्या वदं‌ु नहीं लेशजी,
देखी नाटरंभ माहरो, तजशो साधुनो वेश जी
जोग. ॥१८॥

स्थूलि भद्र—विध विध भूषणो धारीने, सजी रूड़ा शणगारजी,
प्राण काडी नाखे ताहरो, कुदी कुदी आवारजी,
आशा. ॥१९॥

तोपण सामु जोऊं नहीं, गणु ।वष समानजी
सूर्य उगे पश्चिम कदी, तोपण छोडु न मानजी
आशा. ॥२०॥

कोशा—भिन्न भिन्न नाटक मे कर्या, स्वामी आपनी पासजी,
तोपण सामु जोइ तमै, पूरी नहीं मन आशजी
हाथ ग्रहो हवे माहरो ॥२१॥

हस्त जौड़ी हवे वीनवु, प्यारा प्राण जीवनजी,
वार वरसनी प्रीतडी, याद करो तमे मनजी
हाथ. ॥२२॥

स्थूलिभद्र—चेत चेत कोशा सुन्दरी, शुं कहुँ वारंवारजी,
आ ससार असार छे, नथी सार लगार जी
सार्थक करो हवे देहने ॥२३॥

जन्मधरी ससार मां, नहीं ओलख्यो धर्मजी,
विध विध वैभव भोगवी, कीधा घणा कुकर्मजी
सार्थक. ॥२४॥

ते सह भोगववा पडे। मुआ पछी तमामजी,
अधर्मी प्राणीने मले नहीं शरणुं कोई ठामजी
सार्थक ॥२५॥

सिंधुरूपी ससारमा, मानव मीनरूप धारजी,
जंजाल जालरूपी डगडगे, कालरूपी मछी मारजी
सार्थक. ॥२६॥

कोशा—विषय रसमाली गणी, कीधा भोग विलास जी,
धर्मना कार्य कर्या नहीं, राखी भोगनी आशजी
उद्धार करो मुनि माहरो ॥२७॥

व्रत चुकाववा आपनु, कीधा नाचने गानजी,
छेड करी मुनी आपनी बनी छेक अज्ञानजी
उद्धार. ॥२८॥

चार रस सुख भोगव्युं, खरच्या खूब दीनार जी,
तोए हुँ तृप्त थइ नहीं, धिक धिक मुज धिक्कार जी
उद्धार ॥२९॥

श्रेय करो मुनिवर माहरू, बतावी ने शुभ ज्ञानजी,
धन्य धन्य छे आपने, दीसो मेरू समानजी
उद्धार ॥३०॥

स्थूलि भद्र—छोड़ी मोह संसार नो, धारो शीलव्रत सारजी,
तो सुख शान्ति सदा मले, पामो भवजल पारजी
सार्थक. ॥३१॥

कोशा—धन्य मुनिवर आपने, धन्य सकडाल तातजी,
धन्य शंभूति विजय मुनि, धन्य लाछादे माताजी
मुक्त करी मोह जालथी ॥३२॥

स्थूलि भद्र—आज्ञा दीओ हवे मुझने, जाऊं मुज गुरु पासजी,
चौमासुं पुरुं थया पछी, साधु छोड़े आवास जी
रुडी रीते शीलव्रत पालजो ॥३३॥

कोशा—दर्शन आपजो मुझने, करवा अमृत पानजी,
सुर इन्दु कहे स्थूली भद्रजी, थयासिंह समानजी
धन्य छे मुनिवर आपने ॥३४॥

इति

---

(१४) ★ स्थूलिभद्रजी की सज्झाय ★

※ माणक विजय जी कृत ※

(तर्ज—पार्श्व तोरी निरखण दो असवारी)

नर भव रत्न चिन्तामणी जाणी, जाणी अथिर ससार,
सयम लेई स्थूलिभद्रजी आव्या, कोश्याने आगार
मुनिवर स्थूलिभद्र हितकार ॥१॥

कोश्या कहे स्थूलिभद्र ने रे, ए शुं कीधूं काज,
कोण मल्यो तुमने धुतारो, कोणे भोलविया आज
वालमजी नही छोडू हवे साथ ॥२॥

गुरु वयणे असार ससार ने, जाणी छोड्यो परिवार,
नरक नी खाण ने मूत्र नी क्यारी, जाणी ने छोडी नार-
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥३॥

गुरु आणा लेई तुम घेरे, प्रति बोधना हूं आयो,
सुख ससारी दुःख देनार।, मृग जल जेम जीव धायो
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥४॥

मोहे भान भूलेलो ज्यारे, तुम आवासे वसियो,
तुम सामु हवे नहीं जोऊं वैरागे मन धसियो
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥५॥

काम शत्रु मे कबजे कियो, मात समान तुझ जाणी,

तारा चरित्र थी नहीं चलूं, पाप घणुं दुःख खाणी
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥६॥

भोग ने विष किंपाक थी अधिक, जाण्या अति दुःख दाय,
हवे हूँ नथी भान भूलेलो, जाण्यो में धर्म सवाय
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥७॥

विषय रावण ने राज्य गुमाव्यां, पद्मोत्तर राज्य भ्रष्ट,
चंन्द्र प्रद्योतन दासी माँ मोह्यो, नरके मणिरथ दुःष्ट
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥८॥

शियले यश कीर्ति होय जगमां, संकट सवि दूर जाय,
अग्नि जल जेम शीतल होवे, सर्प कुसुमनी माल
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥६॥

सुदर्शन नी आपदा नाठी, शूली सिंहासन थाय,
नर राय देव गंधर्व गुण गावे, चरणो में शीश नमाय
कोश्याजी विषय थी. ॥ ०॥

वात विषयनी दूर निवारी, धर समकित सुखकार,
व्रतो श्रावकना बारे पाली, कर सफल अवतार
कोश्याजी विषयथी मनडो वार ॥११॥

विषय मां अंध बनी हूँ स्वामी, नाच गान बहु कीध,
षड् रस भोजन लीया तोये, आंख ऊंची नवि कीध
कोश्याजी विषय थी मनडो वार ॥१२॥

क्षणिक सुखमा जन्म गुमायो, धर्म न कीधो लगार,
साचो राम बतावी तुमे, कीधो मम उपगार
कोश्याजी विषय थी मनडो वारो. ॥१३॥

भव समुद्र पडंती मुझने, समकित नाव देई तारी,
धर्म जिनन्द नो पालीश प्रीते, तुमे खरा उपकारी
मुनिवर स्थूलिभद्र हितकार ॥१४॥

प्रतिबोधी कोश्या वेश्याने, पाली संयम सार,
स्वर्ग माहि मुनिवर जी पोच्या, जाशे मुक्ति मोझार
मुनिवर स्थूलिभद्र हितकार ॥१५॥

शियल व्रते थई सुखी कोशाजी, निशदिन मुनि गुण गाय,
चौरासी चौवीसी नामज रहेशे, नामे नव निधि थाय
मुनिवर स्थूलिभद्र हितकार ॥१६॥

विजय मोहन सूरि राय प्रतापे, माणेक विजय पन्यास
निशदिन ए मुनिवर ने गावे, तन मन धरी उल्लास,
मुनिवर स्थूलिभद्र हितकार ॥१७॥

इति

---

(१५) ❀ श्री स्थूलिभद्र की सज्झाय ❀

※ श्री महिमा प्रभ सूरि कृत ※

योग ध्यान ध्यान में जोडी ताली, हाथ ग्रही जय माल,
स्थूलिभद्र योगीश्वर आगे बोले कोशा बाल,
बोलो नाँजी बोलो नाँजी बोलो नांजी,
स्थूलिभद्र बालमजी प्रीतलडी खटके बोलो नांजी ॥१॥

अण बोले इहां केमज सरसे, प्रेमनो कांटो खूंचे,
आमण दामण देखी मुझने, पाडोसी सहुं पूछे
बोलो नांजी ॥२॥

मा आगल मोसाल वखाणो, हूँ गुण जाणु तोरा,
एक घडी रिसावी रहती, त्यांरे थाता दोहिला बोलो नांजी ॥३॥

एक वांझणी ने बेटो मोटो, तो साचो केम प्रीछो,
तेम वेश्यानी संगे आवी, संयम रागने इच्छो बोलो नांजी. ॥४॥

वाय झकोले डोले दीवो, अग्नि घी पिघलाये,
तेम नारी संगे व्रत न रहे, आखिर हांसी थाये बोलो नांजी ॥५॥

सूका पान सेवाल ने खाता, वनवासी ने योगी,
तो पण नारी दर्शन देखी, काम तणा थया रागी बोलो नांजी ॥६॥

मुनिवर नी मुद्रा लेई बैठा, वली षट् रस पण खावा,

कीलीना टोलामा कुशले, रत्न वांछे लई जात्रा बोलो नांजी ॥७॥

* स्थूलिभद्र नो जवाब *

स्थूलिभद्र कहे सुण रे कोश्या, कही ते साची वाणी,
मा मोसाल ए पदने अर्थे, तूं मुझ मात समाणी,
छोडो नांजी, छोडो नॉजी छोडो नॉजी,
विषय ना वयणा विरु आ छोडो नांजी. ॥१॥
घटता बोल कह्या ते सगला, उथाप्या नवि जाये,
नव विध वाड राखे ते, मुनिवर जिनागम कहेवाये छोडो. ॥२॥
चित्र लिखित पूतलडी ने पण, निरखे नहीं सोभागी,
तो किम निश दिन नारी संगे, राचे वड वैरागी, छोडो. ॥३॥
सरस आहार नवि खावे मुनिवर, तप जप क्रिया धारी,
वन मृगनी परे ममता मूकी, विचरे मुनि ब्रह्मचारी छोडो. ॥४॥
कोइक भावी पदार्थ थी हुँ, गुरु आज्ञा लेई आव्यो,
पण एम न रहेवुं घटे मुनिने, मुझ मन अर्थे ए भाव्यो बोलो.॥५॥
विषय विपाक तणा फल जाणी, कोशा कीधी दूरे,
सरल स्वभाव सही गुण आवे, तरीया भवजल पूरे बोलो. ॥६॥
मीठी वाणी मुनिवर नी भिली, वेश्याने मन भेटी,
शीलव्रत अगे अजवाली, विषय वेलिने छेदी बोलो. ॥७॥

धन धन शकडालनो नन्दन धन लाछां दे माय,
श्री महिमाप्रभ सूरि नो, भाव नमे मुनि पाय छोडो. ॥८॥

इति

---

(१६) ❀ स्थूलिभद्र जी को सज्झाय ❀

❀ उ० क्षमा कल्याण जी म० कृत ❀

(तर्ज—तीरथ ते नमूरे, ए देशी)

श्री महावीर जिनेसरुं, त्रिभुवन गुरुजी,
तसु आठम पटधार, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥१॥

पाटली पुरी सोहामणुं, महि मंडणुं जी,
तिहां पायो अवतार, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥२॥

नंद नरिंद मंत्रीश्वरू, गुण आगरुजी,
श्री सकडाल सुपुत्र, श्रीस्थूलिभद्र नमो ॥३॥

लाछना दे नन्दन भलो, मुनि गुण निलोजी,
नागर द्विज कुलदीप, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥४॥

श्री संभूति विजय गुरु, पूरव धरुजी,
व्रत लीधा तसु पास, स्थूलिभद्र नमो ॥५॥
कोशा वेश्या प्रति बोध, श्री सद् गुरु स्तवे जी,
दुक्कर दुक्कर काम, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥६॥
चौद पूरव शिख्यो वली, श्रुत केवली जी,
श्री भद्रबाहु समीप, श्री स्थूलिभद्र नमो. ॥७॥
सयम पाल्यो निर्मलो, त्रिविधें भलोजी,
जगम युग प्रधान, श्री स्थूलिभद्र नमो. ॥८॥
पाच माम ५च दिन सही, उपर कहीं जी,
वरस नवाणु श्राय, श्री स्थूलिभद्र नमो. ॥९॥
करि अणसण आराधना, शुभ वासना जी,
पोहतो स्वर्ग मोझार, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥१०॥
चुलसी चोवीसी लगें, जस जग मगे जी,
रहसे तेहनो नाम, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥११॥
वसु युग वसु चन्द्र वत्सरे, १८२८ पाटली पुरे जी,
जसु पद थापना कीध, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥१२॥
वाचक अमृत धर्म नो, गुणे शुभ मनो जी,
शिष्य क्षमा कल्याण, श्री स्थूलिभद्र नमो ॥१३॥

इति

---

(१७) ❀ श्री स्थूलिभद्रजी की सज्झाय ❀

* खुशाल विजयजी कृत *

(तर्ज—महावीर प्रभु घर आवे)

एक दिन कोरश चित्र अंगे बैठी छे मनमां उछरंगे,
चार पांच सहेली संगे रे, स्थूलिभद्र मुनि घर आवे,
आवे आवे लाछन देनो नन्दरे स्थूलिभद्र मुनि. ॥१॥

मारे आज मोतीड़े महेवूठा, देव देवी सर्वे मुझ तूठा,
मेतो जीवन नयने दीठा रे स्थूलि. ॥२॥

आवी उतर्या चित्रशाला, रुडी रत्ने जड़ी रढियाला,
माहे मूंगिया मोती सुरसालारे स्थूलि. ॥३॥

पकवान जमिया बहुभांत, उपर चोशठ शाकनी जात,
तेतो न धरी विषयनी वातरे स्थूलिभद्र मुनि घर. ॥४॥

कोशा सजती सोले शणगार, काजल कंकुने गले हार,
अणवट अंगूठी विछिया साररे स्थूलि. ॥५॥

द्वादश धप मप मादल वाजे, भेरी भूंगल वीणा गाजे,
एम रूपे अपसरा बिराजे रे स्थूलि. ॥६॥

कोशा ए वात विषयनी वखाणी, स्थूलिभद्र ए हृदय नवि आणी,
हूँ तो परणयो शिव पटराणी रे स्थूलि. ॥७॥

एम बहुविध नाटक करिया, स्थूलिभद्र ए हृदय नवि धरिया,
साधु समता रसना दरिया रे स्थूलि ॥८॥
सुख एणे जीव अनुभवियो, काल अनन्तो एम गमियों,
तोय तृप्ती जीव न पामियो रे स्थूलि. ॥९॥
वेश्याने कीधी समकित धारी, विषय रस सुखने निवारी,
एहवा साधुनी जाऊं बलिहारी रे स्थूलि. ॥१०॥
एहवो पूरो थयो चोमासो, स्थूलिभद्र आव्या गुरुपासो,
दुःक्कर दुःक्कर व्रत उलासोरे स्थूलि. ॥११॥
नाम रख्यो छे जगमांहे, चोरासी चोवीसी त्यांहे,
साधु पोंहता देवलोक मांहे रे स्थूलि ॥१२॥
पण्डित हस्ति विजय कविराया, एहवा सुगुरु तणे सुपसाया,
शिष्य खुशाल विजय गुण गायारे स्थूलिभद्र. ॥१३॥

इति

★ स्थूलिभद्र जी की सज्झाय ★

* पूजानी देशी *

आज सखी आवशे' आवशे रे, निश्चय स्थूलिभद्र मारो नाथ,
आज निशा में सुपन लह्यु रे, मन्दिर पधारे म्हारे साथ
आज मारे मन्दिर पधारे मारो नाथ ॥१॥

हरखे मुज हैडुं थयुं रे, रोम रोम विकस्यो मारो गात,
रसीयो मारो संगथीरे, प्रेम मलशे मुझने प्रांत आज. ॥२॥

एहवे गुरु आणा लई रे, स्थूलिभद्र मुनिवर चतुर चोमास,
कोशा मन्दिर आवीयारे, आदरी पूरण जोग अभ्यास. ॥३॥

कोशा कर जोडी रही रे, लली लली करती लागे पाय,
प्रभु भले पधारीया रे, मुज दासी पर करीय पसाय आज. ॥४॥

आज मारे आंगणे रे, मीठा दथडे वूठा मेह,
घर आंगण गंगा वहीरे, प्रगट्या पूरण सुकृत स्नेह आज. ॥५॥

करुणा निधी करुणा करीरे, मन्दिर पावन मारो कीध,
दुःखडा सहु दूरे गयारे, में आज संपूर्ण अमृत पीध आज. ॥६॥

चित्रशालामां चूंपशुं रे, रंगे नित प्रत्येरहीये स्वाम,
भगति युगति सहु साचवुं रे, प्रेम धरी हुं करीं प्रणाम आज. ॥७॥

स्थूलभद्र कहे कोश्या ! सुणोरे, नहिं हवे नवलो तेहज स्नेह,
हुँ साधु थयो संयमी रे, रंगभर राग न राखुं रेह आज. ॥८॥

अलगी रहेजे मुजथीरे, उठ हाथ मूकी इला (भूमि) अेह,
चाला करजे चूंपशुं रे, जिम जाणे तिम मनथी जेह आज. ॥९॥

हवे व्रत चुकाववा रे, कोशा रंगे रचीयो रास,
नाटक साहेया नवा नवारे, उलटे जेहथी मदन उल्लास आज. ॥१०॥

घघरीनां घम कारमां रे, झांझरना तिम झण कार,
पाय तरना पड छंदमां रे, ठमके विच्छीयाना ठमकार आ. ॥११॥

थपमप मादल वाजतारे, वीणा शब्द तणा रणकार, (७१)
ताल तान तूटे नही रे, एणी परे नाचे नृत्य अपार आ. ॥१२॥
फुंदडी नी परे फरे रे, लटके नमती अंग न माय,
मुखडाना मटका करे रे, खलके चूडीना रणकार आ. ॥१३॥
ये नेत्र कटाक्ष निहालतारे, पडे पतंग ज्यर प्रेमने पास,
स्थूलिभद्र चित चूके नहींरे, कोशा मन थी थाय निराश आ. ॥१४॥
कोशा पद प्रणमी करीरे, धन धन मुनिवर तुज अवतार,
शियल शिरोमणि सुंदरुरे, जीत्यो जालिम मदन विकार ॥१५॥
हवे तारो मुज स्वामी जी रे, दाखो मुझने धर्म दयाल,
श्रावक व्रत समजावीने रे,साधी समकित दीधी कृपाल आ. ॥१६॥
चोथो व्रत चोखूं करीरे, मुनिवरे त्याथी कीधो विहारे,
आर्य संभूति गुरु उच्चरे रे, आवो दुक्कर २ करनार आ. ॥१७॥
अेम कोशा प्रति बुझवी रे, स्थूलिभद्र नाम रह्यो निर धार,
सम्प्रति सुर पद भोगवेरे, आगे लेगे भवनो पार आ. ॥१८॥
एहना गुणी गुण गावतारे, लहीये लीला लाभ अपार,
चहुगति चूरीने रे, मुक्ति महानन्द पदमव धार आ.
आज मारे मन्दिर. ॥१६।

इति

---

(१६) ❀ श्री मेतारज मुनि की सज्झाय ❀

❋ राज विजयजी कृत ❋

(तर्ज:—झांझरिया मुनिवर)

सम दम गुणना आगरुजी, पंचमहा व्रत धार,
मासखमणने पारणे जी, राजगृही नगरी मोझार
मेतारज मुनिवर ! धन धन तुम अवतार ॥१॥
सोनी ने घर आविया जी, मेतारज ऋषि राय,
जवला घडतो ऊठियोजी, वन्दे मुनिनो पाय मेताराज. ॥२॥
आज फल्यो घर आंगणोजी, विण काले सहकार,
ल्यो भिक्षा छे सूजती जी, मोदक तणो आहार मेता. ॥३॥
क्रौंच जीव जवला चुग्याजी, वहोरी गया मुनिराज,
सोनी मन शंका थई जी, साधु तणो एह काज मेतार. ॥४॥
रीस करी ऋषिने कहेजी, द्यो जवला मुज आज,
वाध्रे शीश विंटीयुं जी, तडके नांख्यो मुनिराज मेता. ॥५॥
फट फट फूटे हांडकांजी, तट तट तूटे रे चाम,
सोनीये परिषह कियोजी मुनि राख्यो मन ठाम मेता. ॥६॥
धन्य धन्य ते मोटा मुनि, मन मां न आण्यों रोष,
आतम निन्दा मुनि करेजी, सोनी तणो नहीं दोष मेता. ॥७॥
गज सुकुमाल संतावियाजी, बांधी माटीनी पाल,
खैरअंगार शिर धर्योजी, मुगते गया तत्काल मेतार. ॥८॥

वावणे शरीर विखुरियुं जी, साधु सुकोमल देह,
केवल लई मुक्ते गयाजी, इम श्ररणिक श्रणगार मेतार. ॥९॥
पालक पापी पीलियाजी, खधक सूरिना शिष्य,
यंनड चेला पाचसो जी, नमो नमो ते जगदीश मेतार. ॥१०॥
एवा ऋषि सभारतांजी, मेतारज ऋषि राय,
श्र तगड हुश्रा केवलीजी, हु प्रणमुं तस पाय मेतार. ॥११॥
भारी काष्टनी स्त्री तिहाजी, लावी नाखी तेणी वार,
धमके, पंखी जागियो जी, जवला नाख्या तेणी वार मेतार. ॥१२॥
जवला देखी वींटमाजी, मनमा डर्यो रे सोनार,
श्रोघो मुहपत्ति साधुना जी, लेई थयो श्रणगार में तारज. ॥१३॥
चारित्र पाली निर्मलोजी, थिरकरी मन वच काय,
राज विजय रगे भणेजी, साधु तणी रे सज्झाय मे तारज. ॥१४॥

इति

---

(२०) ★ श्री मेतारज ऋषि की सज्झाय ★

※ हर्ष सूरिजी कृत ※

श्रेणिक राजा तणो रे जमाई, जाती नो सार्टू कार जी,
मेतारज संयम श्रादरीयो, क्षमा तणा भण्डार जी श्रेणिक, ॥१॥

ऊंच नीच कुले भिक्षाए अटतो, लेतो शुद्ध आहार जी,
सोहनकार तणेरे घर आयो, मुनि दीठो सोनार जी
श्रेणिक ॥२॥
भावें वांदी ते उठीने, भला पधार्यां आरज जी,
खवर देवण घरमाहीं पेठो, ऊभा रह्या ऋषि राजजी ॥३॥
सोवन जव तिहां मूक्या हूँतां, ते सहुँ गीलिया कुंचजी,
सोवन जव सोनारे न देखी, एशो, थयो पर पंच जी
श्रेणिक. ॥४॥
जव पाछा आपो मुझ ऋषिजी, मकरो एवडो लोभ जी,
ऋद्धि छोडी ने तुमे व्रत लीधो, म गमो संजम शोभजी
श्रेणिक. ॥५॥
नाम प्रकाश्यो नहीं पक्षीनो, आणी करुणा साधजी,
सोनारे घर माहीं तेडी, माथ वीटाव्यो वाधजी
श्रेणिक. ॥६॥
तावडा सुं तेज सुकाणो, अति हि पिडाणो शीशजी,
ते वेदना सगली आसहीं, पिण न आणी मन रीप जी
श्रेणिक. ॥७॥
आंख पडी वेहुं धरती छिटकीने, पाम्यो केवल ज्ञान जी,
मेतारज ऋषि मुगते पेहोंता, दया तणो ए नाण जीश्रेणिक. ॥८॥
धन धन मोटा मुनी मेतारज, जीव दया अति पालजी,
कहे जिन हर्ष सदा पाय प्रणमुं, प्रहउठी त्रण काल जी
श्रेणिक. ॥९॥

———

(२१) ❀ श्री भरत चक्रवर्ती की सज्झाय ❀

आभरण अलंकार सघला उतारी, मस्तक सेती पागी,
आपो आपथइ ने बैठो, तन देह दीसे छे नागी
भरतेश्वर भूपति भयो रे वैरागी ॥१॥

अनित्य भावना ऐसी रे भावी, चार कर्म गया भागी,
देवता ए दीधो ओघो मुहपति, जिन शासन ना रागी भरते. ॥२॥

स्वाग देखी भरतेश्वर केरो, सहियर हसवा ने लागी,
हसवानी अवसर पड़ेगी, रहेजो अमशुं आगी भरते. ॥३॥

चोराशी लाख हयवर गयवर, छन्नुक्रोड है पागी,
चोराशी लाख रथ सग्रामी, ततक्षण दीधा छे त्यागी भरते. ॥४॥

चार क्रोड मण अन्न नित्य सीझे, दश लाख मण लूण लागी,
चौसठ सहस अन्ते उरी प्यारी, सुरता मोक्ष में लागीभरते, ॥५॥

अडतालीश कोशमा लश्कर पड़ेछे, दुश्मन जाय छे भागी,
चौद रत्न तो अनुमती मागे, ममता सहु शुं भागी भरते. ॥६॥

तीन क्रोड गोकुल धण दूझे, एक क्रोड हल सागी,
चोसठ सहस अंतेउरी त्यागी, ममता सहु शुं भागी भरते. ॥७॥

भरीरे सभामां भरतेश्वर बोल्या, उठो सदा रहो जागी,
आ लोक उपर नजर न देशो नजर देजो तुमे आगी भरते. ॥८॥

वचन सुणी भरतेश्वर केरा, दश सहस्र ऊठ्या छे जागी,
उदय कर्मीलो हाट हवेली, ततक्षण दीधा छे त्यागी भरते. ॥९॥

एक लाख पुरव लगे संयम, पाली केवली सार,
शेष अघाती कर्म खपावी, पहोंत्यां मोक्ष मोझार भरते. ॥१०॥

१. पयदल—सेना

इति

---

(२२) "नेम राजुल की सज्झाय"

※ रूपविजयजी कृत ※

(तर्ज—नदी जमुना के तीर उडे दोय पंखीया)

पीयुजी पीयुजी रे नाम, जपुं दिन रातियां, पीयुजी चाल्या परदेश,
तपे मोरि छातियां, पग पग जोतीवाट व्हालेश्वर कब मिले,
नीर विछोयां मीन, के ते ज्युं टलवले, ॥१॥
सुन्दर मन्दिर सेज साहिब विण नवि गमे, जिहां रे व्हालेश्वर नेम,
तिहाँ मारुं मन रमें, जो होवे सज्जन दूर, तोही पासे वसे,
किहां पंकज किहां चन्द, देखी मन उल्लसे ॥२॥
निः स्नेही शुं प्रीत, म करजो को सही,
पतंग जलावे देह, दीपक मन में नहीं,

वहाला माणसनो वियोग, म होजो केहने,
सालेरे साल समान, हैयामां तेहने ॥३॥
विरह व्यथानी पीड, जोबन वय अति दहे,
जेनो पियु परदेश, ते माणस दुःख सहे,
झुरि झुरि पंजर कीध, काया कमलज जिसी,
हजीय न आव्यो नेम, मली न नयणे हसी ॥४॥
जेहने जेहशुं राग, टाल्यो ते नवि टले,
चकवा रयणी विजोग, ते तो दिवसे मले,
आंबा केरो स्वाद, लींबु ते नवि धरे,
जे नाह्या गंगा नीर, ते छिल्लर किम तरे ॥५॥
जे रम्या मालती फूल, धतूरे किम रमे,
जेहने घृत शुं प्रेम, ते तेले किम जिमे,
जेहने चतुर शुं नेह, ते अवरने शुं करे,
नव जोबन तजी नेम, वैरागी थई फरे ॥६॥
राजुल रूप निधान, पहोंती सहसावने,
वंदी वाधा प्रभु नेम, संजम लेई एकमने,
पाम्या केवल ज्ञान, पोंहती मननी रली,
रूप विजय प्रभु नेम, भेट आशा फली ॥७॥

इति

(२३) ❀ राजुल और रहनेमी की सज्झाय ❀

(तर्ज—भेखरे उतारो राज भरथरी)

धिग मुनि धिग तुमने, धिग तुम्हारा वेणजी,
चारित्र तुमारुं अ ले गयुं, कूडा तमारा केणजी
मोहरे उतारो मुनिराज जी ॥१॥

मात पिता कुल पोलीयुं, घोल्युं चारित्र आजजी,
विषय कारण मोह लाविया, कूडा कृत्यने काजजी मोहरे. ॥२॥

तप जप करवो छोडी दीयो, राणी राजुल नारजी,
संसारनां सुख भोगवो, करो सफल अवतारजी प्रीतीरे धरो.
प्रमदया मुझ थकी ॥३॥

मेवा फल फूल लाव तो, हूँ तमारे आवास जी,
होश धरीने लेतां तमे, तेथी थई वहु आशजी प्रीतीरे धरो. ॥४॥

वस्त्र भूषण लिधां प्रेमथी, जाणी देवर जातजी,
व्रत लईने जेणे भांगीयां, थयो नरकनो पात्र जी मोहरे. ॥५॥
रेवत नाथ निहालतां, तुम हम दोनुं ने आज जी,
निलज्ज लाज किहां गई, गयुं ज्ञान महाराज जी मोहरे. ॥६॥

एथी अधिक कहो तुमने, राजुल प्राण आधार जी,
व्हाल तमारूं नवि वीसरे, सुणो राजुल नार जी प्रीतिरे धरो. ॥७॥
पिऊ विण राजुल एकली, जाणी तमारी दासजी,
होश धरीने अमे आवता, करवा तमारा काज जी प्रीतिरे धरो. ॥८॥

तारण तंत्र तोडी कर्यो, मोह मत्रनो सगजी,
मोच पदनी तमे खोटेने, कर्यो सयम भग जी मोहरे. ॥९॥

संसार असार छोडी तमे, लीधो सजम भारजी,
उत्तम पुरुष चढ्ये नहीं, फिर संसार असार जी मोहरे. ॥१०॥

माया करीजे मिले नहीं, ते मूरखनी रीत जी,
संसार मा शुं लई जवुं, एक पुरण प्रीत जी प्रीतीरे. ॥११॥

कुंवारी कन्या ने कथ केटला, सुण सुण राजुल नामजी,
एकनी उपर राग नही घटे, करो मुझने स्वाम जी
प्रीती रे थरो प्रेमजा मुझ थकी ॥१२॥

अमीरस मुकी का पीयो, नारी अवगुण नीखजी,
ससारमाँ मार काई नथी, धरो सजम शीख जी मोहरे. ॥१३॥

दीक्षा लई प्रभु पास थी, पालो शुद्ध आचार जी,
जिप फल खावा वाँछा करी, लेवा पृथ्वी नो भारजी मोहरे. ॥१४॥

मे जाणयु राजुल एकली, पति विना मुंझाय जी,
परणीने सुख आपशु, नहीं लेवा देऊं दीक्षारजी प्रीतरे. ॥१५॥

पुण्य प्रतापे में भेटिया, आज केटले मामजी,
चालो घरे जईये आपणे, करवा भोग विलासजी प्रीतिरे. ॥१६॥

प्रभु तमारे परि हरी, जाणी अस्थिर ममाग जी,
श्वान परे इच्छा काई करो, जमवा वमन विकार जी मोहरे. ॥१७॥

श्वान कियो तुमे मुझने, तो शो तुमथी संसार जी,
दीक्षा आपी सारी साधवी, कर्यो तमे उपकार जीं क्षमा,
रे करो मोरी मातजी ॥१८॥

इति

---

(२४) ★ श्री नेम राजुल की सज्झाय ★

(तर्ज—भेखरे उत्तारो राजा भरथरी)

* मुनि सुन्दर विजयजी कृत *

राणी राजुल करजोडी कहे, जादव कुल शणगार रे,
आठे रे भवनो नेहलो, तमे केम मूको विसार रे
हूँ तो वारी रे जिनवर नेमजी ॥१॥

हूं तो वारी रे जिनवर नेमजी, मोरी विनतडी अवधार रे,
सुरतरु सरिखो साहिबो, नित नित कहुँ दिलधार रे हूं. ॥२॥

प्रथम धनपति ने भवे, तूं धन नामे भरतार रे,
वेवि शाल मलतां मुजने, छानो मोकल्यो मोती नो हार रे हूँ. ॥३॥

लेई चारित्र सौधर्ममां, देव तणो अवतार रे,
क्षण विरहो खमता नहीं, त्याँही पण धरता प्यार रे हुँ. ॥४॥

त्रीजे भवे विद्याधरु, चित्रांगद राजकुमार रे,
भोगनी पदवी भूपनी, हूँ रत्नवती तुज नार रे हूँ. ॥५॥

महाव्रत पाली साधुना, पाम्या ऋद्धि अपार रे,
माहेन्द्र सुरलोक मा, चोथे भवे सुविचार रे हूँ. ॥६॥

पांचमे भवे अति दीपतो, नृप अपराजित सार रे,
प्रीतिमती हुं ताहरी, थई प्रभु हैडानो हार रे हूँ. ॥७॥

ग्रही दीक्षा हरखे करी, छट्ठे भवे उदार रे,
आरण्य देवलोके निहुँजणां, सुख विलस्या सुखकार रे हूँ. ॥८॥

शंख राजा भव सात मे, जसुमती प्राण आधार रे,
वहाला ! विश स्थानक सेविया, ते कीधो जय जय कार रे हूँ ॥९॥

आठमे भवे अपराजिते वरस बत्तीश हजार रे,
इच्छा रे उपजे आहारनी, पूरव पुण्य प्रकार रे हूँ. ॥१०॥

हरि वंश माहे उपन्या, शिवा देवी सासु महार रे,
नवमे भवे काई परिहरो, राखो जी लोक विचार रे हु. ॥११॥

ए सबंध सुणी पाछलो, भणे जी नेम ब्रह्मचारी रे,
तो तुजने साथे तेडवा, आव्यो जी ससराने द्वारी रे हूं. ॥१२॥

एम सुणी राजीमती, गई पीउडाजी नी लार रे,
अविचल कर्यो इणे साहिबो, नेहलो मुक्ति नो सार रे हूं. ॥१३॥

धन धन जिन नागीशमो, जेणे तारी पोता नी नार रे,

धन धन उग्रसेन नंदिनी, जे सती मांहे शिरदार रे हूँ. ॥१४॥

संवत सत्तरे एकाणुं रे, शुभ वेला शुभ वार रे,
मुनि सुन्दरे राजुल ना, गुण गाया सुखकार रे हूँ. ॥१५॥

इति

---

(२५) ★ अम्बिका सती नी सज्झाय ★

※ वीर विजय जी कृत ※

अम्बिका ते बादल उगियो सूर, अम्बिका ए पानी संचर्या रे,
सामा ते मलिया दोय मुनिराय, मास खमणना पारणा रे ॥१॥

वेडुं ले मेल्यो सरोवर्या पाल, अम्बिकाए मुनि ने वान्दियारे,
चालो मुनिराय आपणे घेर, मास खमणना पारणा रे ॥२॥

त्यांरे ढलाऊं सोवन पाट, चावल चाखला अति घणारे,
आछला मांडीने खोलवे खांड, लापसड्या घी लचपचारे ॥३॥

त्यो त्यों मुनिराय मकरो ढील, अमघर सासुजी खीजसे रे,
बाई रे पाडोसण तूं मारी बेन, मारी सासु आगल न करीश
वातडी रे ॥४॥

तने आलु मारी काननी झाल, हार आलु हैया तणो रे,

काननी झाल तारे काने सोहाय, हीरो रा हार मारे अति
घणारे ॥५॥

मारे छे वात करनानी टेव, वात कर्या विना नहीं रहूँ रे,
पाडोसण नाई खिडकी रे माय, बाई रे पाडोसण सामीगई रे ॥६॥

बाई रे पाडोसन कहु एक वात, तारी वहु मुनिने वहोरावियो रे,
नथी उग्यो हजी तुलछी नो छोड, ब्राह्मणे नहीं कर्यो पारणोरे ॥७॥

सोहन सोहन मारो पूत, घरमाँ थी काढो घर्म गेलडी रे,
लातो मारी गडढा मॉरॉरे माय, पाडु ए परिसह कर्यो रे ॥८॥

ने बालक गोरी ए लीधा साथ,अम्बिका जी वारणे निसर्या रे,
नाना ऋषभजी केडमा लेई, मोटा ऋषभजी नो हाथ झालियों
रे ॥६॥

गायना गोवाल गायोंना चारण हार, कोई बतावो महियर वाटडीरे,
डावी दिशे डु गरियानी हेठ, जमणी दिशे महियर वाटडीरे ॥१०॥

आणा विना किम महियर जाऊं, भोजाईयों मेणां मारसे रे,
डावी दिशे डुंगरिया नी हेठ, उज्जड वाटे जई वसे रे ॥११॥

सुका सरोवर लहरे जाय, वाञ्झियो आंबो त्या फल्यो रे,
नाना ऋषभ जी तरसाजी थाय, मोटा ऋषभ जी भूखा
थयारे ॥१२॥

नाना ऋषभ जी ने पानी पाय, मोटा ऋषभ जी ने फल आपियारे,
मासुजी जोवे ओरडा खोल, वहु विना सुंना ओरडा रे ॥१३॥

सासुजी जोवे पड साला मांहे, पुत्र विना सूंना पालणारे,
सासुजी जोवे रसोडा मांहे, रांधी रसोइयां सेगे भरीरे ॥१४॥

सासुजी जोवे मांडला मांहे, लाडु तणा ढगला वल्यारे,
सासुजी जोवे छाबडा खोल, खाजाना खडका थयारे ॥१५॥

सोहन सोहन मारो पुत, तेडी लावो धर्म गेलडी रे,
गायाना गोवाल गायाना चारणहार, किहां वस धर्म गेलडीरे ॥१६॥

डावी दिशे डुंगरियानी हेठ, जमणी दिशे धर्म घेलडीरे,
चालो गोरा दे आपणे घेर, तुम विना सूंना ओरडा रे ॥१७॥

चालो ऋषभजी आपणे घेर, तुम विना सूंना पालणा रे,
सासुजी फिटीने मातज थाय, तोय न आऊं तुम घरे रे ॥१८॥

पाडोसन फिटीने वेनज थाय, तोय न आऊं तुम घरे रे,
फणीधर फिटीने, फूल माल थाय, तोय न आऊं तुम घरेरे ॥१९॥

कांकरो फिटीने रत्नज थाय, तोय न आऊं तुम घरे रे,
वाई रे पाडोसण तूं मारी वेन, घर भंग वायां मलियोरे ॥२०॥

वे वालक गोरीये लिधा छे साथ, अम्बिका ए जलमां भ्रुकिया रे,
वे वालक गोरी नो पडियो रे वियोग, घर जाईने हवे शुं
करुं रे ॥२१॥

सगा संवंधि रुससे रे लोग, पितराई मेणा वोलसे रे,
पछवाडे थी, पछ्यो वाई नो कन्त, तेमरी थयो काचवोरे ॥२२॥

आल दिधाना ए फल होय, तेह मरी थयो भैंसलोरे,
हीर विजय गुरु हीरलो, वीर विजय गुण गावता रे ॥२३॥

इति

---

(२६) ★ श्री वर्द्धमान तप की सज्झाय ★

प्रभु तुज शासन अति भलु, तेमा भलुं तप अेह रे,
समता भावे सेवता, जलदी लहे शिव गेह रे प्रभु. ॥१॥
षट् रस तजी भोजन करे, विगय करे षट् दूर रे,
खट पट सघली परिहरी, कर्म करे चकचूर र प्रभु. ॥२॥
पडिक्कमणा दोय टकना, पोषध व्रत उपवासरे,
नियम चितारे सर्वदा, ज्ञान ध्यान सुविलास रे प्रभु. ॥३॥
देहने दुःख देवा थकी, महा फल प्रभु भाखे रे,
खड्ग धारा ए व्रत सही, आगम अंतगड साखे रे प्रभु. ॥४॥
चौदह वर्ष अधिक होवे, ए तपनुं परिमाण रे,
देहना दंड दूरे करे, तप चिंता मणी आण रे प्रभु. ॥५॥
सुलभ बोधी जीवने, ए तप उदये आवे रे,
शासन सुर सानिध्य करे, धर्म रत्न पद पावे रे प्रभु. ॥६॥

इति

---

(२७) ★ वैराग्य पदनी सज्झाय ★

तुने संसारी सुख किम सांभले रे लो, दुःख विसर्यो गरभावासनांजो,
नव मास रह्यो तूं माता उदरे रे लो, मल मूत्र अशुचि वासमां जो
तुने संसारी सुख किम. ॥१॥
तिहां हवा पवन नहीं संचरे रे लो, नहिं सेज तलाई पलंगियो जो,
तिहां लटकी रह्यो ऊंधे शिरे रे लो, दुःख सहत अपार अनंत जो
तुने संसारी सुख. ॥२॥
ऊंठ कोडी सुई ताती करी रे लो, समकाले चुभोवे कोई राय जो,
तेथी अनंत गुणो तिहां कने रे लो, दुःख सहत विचार तव थाय जो
तुने संसारी सुख. ॥३॥
हवे प्रसवे जो मुज मायडी रे लो, तो हूं करूं तप जप ज्ञान ने ध्यान जो,
हवे सेवुं सदा जिन राजने रे लो, मूंकुं कुदेव कुगुरुने अज्ञानजो
तुने सांसारी सुख. ॥४॥
ज्यारे जन्म्यो त्यारें तूं भूलि गयो रे लो, ऊंहारह्यो करे एम पुकार जो,
तिहां लागी लालच रमवा तणी रे लो, आयु अंजली जल सम जाय जो तुने संसारी सुःख. ॥५॥
गम्यो बालक वय रमतां थका रे लो, थयो जोवन मकर ध्वज सहायजो,

प्रीति लागी तदा रमणी सुखे रे लो, पुत्र पौत्र देखी हरखाय जो
तूने. ॥६॥

थई चिंता निगाहना तेहने रे लो, धन कारण ध्यावे निश दिसजो,
पुण्य हीण थको पामे नहिं रे लो, चिंते चोरी करू के लूटुं देशजो
तुने ससारी सुख. ॥७॥

घरे कह्यु कोई माने नहीं रे लो, पड्यो पुकार करे नहीं धीरजो
तुने संसारी सुख. ॥८॥

इम काल अनन्तो वही गयोरे लो, अब चेत मूरख शिरदार जो,
जिन दास कहे जुग एहनोरे लो, मलवों छे महा मुशकिल जो
तुने सस री सुख किम साभले रे लो. ॥९॥

इति

---

(२८) ★ श्री नेम नाथ राजुल की सज्भाय ☆

※ रत्न विजय जी कृत ※

(तर्ज—चेने तो चताऊ तने रे)

नेम नेम करती नारी, कोडनी न चाली कारी,
रथ लिधो पाछो वाली रे, साहेली मोरी करमे
कुंमारा रह्या रे साहेली मोरी. ॥१॥

मन थी ते माया मूकी, म्हनी तो दीसे सेजडली,
हवे मारो कोण बेली रे साहेली. ॥२॥

चित्त मारूं चोरी लीधू, प्रीति थी पर वार कीधुं,
दुःखडो तो हमने दीधुं रे साहेली. ॥३॥

जावामां जादव राया, आठे भवनी मुकी माया.
आवो शिवा देवी जाया रे साहेली. ॥४॥

आज तो वनी उदासी, तुम दरिसन दो प्यासी,
परणवानी होती आसी रे साहेली. ॥५॥

माछली तो विण नीर, वचली तो राखी खीण,
दाडा केम जाशे पीरे रे साहेली ॥६॥

जोता नवि मली जोडी, आठे भवनी प्रीत तोडी,
वाल पणे गया छोडी रे साहेली. ॥७॥

जोवनीयो तो केम जाशे, स्वामी विना केम रहेवासे,
दुःखडा कोने कहे वासे रे साहेली. ॥८॥

देही तो दाझे छे मारी, स्वामी शुं विसारी सेली,
तमे जीत्या मने तारी रे साहेली. ॥९॥

पशुडा छोडवी लीधा, प्रभु अभय दान दीधा,
उदासी तो अमने कीधारे साहेली. ॥१०॥

राजुल विचारे एवुं, सुख हो स्वपना जेवुं,
हवे प्रभु नेम सेवुं रे साहेली. ॥११॥

मनमा वैराग्य आणी, सहसा वन गया चाली,
सयम लिधो मन वाली रे साहेली. ॥१२॥

करम नो करीने नाश, जई पहुँच्या शिवपुर वास,
रत्न विजय कहे शाबाश रे साहेली. ॥१३॥

इति

---

(२६) ★ श्री वैराग्य पद सज्झाय ★

※ वीर पूत्र आनन्द सागर सूरि कृत ※

(तज—चेतें तो चेताऊ तने रे)

हे नेमी राजुल संवाद, दिल धरी करी, स्थिर चित्त सुनो,
प्यारे रे भविक प्राणी विषय विषम विषरे भ. ॥१॥

रहे नेमी भिक्षाचरी, गया प्रभु आणा धरी, विचमे वर्षा की-
झरीरे भविक प्राणी विषय. ॥२॥

गुफा मे प्रवेश किया, शुभ ध्यान धर लिया, मानो सुरउ वर लियारे,
भविक प्राणी विषय. ॥३॥

नेमी नाथ वन्दी करी, राजूल वापिस फरी विचमे वर्षा से डरीरे,
भविक प्राणी विषय. ॥४॥

उसही गुफा में गई, भीने वस्त्र खोले सही, नग्न अवस्था रहीरे,
भविक प्राणी विषय. ॥५॥

चन्द्र सम देह जोई, रहे नेमी ध्यान खोई, संजम प्रभा को खोईरे,
भविक प्राणी विषय. ॥६॥

रहे नेमी–राजुल प्रति बोले ऐसा–व्यभिचारी वदे जैसा,
आनन्द करो हमेशा रे भविक प्राणी. ॥७॥

जोवन रस किम खोवो, हृदय से अब जोवो,
प्रेम माला तुम पोवो रे भविक प्राणी. ॥८॥

रहे नेमी–अनुपम नारी प्यारी, अमित सुखों की क्यारी,
कबुहूँ न होवे न्यारी रे, भविक प्राणी विषय. ॥९॥

अमृत रस पीवे जैसा, नारी संग सुख तैसा,
जोवे प्रेम रंग कैसा रे भविक प्राणी विषय. ॥१०॥

राजुल–विष्टादिका भराकुंड, कीड़े बिल बिले झुंड नारी सेवे कुण,
मूढ़ रे भविक प्राणी विषय. ॥११॥

रहेनेमी–राजूल तेरी बात खोटी, उमर है तेरी छोटी विषय की-
लहर मोटी रे भविक प्राणी विषय. ॥१२॥

तेरी छवी मोहन गारी, स्थान सुन्दर मनोहारी, विषय सुख करो-
जारी रे भविक प्राणी विषय. ॥१३॥

राजुल–चित्त पूरी चमकी, मानो देह दामिन दमकी,
वाणी सुणी काम जमकी रे भविक प्राणी. ॥१४॥

राजुल करुणा दिल धारी, प्रति बोधे सुख कारी,
रहे नेमी तजो नारी रे, भविक प्राणी. ॥१५॥

यादव कुल दीपे भारी, कुल की लज्जा क्यों हारी,
त्यागो पर न्यारी नारी रे भविक प्राणी. ॥१६॥

तुमरे सहोदर भ्राता, नेमी नाथ जगत्राता, अन्तर इतना-
क्यों दिल लाना रे भविक प्राणी. ॥१७॥

प्राणी परदारा सेवे, नरक में जाई रेवे, परमा धामी
दुःख देवे रे भविक प्राणी. ॥१८॥

साधनी संगम करी, भमे बहु भव फेरी, साची गत-
जानो मेरी रे भविक प्राणी विषय. ॥१९॥

मधुर वचन सुणी, बूझ्या रहे नेमी मुनि, सजम में लागी-
धुनी रे भविक प्राणी विषय. ॥२०॥

धन्य धन्य राजुल सती, धन्य निरमल मती, दूर करी-
दुर्गती रे भविक प्राणी विषय. ॥२१॥

प्रभु के निकट होकर, पापरूपी मेल धोकर, दृढ हुए-
शुद्ध होकर रे भविक प्राणी. ॥२ ॥

अनुक्रमे शिव पाया, धन धन मुनि राया, आनन्द-
करो न्याया रे भविक प्राणी. ॥२३॥

सुख दाता शुभ ध्यान, सेवो सदा भगवान,
त्रैलोक्य आधार जाण रे भविक प्राणी. ॥२४॥

मोहन संवाद गाया, आनन्द आनन्द पाया, आनन्द-
रत्नाकर ध्याया रे भविक प्राणी. ॥२५॥

इति

---

(३०) ❀ ढंढणऋषि की सज्झाय ❀

❀ श्री जिनहर्ष सूरि कृत ❀

ढंढणरिष जीने वंदणा, हुंवारी, उतकृष्टो अणगार रे, हुंवारीलाल,
अभिग्रह लीधो आकरो, हुं, लेश्युं शुद्ध आहार रे, हुं. ढं. ॥१॥

नित प्रति उठे गोचरी, हुँ, नमिले शुद्ध आहार रे, हूं,
मूल न ले अण सूझतो, हुँ, पिंजर कीधो गातरे, हुं. ढं. ॥२॥

हरि पूछे श्रीनेमने, हुं, मुनिवर सहस्र अढार रे, हुँ,
उतकृष्टो कुण एह में, हुं, मुझजे कहो कृपालरे, हूँ. ढं. ॥३॥

ढंढण अधिको दाखियो, हुँ, श्री मुख नेमि जिणंद रे, हुँ,
कृष्ण उमाह्यो वांदवा, हुं, धन जादव कुलचंदरे, हुं. ढं. ॥४॥

गलिया रे मुनिवर मिलिया, हुँ, वांद्या कृष्ण नरेस रे हुँ,
किण ही मिथ्यात्वी देखने, हुँ, आण्यो भावविसेसरे, हुं. ढं. ॥५॥

मुझ घर आवो साधुजी, हुँ, ल्यो मोदक छे सुद्धरे हु,
मुनिवर वहोरी ने पाग़ुर्या, हुँ, आया प्रभुजी ने पासरे, हु. ढं. ॥६॥

मुज लब्धे मोदक मिल्या, हुं, कहों ने तुम किरपालरे हु,
लब्धि नही वच्छ ताहरी, हुं, श्रीपति लब्धि निहालरे, हुं. ढ. ॥७॥

ए लेवो जुगतो नहीं, हुँ, चाल्या परठण काजरे हुँ,
इंट निवाहे जाइने, हुं, चूरे करम समाज रे, हुँ, ढ. ॥८॥

आणी सुधी भावना, हु, पाम्या केवल नाणरे हु,
ढंढण ऋषि मुगते गया, हुं, कहे जिन हर्ष सुजाण रे, हुं. ढ. ॥९॥

इति

(३१) ❀ अरणक मुनिनी सज्झाय ❀

❀ श्री समय सुन्दर गणि कृत ❀

अरणक मुनिवर चाल्या गौचरी, तडके दाझे सीसोजी,
पाय उभराणारे वेलू परजले तन सुकमाल मुनीसोजी अ. ॥१॥
मुख कुमलाणोरे मालती फूलज्युं, उभो गोखने हेठो जो,
खरे दुपहरे दीठो एकलो, मोह्यो माननी मीठो जी अ. ॥२॥

वयण रंगीली रे नयणे वींधियो ऋषिथंभ्यो तिण वारो जी,
दासीने कहे जाय उतावली ओ ऋषि तेडी आणो जी अ. ॥३॥

पावनकीजे ऋषिधर आंगणो, वहिरो मोदक सारोजी,
नव योवन रस कांया काई दहो सफल करो अवतारोजी अ. ॥४॥

चंद्रावदनी रे चारित चूकव्यो, सुखविलसे दिनरातो जी,
एक दिन गोखड़े रमतो सोगठ, तब दीठी निजमातो जी अ. ॥५॥

अरणक अरणक करती माय फिरे, गलिये गलिये मझारोजी,
कहि किण दीठोरे माहरो अरणलो, पूछेलोक हजारोजी अ. ॥६॥

उतरी तिंहा थीरे जननी पाय नम्यो, मन में लाज्यो तिवारोजी,
धिग् धिग् पापीरे माहराजी वने, एह में अकारज कीधोजी अ. ॥७॥
अगन धुखंतीरे शीला उपरे, अरण क अणसण की धो जी,
समय सुन्दर कहे धन ते मुनिवरुं, मनवञ्छित फल सीधोजी अ. ॥८॥

इति

---

(३२) ★ सीता सती की सज्झाय ★

* श्री हर्ष सूरि कृत *

जलत जलती मिलती गणीरे, झालो झाल अपार रे सुजाण सीता,
जाणे केसू फूलिया रे लाल, राता खैर अंगार रे सु. ॥१॥

धीज करे सीता सती रे लाल, शील तरणे परिमाण रे सु
लखमण रामखुशी थया रे लाल, निरखे राणा राय रे सु ॥२॥

स्नान करी निर्मल जले रे लाल, पावक पासे आय रे सु
ऊभी जाणे सुरंगना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे सु ॥३॥

नर नारी मिलिया घणां रे लाल, ऊभा करे हाय हाय रे सु
भस्म हुसी इण आग में रे लाल, राम करे अन्याय रे सु ॥४॥

राम विन वाछ्यो हुवे रे लाल, सुपने ही नर कोय रे सु
तो मुज अग्नि प्रजालजो रे लाल, नहीं तो पावक पाणी होय रे सु ॥५॥

इम कही पेठी आग में रे लाल, तुरत अग्नी थयो नीर रे सु
जाणे द्रह जलसुं भर्यो रे लाल, भील धरम सुधीर रे सु ॥६॥

देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती शिरदार रे सु
सीता धीजे उतरी रे लाल, साखे भरे संसार रे सु ॥७॥

रलियायत सहुको थया रे लाल, सघले थया उछरंग रे सु
लखमण राम खुशी थया रे लाल, सीता शील-सुरंग रे सु ॥८॥

जगमांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे सु
कहे जिनहर्ष मती तणा रे लाल, नितप्रणमीजे पाय रे सु ॥९॥

(३४) ★सनत्कुमार चक्री की सज्झाय★

※ कवियण की जोड ※

सुर नर प्रशंसा करे, बैठा सभा मझारो रे,
सुर वर कहे रूपे नहीं, चक्री सनत्कुमारो रे,
कर जोडी विनती करूं, सुनो सनत्कुमारो रे
कर जोडी विनती करूं ॥१॥

एक विप्र सुर छल गयो, लियो संजम भारो रे,
राव राणा ऊभा कहे, पाछा महेल पधारो रे कर. ॥२॥

हय, गय, रथ, पायक, घणा, थांरे लाख चौरासी रे,
किण धुतारे भरमाविया, त्यांथी थयारे उदासी रे कर. ॥३॥

चवदे रत्न नव निधि घरे, तेतो किस विध ऊणारे,
सहस बत्तीस नारी मिली, अन्तेउर छे दूणा रे कर. ॥४॥

कहो कंता किण कामणी, थांरी लोपी छे कारो रे,
विण अव गुण किम परिहरो, किसे दोष हमारो रे कर. ॥५॥

पुकार करूं किणसे कहूँ, कंता ! मती छोडो रे,
किसी कटकी किडी ऊपरे, छींकतां कांई दंडोरे कर. ॥६॥

तूं सासर तूं पीयरो, तूं हीज हे सुख दाई रे,
किण आश्रय अबला रहे, दोस दोनी बताई रे कर. ॥७॥

सुन्दर मन्दिर मालिया, चित्र शाला चोखी रे,
एह हिंडोला खाट छे, थांरी रीस अनोखी रे कर. ॥८॥

कुटुम्ब सहु जी जी करे, पगले भर भर लावे रे,
किण धुतारे पियु भोलव्यो, भूस खाल भरावे रे कर. ॥६॥
इम छोडी किम छूटशो, सहु पराई लाई रे,
गोद पसारी हूँ कहूँ, कंता मती छोडो जोई रे कर. ॥१०॥
हुं स घणी परण्या हुंती, किधो बोल संभालो रे,
अति अणियाली लोयणी, शुभ नजरे निहालो रे कर. ॥११॥
षट् मासे इन्द्र आविया, सहुने समभावे रे,
संसार दीसे सहु कारमो मूर्ख सहु ललचावे रे कर. ॥१२॥
राव राणा प्रति बूझिया, इन्द्र पाछा सिधाया रे,
संजम पाले साधुजी, सुर लोक उमाया रे कर. ॥१३॥
रमणी रंग पतंगनां, देखी थे मत राचो रे,
काया माया कारमी, पिंड कुंभ सरीखो काचो रे कर. ॥१४॥
वैद्य रूपे इन्द्र आविया, दृढ रह्या धीरज धारी रे,
सनत् कुमार समो नहीं कोई अन्य ब्रह्मचारी रे कर. ॥१५॥
संवत् सतरे एकावने, सागानेर मझारो रे,
करजोडी कवियण कहे, गायो सनत् कुमारो रे
कर जोडी विनती करूं ॥१६॥

इति

---

(३४) ★ सुलसा सतीनी सज्झाय ★

※ पं० कल्याण विमल कृत ※

(तर्ज—इण अवसर एक आवी जंतुकी)

धन धन सुलसा साची श्राविकाजी, जेहने निश्चल धर्मनु ध्यानरे,
समकित धारी नारी जे सती जी जेहने वीर दीयो बहु मान रे-
धन धन सुलसा साची श्राविका रे ॥१॥

एक दिन अंबड तापस प्रति बोधवा जी जंपे अेहवु वीर जिणेश रे,
नयरी राजगृही सुलसा भणी जी, कहेज्यो अमारो धर्म संदेशरे-
धन धन. ॥२॥

सांभली अंबड मनमां चित्तवेजी, धर्म इशो जी वयण रे,
एहवु कहवे जिनवर जे भणीजी, केवु रुडु दृढ समकित रयणरे
धन धन. ॥३॥

अंबड तापस परीक्षा कारणेजी, आव्यो राज गृहीं नें बार रे,
पहेलु ब्रह्मारूप विकुर्व्यु जी, वैक्रिय शक्ति तणे अनुसाररे
धन धन. ॥४॥

पहेली पोले प्रगट्यो पेखीने जी, चोमुख ब्रह्मा वंदन कोडरे,
सघली राजप्रजा सुलसा विनाजी, तेने आवी नमे कर जोड रे
धन धन. ॥५॥

बीजो दिने दक्षिण पोले जई जी, धरियो कृष्ण तणो अवताररे,
आव्या पुरजन तीहां सघला मली जी, नावी सुलसा समकित धाररे
धन धन. ॥६॥

तीजे दिवसे पश्चिम वारणे जी, घरीयु ईश्वर रूप महंत रे,
तिमहीज चोथे थई पचवीशमोजी, आवी समवसर्यो अरिहंतरे
धन धन. ॥७॥

तो पिण सुलसा नावी वांदवाजी, तेहनु जाणी समकित साच रे,
अंबड सुलसाने प्रणमी करी जी, कर जोडी कहे एहवी वात रे
धन धन. ॥८॥

धन्य तु समकित धारी शिरोमणी जी, धन्य तु विशावीश रे,
अेम प्रशंसी कहे सुलसा भणीजी, जिनजी ये कही छे धर्म आशीपरे
धन धन. ॥९॥

निश्चल समकित देखी सती तणु जी, ते पण हुओ दृढ मनमायरे.
इणि परे शांति विमल कवि रायनोजी, बुध कल्याण विमल गुण-
गायरे धन धन. ॥१०॥

इति

---

(३५) ★ अमरकुमार की सज्झाय ★

(तर्ज—रे जीव मान न कीजिये इस राग मे)

राज गृही नयणी भली, तिहा श्रेणिक राजारे,
जिन धर्मनो परिचय नहीं, मिथ्या मत मांहे ताजा रे
कर्म तणी गती सॉभलो ॥१॥

कर्म करे ते होय रे, स्वारथ ना सहु को सगा,
विण स्वारथ नहीं कोयरे, कर्म तणी गति सांभलो,- ॥२॥

राजा श्रेणिक एकदा, चित्र शाला करावे रे,
अनेक प्रकारे मंडाणी, देखताँ मन भावे रे कर्म तणी. ॥३॥

दरवाजे जो गिरी गिरी पड़े, राजा मन पस्तावे रे,
पूछे जोषी पंडितो, ब्राह्मण एम बतावे रे कर्म तणी. ॥४॥

बालक बत्तीश लक्षणो, होमीजे इण मांहे रे,
तो एह महेल पडे नहीं, इम भाखे वयण अजाणो रे कर्म. ॥५॥

राजा ढंढोरो फेरियो, जे आये बाल कुमारो रे,
तोली आपो बरोबरी, सोनईया धन सारो रे कर्म तणी. ॥६॥

ऋषभ दत्त ब्राह्मण तिहाँ वसे, भद्रा तस घरणी जाणो रे,
पुत्र चार सोहामणा, निरधनीयो पुत्र हीणो रे कर्म. ॥७॥

ऋषभदत्त कहे नार ने, आयो इक कुमारो रे,
धन आवे घर आपणे, आपण सुखिया सारो रे कर्म. ॥८॥

नारी कहे वेगे करो, आपो अमर कुमारो रे,
महारे मन अण भावतो, आंख थी करो न्यारो रे कर्म. ॥९॥

वात जणावी रायने, राजा मनमाँ हरख्यो रे,
जे मांगे ते आपी ने, लावो बाल कुमारो रे कर्म. ॥१०॥

सेवक पाछा आवीयां, धन आते मन मान्यो रे,
अमर कहे मोरी माताजी, मने मत आपी जे रे कर्म. ॥११॥

माता कहे तने सुं करु, म्हारे मन तुं मुवो रे,
काम काज करे नहीं, खावाने जोईजे सारो रे कर्म. तणी ॥१२॥

आंखे आंसु नांखतो, गोले गाल कुंमारो रे,
सांभलो मोरा तातजी, तमे मुजने राखो रे कर्म. ॥१३॥

तात कहे हूं शुं करुं, मुझने तो तूं प्यारो रे,
माता वेचे ताहरी, म्हारे नहीं उपाय रे कर्म. ॥१४॥

काको पण पासे हतो, काकी मुझने राखो रे,
काकी कहे हूँ शुं जाणु, म्हारे तू शुं लागे रे कर्म. ॥१५॥

बालक रोतो सामली, मामी फुआ ते आवे रे,
बहेन पण तीहाँ बेठी हती, किणही मुझने राखो रे कर्म, ॥१६॥

जो जो धन अनरथ करे, धन पडावे वाटे रे,
चोरी करे धन लोभीयो, मरीने दुरगती जाय रे कर्म. ॥१७॥

हाथ पकडीने लई चाल्या, कुंवर रोवण लाग्यो रे,
मुझने राजा होम से, इम बालक बहु झूरे रे कर्म. ॥१८॥

बालक ने तव लेई चाल्या, आव्या भरे बजारो रे,
लोक सहु हा हा करे, वेच्यो बाल चडाल रे कर्म. ॥१९॥

लोक तिहां बहुला मल्या, जोतो बाल कुमारो रे,
बाल कहे मुझ राखिल्यो, थाशुं दास तुम्हारो रे कर्म. ॥२०॥

शेठ कहे राखु सही, धन आपी मुह मांग्यो रे,
राये मगाव्यो होमवा, ते तो नहीं रखावे रे कर्म. ॥२१॥

बालक ने ते लई गया, राजाजी ने पास रे,
भटजी पण बेठा हता, वेद शास्त्र ना जाणो रे कर्म. ॥२२॥

भटजी ने राजा कहे, देखो बाल कुमारो रे,
बालक ने शो देखजो, काग करो महाराज रे कर्म. ॥२३॥

बालक कहे करजोडी ने, सांभलो श्री महाराज रे,
प्रजाना प्रीश्वर तुमे, मुझने किमहो मीजे रे कर्म. ॥२४॥

राजा कहे मूल्ये लियो, महारो नही अन्याय रे,
माता पिता तूंने वेचियो, में होमवा आण्यों रे कर्म. ॥२५॥

गंगोदके नवरावी ने, गले घाली फूलनी माला रे,
केसर चन्दन चरचीने, ब्राह्मण भणाता तब वेदोरे कर्म. ॥२६॥

अमर कुमर इम चिंतवे, मुझने सिखा वीयो साधु रे,
नवकार मन्त्र छे मोटको, संकट सहु टली जाशे रे कर्म. ॥२७॥

नव पद ध्यान धरतां थकां, देव सिंहासण कंप्योरे,
चाली आव्यो उतावलो, जिहां छे बाल कुमारो रे कर्म. ॥२८॥

अग्नि ज्वाला ठंडी करी, कीधो सिंहासण चंगोरे,
अमर कुंवर ने बेसारी ने, देव करे गुण ग्रामोरे कर्म. ॥२९॥

राजा ने ऊंधो नाखियो, मुखे छुट्यां लोही रे,
ब्राह्मण सहु लांबा पड्या, जाणे हुवा काष्ट रे कर्म. ॥३०॥

राज सभा अचरीज थई, ए बालक कोई मोटो रे,
पग पूजी जे एहना, तो अ मुवा उठे रे कर्म. ॥३१॥

बालके छाटो नाखियो, उठ्यो श्रेणिक राजा रे;
अचरिज दीठो मोटको, आ शुं हुओ काजो रे कर्म. ॥३२॥

ब्राह्मण पटिया देखीने, लोक कहे पाप जुओ रे.
बालहत्या करता थका, तेहना फल छे एहा रे कर्म. ॥३३॥

ब्राह्मण सहु भेला थया, देखे यम तमासो रे,
कनक सिंहासन उपरे, बेठो अमर कुमारो रे कर्म. ॥३४॥

राजा सहु परिवार शु, उठयो ते तत कालो रे,
कर जोडी कहे कुमरने, ए राजऋद्धि सहु ताहारी रे-
कर्म. ॥३५॥

अमर कहे सुणो राजजी, राज शुं नहीं मुक काजोरे,
संयम लेशुं साधुनो, माभलो श्री महाराज रे कर्म. ॥३६॥

राय लोग सहु इम कहे, धन धन बाल कुमारो रे;
भटजी पण राजी हुआ, लाज्या ते पण माहो रे, कर्म. ॥३७॥

जय जय कार हुवो घणो, धर्म तणे परसादे रे;
अमर कुमर मन साधतो, जाती स्मरण ज्ञानो रे कर्म ॥३८॥

अमर कुमार संजम लियो, करे पंच मुष्टि लोचरे;
बाहीर जाई समसाणे, काउस्सग्ग रहो शुभ ध्याने रे—
कर्म. ॥३९॥

मात पिता बहिर जईने, धन धरती माहीं धाल्यो रे;
काइक धन बेची लियो, जाणे विवाह मंडाणो रे कर्म ॥४०॥

पाखंडी घणा जाग से, भांग से धर्म ना पंथ रे ।
आगम मत मरडी करी, करशे वली ग्रंथ रे वीर. ॥५॥

चालणी नी पेरे चालशे, धर्म न जाणे लेशरे ।
आगम शाखाने ढालशे, पालशे निज उपदेश रे वीर. ॥६॥

चोर चरड बहु लाग से, बोली न पाले बोल रे ।
साधु जन सीदावशे, दुर्जन बहुला मोल रे वीर. ॥७॥

राजा प्रजाने पीडशे, हिंडशे निर्धन लोकरे ।
मँग्या न वर्षशे मेहला, मिथ्या होशे बहु थोकरे वीर. ॥८॥

संवत् उगणोसे चोहुत्तरे, होशे कलंकी राय रे ।
मात ब्राहमणी जाणीये, बाप चंडाल कहेवाय रे वीर. ॥९॥

छयासी वर्षनो आउखो, पाटली पुरमां होशे रे ।
तसु सुत दत्तनामे भलो, श्रावक कुल शुभ पोपे रे वीर. ॥१०॥

कौतुकी दाम चलावशे, चर्म तणा ते जोय रे ।
चौथ लेशे भिक्षा तणी, महा आकरा कर होय रे वीर. ॥११॥

इन्द्र अवधिये जोवतां, देखशे एह स्वरूप रे ।
द्विजरूपे आवी करी, हणशे कलंकी भूप रे वीर. ॥१२॥

दत्तने राज्य थापी करी, इन्द्र सुर लोके जाय रे ।
दत्त धर्म पाले सदा, भेटशे शत्रुंजय गिरीराज रे वीर. ॥१३॥

पृथ्वी जिन मंडित करी, पामशे, सुख अपार रे ।
देव लोके सुख भोगवे, नामे जय जय कार रे वीर. ॥१४॥

पाचमा आराने छेहडे, चतुर्विध श्री संघ होशे रे।
छठो आरो बेसता, जिन धर्म पहेलो जाशे रे वीर. ॥१५॥

बीजे अग्नि विणशसे, त्रीजे राय ने क्रोध रे।
चोथे प्रहर लोपना, छठे आरे ते होय रे वीर. ॥१६॥

इति

दोहा

छट्ठे आरे मानवी, बिलवासी मनि होय।
वीस वर्षनो आउखो, षट वर्षे गर्भज होय ॥१७॥

सहस चोरासी वर्ष पछे, भोगवशे मनि कर्म।
तीर्थंकर होशे भलो, कोणिक जीव सुधर्म ॥१८॥

तस गणधर अति सुन्दरु, कुमारपाल भूपाल।
आगम वाणी जोयने, रचिया रयण रसाल ॥१९॥

पंचम आराना भाव ए, आगमे भाख्या वीर।
ग्रंथ बोल विचार करया, गामज जो मनि धीर ॥२०॥

भणताँ समकित संपजे, सुणता मंगल माल।
जिन हर्ष रुडी जोडण, भाख्या रयण रसाल ॥२१॥

इति

(३७) ★ श्री छठा आरानी सज्झाय ★

* कान्ति विजयजी कृत *

(तर्ज—धर्म मंगल माही)

छट्ठो आरो एवो आवसे, जाणशे जिनवर देव ।
पृथ्वीमां प्रलय थाशो, वरषशे विरुवा मेह रे
जीव जिन धर्म कीजिये ॥१॥
तावडे डूँगर तरड से, वायु उडी उडी जाय ।
त्यां प्रभु गोतम पूछियो, पृथ्वी वीजे केम थाय रे जीव. ॥२॥
वैताढ्य गिरी नामे शाश्वती, गंगा सिंधु नदी नाम ।
तेणे वेके बहुं मेखडा, बहोत्तेर वीलनी खाण रे जीव. ॥३॥
सर्व मनुष्य तिहाँ रहसे, मनखा केरी खाण ।
सोल वरसनुं आऊखो, मुँडा हाथनी काय रे जीव. ॥४॥
छः वरसनी स्त्री गर्भ धरे, दुःखी महा दुःखी थाय ।
राते चरवा निकले, दिवसे विल मांहे जाय रे जीव. ॥५॥
सर्व भक्षी सर्व मांछलां, मरी मरी दुर्गती जाय ।
नर नारी हशे बहुँ, दुरगंधित सकाय रे जीव. ॥६॥
प्रभु बालक परे विनऊं, छठे आरे जन्म निवार ।
कान्ति विजय कवि रायनो, सेव भणे सुख माल रे जीव. ॥७॥

इति

---

(३८) ★ श्री सिद्धनी सज्झाय ★

* नय सागर जी कृत *

श्री गोतम पृच्छा करे, विनय करी शीप नमाय हो प्रभु जी ।
अविचल स्थानक मैं सुण्यो, कृपा करी मोय वतायो हो प्रभु जी
शिवपुर नगर सोहा मणो ॥१॥

आठ कर्म अलगा करी, सार्या आतम काज हो प्रभु जी ।
छुट्या संसारना दुःख थकी, एने रहेवा नो कुण ठाम हो प्रभु जी
शिवपुर० ॥२॥

वीर कहे उर्ध्वलोकमां, मुगति शिला एण ठाम हो गोतम ।
स्वर्ग छव्वीसने उपरे, तेहना बारे नाम हो गोतम
शिवपुर० ॥३॥

लाख पिस्ता लीसा जोयणे, लांबी पहोली जाण हो गोतम ।
आठ जोजन जाडी वच्चे, छेडे पातली तंत हो गोतम
शिवपुर० ॥४॥

उज्ज्वल हार मोती तणों, गाय दुध शरव वखाण हो गोतम ।
एहथी उजली अति घणी, सम चोरस संस्थान हो गोतम
शिवपुर० ॥५॥

स्फटिक रतन सम निरमली, सुँवाली अत्यन्त वखाण हो गोतम ।
सिद्ध शिला ओलंगी गया, अधर रह्या छे निराज हो गोतम
शिवपुर० ॥६॥

सिद्ध शिला ओलंगी गया, अर्थ रह्या छे विराज हो गोतम ।
अलोक शु' जई अड्या, सार्या अन्तिम काज हो गोतम
शिवपुर० ॥७॥

जिहाँ जन्म नहीं मरण नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो गोतम ।
शत्रु नहीं मित्र नहीं, नहीं संयोग वियोग हो गोतम
शिवपुर० ॥८॥

भूख नहीं तृषा नहीं, नहीं हरख नहीं शोक हो गोतम ।
कर्म नहीं काया नहीं, नहीं विषय रस भोग हो गोतम
शिवपुर० ॥९॥

शब्द रूप रस गंध नहीं, नहीं फरस नहीं वेद हो गोतम ।
बोले नहीं चाले नहीं, मौन जिहां नहीं खेद हो गोतम
शिवपुर० ॥१०॥

गाम नगर तिहां को नहीं, नहीं वस्ती नहीं उजाड हो गोतम ।
काल सुकाल वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथीवार हो गोतम
शिवपुर० ॥११॥

राजा नहीं प्रजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास हो गोतम ।
मुगतिमां गुरु चेला नहीं, नहीं लहोड वडाई वास हो गोतम
शिवपुर० ॥१२॥

अनुपम सुखमां झीली रह्या, अरूपी ज्योति प्रकाश हो गोतम ।
सघला ने सुख सारिखो, सहु कोने अविचल वास हो गोतम
शिवपुर० ॥१३॥

केवल ज्ञान सहित छे, केवल दरिशन पास हो गोतम।
क्षायिक समकित दीपतो, कदियन होवे उदास हो गोतम
शिवपुर० ॥१४॥

ओर जग्या रूधे नही, ज्योतीमा ज्योति समाय हो गोतम।
अनन्त सिद्ध मुगति गया, फेर अनन्ता जाय हो गोतम।
शिवपुर० ॥१५॥

ए अर्थ रूपी सिद्ध कोई ओलखे, आणी मन वैराग्य हो गोतम।
शिव सुन्दरी सहेजे वरे, "नय" पामे सुख अथाग हो गोतम
शिवपुर० ॥१६॥

इति

---

(३६) ★ श्री गोतम स्वामी की सज्झाय ☆

※ करण सागर कृत ※

(तर्ज—सुग्रीव नयर सोहामणो जी)

समव सरण सिहासने जी, वीरजी करे रे वखाण।
दशमा उत्तराध्ययन मे जी, दीये उपदेश सुजाण
समय गोयम मकर प्रमाद
वीर जिनेश्वर सीखवे जी, परिहर मद विखवाद समय. ॥१॥

जिम तरु पंडुर पादडो जी, पडतां न लागे जी वार,
तिम ऐ माणस जीवडो जी, स्थिर न रहे संसार समय. ॥२॥

डाभ अणी जिम ओसनो जी, क्षण एक रहे जलबिंद ।
तिम ए चंचल जीवडो जी, न रहे इन्द्र नरीन्द्र समय. ॥३॥

सूक्ष्म निगोद भमी करीजी, राशि चढ्यो व्यवहार ।
लाख चोरासी जीव योनि मांजी, लाध्यो नर भव सार–
समय. ॥४॥

शरीर जराये जरजयु जी, शिर पर पीलाजी केश ।
इन्द्रीय बल हीणा पड्याजी, पग पग पेखे कलेश समय. ॥५॥

भव सायर तरवा भणी जी, चारित्र प्रवहण मूल ।
तप जप संयम आकरा जी, मोक्ष नगर छे दूर समय. ॥६॥

इमनि सुणी प्रभु देशना जी, गणधर थया सावधान ।
पाप पडल पाछा पड्या जी, पाम्या केवल ज्ञान समय. ॥७॥

गोतमनां गुण गावतां जी, घर २ संपत्ति क्रोड ।
वाचक श्री "करण" इम गणे जी, वन्दु बेकर जोड समय
गोयम मकर प्रमाद ॥८॥

(४०) ★ श्री मदन मंजूषानी सज्झाय ★

*** वीर विजय जी कृत ***

(तज—भंवरे उतारो राजा)

वहाणमा रूवे रे मदन मंजुषा, करती अतिशय विलाप ।
पियुजी पियुजी ए जंपे घणुं, धरती मनमा संताप
व्हाण मां रोवे मदन. ॥१॥

मध्य दरीये नहाण चलावता, उदय सर्वे थया आज ।
पडता पियु आ समुद्रमा, अनला थई आपो आप व्हाण मा ॥२॥

खरो वेरी थयो अभागियो, जेणे कीधो कालो केर ।
निराधार मुकी ते मुझने, लीधु किहाँ कर्मनो वेर ॥ व्हाण. ॥३॥

मुझ रूपे ते मोह्यो पापियो, कुबुद्धि नो करनार ।
काली राते मुझ कथ ने, नाख्यो समुद्र मोझार व्हाण मां ॥४॥

ऊंचो आभो छे नीचे नीर छे, अंधारी छे तेमज रात ।
नजरे न देखु म्हारा नाथ ने, पाम्या समुद्र निघात
व्हाण मा. ॥५॥

दूर रह्या पियर सासरा, खूटी गैठो जन्म दुवार ।
प्रभुजी विना मारो कोई नथी, छो तुम जगनाथ आधार
व्हाण मा. ॥६॥

कुशल होजो मुझ कथ ने, आजनी छे अशराल ।
वेला पडी पिण दुःखनी, हूं छु अज्ञानीज बाल व्हाण मा. ॥७॥

अन्न जल देवा ते मुझने, छो प्रभु दीन दयाल ।
ध्यान धरूं जिन राजनुं, छे प्रभुजी नी छाय
व्हाला मां. ॥८॥

हीर विजय गुरू हीरलो, वीर विजय गुण गाय ।
विनय विजय गुरु राजियो, तेहना वन्दुं नित्य पाय
व्हाला मां. ॥९॥

इति

---

(४१) ★ श्री जय भूषण मुनि की सज्झाय ★

※ ज्ञान विमल कृत ※

(तर्ज—नमो नमो खंदक महामुनि.)

नमो नमो जय भूषण मुनि, दूषण नहीं लगार रे ।
शोषण भवजल सिंधुना, पोषण पुन्य प्रचार रे नमो. ॥१॥

कीर्ति भूषण कुल अंबरी, भासण भाणु समान रे ।
कोशंबी नयरी पति, माय स्वयंप्रभा नाम रे नमो. ॥२॥

परणी ने निज घर आवता, सखा सवि परिवार रे ।
जयंधर केवली वांदीया, निसुणी देशना सार रे नमो. ॥३॥

पूरव भवनी मातडी, परखी ते गुण गेह रे ।
जयसुन्दरी ये स्वयंवरा, आणि अधिक स्नेह रे नमो. ॥४॥
ते निगुणी ने पामियो, जातीस्मरण तेह रे ।
संयम ले सहस पुरुष शु, वनिता माथे अछेह रे नमो. ॥५॥
एक अनन्त पखे होई, भरन्थ संसार रे ।
इण परि भावना भावतां, विचरे पूरव धार रे नमो. ॥६॥
घाती कर्म क्षये उपन्यु, केवल ज्ञान अनन्तरे ।
इम उपगार करे घणा, सेवे सुर नर सन्तरे नमो. ॥७॥
इम विरमे जे विषयथी, विष सम कटु फल जाणी रे ।
ज्ञान विमल चढती कला, थाये ते भवि प्राणी रे नमो. ॥८॥



(४२) ★ नागीला की सज्झाय ★

✲ गणि समय सुन्दर जी म. कृत ✲

भवदेव भाई घर आवियारे, प्रति बोधवा मुनि राज रे ।
हाथमा तें लीधो घृतनु पातर रे, भाई मने आगे गे वलावरे
नवीरे परण्याथा गोरी नागिलारे,

सालें माहरा हैडारे माय रे, खटके मारा कालजारे मायरे
नवीरे परणयाथा. ॥१॥

इम कही गुरूजी पासे आवियारे, गुरूजी पूछे दिज्ञाना कही भावरे।
लाजे नाकारों तेणे नवि कर्यो रे, दीक्षा लिधी भाईनी पास रे॥
नवीरे परणयाथा. ॥२॥

वारे वरस संजम मां रह्या रे, हैये धरता नागीला नो ध्यान रे।
हा ! हा ! मूर्ख में आ शुं कर्यो रे, नागीला तजी ते जीवन प्राणरे
नवीरे परणयाता. ॥३॥

मात–पिता एहने नहीं रे, एकली ते अवला नार रे।
मुझ ऊपरे अनुरागिणी रे, हवे करवी नेहनी संभाल रे
नविरे परणयाथा. ॥४॥

शशिवयणी मृगालोचनी रे, विलविलती मेली घरनी नार रे।
सोल वरसनी सा सुन्दरी रे, सुन्दर तनु सकुमार रे
नविरे परणयाथा. ॥५॥

उमर पुष्प तजी करीरे, अलख ग्रहीं कर माहीं रे।
पाम्या सुख में तजी करीरे, पडीयुं दुःख जंजाल रे
नविरे परणयाथा. ॥६॥

भवदेव भोग चित्त आवियोरे, अण ओलखी पूछे घरनी नार रे।
कोइ ए दिठी गोरी नागीलारे, अमे आव्या व्रत छोडण हार रे
नविरे परणयाथा. ॥७॥

नारी कहे सुणो साधुजी रे, चम्यो न लिये कोई आहार रे ।
हस्ती चढीने खर पर कोण चढे रे, तमे छो ज्ञानना भण्डार रे
नविते परण्याथा. ॥८॥

उदकीय चम्यो आहार जे करे रे, ते नवि मानवनो आचार रे ।
तमे जे घर घरणी तजी रे, शीह करीये तेहनी संभाल रे
नविते परण्याथा. ॥६॥

धन्य सुबाहु धन्य शालीभद्रजी रे, धन २ मेघ कुमार रे ।
नारी तजी ने सजम लियो रे, धन धन्नो अणगार रे
नविरे परण्याथा. ॥१०॥

देवकी सुत सुलसा तणा रे, नेमतणी सुणी वात रे ।
बत्तीस २ प्रिया तणो रे, परिहर्‌यो भोग विलास रे
नविरे परण्याथा. ॥११॥

नरकनी खाण नारी अछेरे, नरकनी देवण हार रे ।
ते तमे तजो मुनि राजवी रे, जिम पामो भव जल पार रे ।
नविरे परण्याथा. ॥१२॥

नागीलाए नाथ ने समजावियोरे, पछी लिधो सजम भार रे ।
भवदेव देवलोके गया रे, हुआ हुआ शिवकुमार रे
नविरे परण्याथा. ॥१३॥

पाचमें भवे जंबु स्वामी जी रे, परण्या २ पद्मणी नार रे ।
कोडी नवाणु कचन लावीया रे, एछे सिद्धान्त नो पाठ रे
नवि रे परण्याथा. ॥१४॥

प्रभावक साथे चोर पांचसो रे, पद्मणी आठे नार रे ।
कर्म खपावी मुक्ति गया रे, समय सुन्दर गुण गाय रे
नविते परण्याथा गोरी नागीला. ॥१५॥

इति

---

(४३) ★ देवकी ना छ पुत्रों नी सज्झाय ★

※ धर्मसिंह मुनि कृत ※

मनडुं ते मोह्यु मुनिवर माहरू रे, देवकी कहे सुविचार रे ।
त्रीजे ते वार आव्या तुमेरे, महारो सफल कर्यो अवतार रे
मनडुं ते. ॥१॥

साधु कहे सुण देवकी रे, अमो छीये छए भ्रात रे ।
त्रीहिं संघाड़े घर ताहरे रे, अमे लेवा आव्या आहारनी दातरे
मनडु ते. ॥२॥

सरखी वय सरखी कलारे, सरखा रूप शरीर रे ।
तन वान शोभे सारिखारे, जे देखी भूली भान रे
मनडु ते. ॥३॥

पूर्व स्नेह धरी देवकी रे, पूछो साधुनी वात रे ।
कोण गामे वसता तुमेरे, कोण पिता कोण मात रे
मनड़ु ते. ॥४॥

भद्दिल पुरे वसे पिता रे, नाम गाथापति सुलसा नीम रे ।
नेम जिणन्द वाणी सुणी रे, पाम्या वैराग्य विख्यात रे
मनड़ु ते. ॥५॥

बत्तीस कोडी सोवन तजी रे, तजी बत्तीसे नार रे ।
एक दिन संयम लियो रे, जाणी अथिर संसार रे
मनड़ु ते. ॥६॥

पूर्व कर्म ने टालवा रे, अमे तप धर्यो छठ उदार रे ।
आज ते छठने पारणेरे, आव्या नगर मोझार रे—
मनड़ु ते. ॥७॥

माना मोटा बहु घरे रे, फरतां आव्या तुझ आवास रे ।
एम कही साधु वल्यारे, चाल्या नेम जिणंदनी पास रे—
मनड़ु ते. ॥८॥

साधु वचन सुणी देवकी रे, चेत्या हृदय मोझार रे ।
बाल पणे मुझने कह्यु रे, निमित्त पोलासपूरि सार रे—
मनड़ु ते. ॥९॥

आठ पुत्र ताहरे थशेरे, तेह्वा नहीं देवे जन्म अनेरी मात रे।
आ भरत क्षेत्र मध्ये जाणजेरे, छेतो झुठी निमित्तनी वात रे
मनडुं ते. ॥१०॥

ए संशय नेम जिणंद टालशेरे, जई पुछुं प्रश्न उदार रे।
रथमां वेशी चाल्या देवकी रे, जई वांद्या नेमिजिणंदना पाय रे-
मनडुं ते. ॥११॥

तव नेमि जिणन्द कहे देवकी रे, सुणो पुत्रनी वात रे।
छ अणगार देखी तिहां रे, तव उपन्यो स्नेह विख्यात रे—
मनडुं ते. ॥१२॥

देवकी ए छय सुत ताहारे रे, तें धर्या उदर नव मास रे।
हरिणैगमेषी देवता रे, जन्मता हर्या तुझ पांस रे—
मनहुं ते. ॥१३॥

सुलसानी पासे ठव्यारे, पुरी सुलशानी आश रे।
पुण्य प्रभावे ते पामीयारे. संसारना भोग विलाश रे—
मनडुं ते. ॥१४॥

नेमि जिणंद वाणी सुणीरे, पामी हर्ष उल्लास रे।
वली छ अणगार जई वंदियारे, नीरखे नेह भरी तास रे—
मनडुं ते. ॥१५॥

पहोनो प्रगट्यो तिहा कनेरे, विकस्या रोम कूप देहरे।
अनिमेप नयणे निरखीयारे, माताने सुखनीवास रे—
मनड ते. ॥१६॥

वांदी निजघर आविया रे, होंश पुत्र रमाडवानी घणी आश रे।
कृष्णजी ए देव आराधियो रे, माताने सुखनी वास रे—
मनड ते. ॥१७॥

गंज सुकुमार खेलावती रे, पूरी देवकी नी आश रे।
कर्म खपावी मुक्ते गया रे, छः अणगार सिद्धवास रे
मनड ते. ॥१८॥

साधु तणा गुण गावतां रे, सफल होवे निज आश रे।
धर्मसिंह मुनिवर कहे रे, सुणता लीला विलास रे
मनड ते. ॥१९॥

---

(४४) ★ श्री महावीर स्वामी की सज्झाय ★

(तर्ज—धारणी मनावे रे मेघ कुमार ने)

आधारज हुतो रे एक मुनि ताहरो रे, हवे कोण करसे रे सार।
प्रीतडली हुंती रे पहला भवतणी रे, ते किम विसरी रे जाय
आधारज. ॥१॥

मुझने मेल्यो रे टलवलतो यहाँ रे, नथी कोई आंशु लूँ कण हार।
गोतम कहीने कोण बोलावसे रे, कोण करसे मारी सार
आधार ज. ॥२॥

अन्तर जामी रे अण घटकुं कर्यो रे, मुझने मोकलीयो गाम।
अन्त काले रे हूं समज्यो लही रे, जे छे देशे मुझने अ.म
आधार ज. ॥३॥

गई हवे शोभा रे भरतना लोकनी रे, हूँ अज्ञानी रह्यो छुं आज।
कुमति मिथ्यात्वी रे जिम तिम बोलशे रे, कुण राखसे मोरी लाज
आधार ज. ॥४॥

वली शूलपाणी रे अज्ञानी घणो रे, दीधुं तुजने रे दुःख।
करुणा आणी रे तेहना उपरे रे, आप्यु वहुलो रे सुख
आधार ज. ॥५॥

जे अईमतोरे बालक आवियो रे, रमतो जलश्यु रे नेह।
केवल आपी रे आप समो कियो रे, एवडो सो तस स्नेह
आधार ज. ॥६॥

जे तुम चरणे आवि डंसियोरे, किधो तुजने उपसर्ग।
समता आणि रे ते चंड कोशिया रे, पाम्यों आठमो स्वर्ग
आधार ज. ॥७॥

चन्दन बाला रे अडदना बाकुलारे, पडिलाभ्या तुजने स्वामी।
तेहने किधी रे साध्वी मां वडीरे, पहोंचाडी शिवधाम
आधार ज. ॥८॥

दिन व्यासीनारे माता पिता हुआ रे, ब्राह्मण ब्राह्मणी दोय।
शिवपुर सगीरे तेहने ते कयो रे, मिथ्या मल तस धोय
आधार ज. ॥९॥

अर्जुनमाली रे जे महापातकी रे, मनुष्य नो करतो संहार।
ते पापी ने प्रभु तमें उद्धर्यो रे, कीधो घणो सुपसाय
आधार ज. ॥१०॥

जे जलचरी हुतो देडको रे, ते तुम ध्यान सोहाय।
सोहमवासी रे ते सुरवर कियो रे, समकित करे सुपसाय
आधार ज. ॥११॥

अधम उद्धार्या रे एहवा घणा रे, कहुं तस केतारे नाम।
माहारे तारा नामनो आशरो रे, ते मुझ फलसे रे काम
आधार ज. ॥१२॥

हवे मैं जाण्यों रे पद वीतराग तोरे, जो तें न धर्यो रे राग।
राग गयेथी रे गुण प्रगट्या सवेरे, ते तुज वाणी महा भाग
आधार ज. ॥१३॥

सवेग रगीरे क्षपक श्रेणीये चढियो रे, करतो गुणनो जमान।
केवल पाम्या लोका लोकना रे, दीठा सघला रे भाव
आधार ज, १४॥

त्यां इन्द्र आवी रे जिनपद थापियो रे, देशना दिये अमृत धार।
पर्षदा बूझी रे आतम रंग थीरे, वरिया शिवपद सार
आधार ज. ॥१५॥

इति

---

(४५) ❀ पडिक्कमणनां फलनी सज्झाय ❀

❀ जश विजय जी कृत ❀

गोतम पूछे श्री महावीर नेरे, भाखो भाखो प्रभुजी संबन्ध रे।
प्रतिक्रमण थी स्यूं फल पामिये रे, शुं शुं थाये प्राणी ने बन्ध रे
गोतम. ॥१॥

सांभल गोतम जे कहूं पुन्यथी रे, करणी करता पुन्य नो बंध रे।
पुण्य थी बीजो अधिको को नहीं रे, जेह थी थाये सुख संबंध रे
गोतम. ॥२॥

इच्छा पडिकमणो करी पामिये रे, प्राणी पुन्यनो बन्ध रे।
पुण्यनी करणी जे उवेखशे रे, पर भव थाशे अंधो अंधरे
गोतम. ॥३॥

पांच हजार ने ऊपर पांच सेरे, द्रव्य खरची लखावे जेहरे ।
जीवाभिगम भगवई पन्नवणा रे, मूके भंडारे पुण्यना रेह रे
गोतम. ॥४॥

पांच हजारे ने ऊपर पांचसेरे, गायो गर्भवती जेहरे ।
तेहने अभय दान देतां थका रे, मुहपती आप्यानुं पुण्य एह रे
गोतम. ॥५॥

दस हजार गोकुल गायों तणो रे, एकेको दश हजार प्रमाण रे ।
तेहने अभय दान देतां थकारे, उपजे प्राणी ने निर्वाण रे
गोतम. ॥६॥

तेथी अधिको उत्तमफल पामियेरे, परने उपदेश दीधानुं जाणरे ।
उपदेश थकी संसारी तरे रे, उपदेशे पामे परिमल नाण रे
गोतम. ॥७॥

श्री जिन मन्दिर अभिनव शोभतारे, शिखरनुं खरच करावे जेहरे ।
एकेको मण्डप बावन चैत्यनो रे, चरवलो आप्यानो पुन्य एहरे
गोतम. ॥८॥

मास खमणनी तपस्या करे रे, पंजर करावे जेहरे ।
एहवा कोड पंजर करता थका रे, कावलियुं आप्यानुं फल एहरे
गोतम. ॥९॥

महस अठयामी दानशाला तणो रे, उपजे प्राणीने पुन्य जधरे ।
स्वामी सगाते गुरु स्थान करे; अवंधे थाने पुण्यनो बन्ध रे
गोतम. ॥१०॥

श्रीजिन प्रतिमा सोवनमय करे रे, सहस अठ्यासी नो प्रमाणरे ।
एकेकी प्रतिमा पांचशे धनुपनीरे, इरियावही पडिक्कमतां फल
जाणरे गोतम. ॥११॥

आवश्यक पंजर ग्रन्थमाँ रे, भाख्यो ए प्रतिक्रमणानो संबन्ध रे ।
जीवा भगवई आवश्यक जोई नेरे, स्वमुख भाखे वीर जिणन्द रे
गोतम. ॥१२॥

वाचक जश कहे श्रद्धा धरो रे, पाले शुद्ध पडिक्कमणानो-
व्यवहार रे ।
अनुत्तर समसुख पामे मोटकुं रे, पामशे भविजन भवजल पार रे
गोतम पूछे श्री महावीर ने रे. ॥१३॥

---

(४६) ★ सोलह स्वप्न की सज्झाय ★

सुपन देखी पहेलडे, भांगी छे कल्पवृक्ष नी डाल रे ।
राजा संयम लेशे नहीं, दुःषम पंचम काल रे, चन्द्रगुप्त.
राजा सुणो ॥१॥

अकाले सुरज आथमे, तेनो श्यो विस्तार रे ।
जन्म्यों ते पंचम कालमा, तेने केवल नवि होसे रे
चन्द्रगुप्त. ॥२॥

तीजे चन्द्रमा चालणी, तेनो श्यों विस्तार रे ।
समाचारी जुदी जुदी हशे, वाटे वाटे धर्म न होशे रे
चन्द्रगुप्त. ॥३॥

भूत भूतादि देख्या नाचता, चोथो स्वप्नानो विस्तार रे ।
कुदेव कुगुरु कुधर्मनी, मान्यता घणी होंशे रे चन्द्रगुप्त. ॥४॥

नाग दीठो बारे फणो, तेनो श्यों विस्तार रे ।
वरस थोडाने आन्तरे, होशे वार दुकाल रे चन्द्रगुप्त. ॥५॥

देव विमान छट्ठे वर्या, तेनो श्यो विस्तार रे ।
विद्याने जघा चारणी, लब्धि ते विछेद होशे रे चन्द्रगुप्त. ॥६॥

उग्यू ते उकरडा मध्ये, सातमे कमल विमासी रे ।
एक नही ते सर्वे वर्णीया, जूदा जूदा मन होशे रे चन्द्रगुप्त. ॥७॥

थापना थापसे आप आपणी, पछी विराधक घणा होशे रे ।
उच्छेद होशे जैन धर्मनो, वच्चे मिथ्यात्व घोर अँधार रे
चन्द्रगुप्त. ॥८॥

सूका सरोवर दीठात्रण दिशे, दक्षिण दिशे थोला पानी रे ।
त्रण दिशे धर्म होशे नहीं, दक्षिण दिशे धर्म होशे रे
चन्द्रगुप्त. ॥९॥

सोनानी थाली मध्ये, कुत्तरडा खावे खीर रे ।
ऊंचतणी रे लक्ष्मी, नीच तणे घर होशे रे चन्द्रगुप्त. ॥१०॥

समुद्र मर्यादा मुकी चार में, तेनो श्यो विस्तार रे ।
शिष्य चेलाने पुत्र पुत्रीयाँ, नही राखे मर्यादा लगार रे
चन्द्रगुप्त. ॥११॥

हाथी माथे रे बैठो वानरो, तेनो श्यो विस्तार रे ।
मलेच्छी राजा ऊंचा होशे, असली हिन्दु हेठा हाथ रे
चन्द्रगुप्त. ॥१२॥

राजकुमर चढियो पोठीये, तेनो श्यो विस्तार रे ।
ऊंचो ते जैन धर्म छाडीने, राजा नीच धर्म आदरशे रे
चन्द्रगुप्त. ॥१३॥

रत्न झांखा रे दीठा तेरमें, तेनो श्यो विस्तार रे ।
भरत क्षेत्रना साधु साध्वी, (तेने) हेत मेलाव थोडा होशे रे ।
चन्द्रगुप्त. ॥१४॥

महारथे जूत्या वांछडा, तेनो श्यो विस्तार रे ।
बालक धर्म करसे सदा, बूढा परमादी पड्या रहेशे रे
चन्द्रगुप्त. ॥१५॥

हाथी लड़ेरे मावत विना, तेनो श्यो निस्तार रे।
वरस थोडा ने आतरे, माग्या नहीं वरसे मेह रे चन्द्रगुप्त. ॥१६॥

व्यवहार सुत्रनी चूलिका मध्ये, भद्रबाहु मुनि इम भांखे रे।
सोल सुपन नो अर्थ एहवो, सांभलो राय सुधीर रे
चन्द्रगुप्त राजा सुणो. ॥१७॥

---

(४७) ★ आठ मदनी सज्झाय ★

ॐ मान विजय जी कृत ॐ

मद आठ महामुनि वारिये, जे दुर्गतिना दातार रे।
श्री वीर जिनेश्वर उपदिशे, भाखे सोहम गणधार रे
मद आठ. ॥१॥

हाजी—जातीनो मद पहलो कह्यो, पूर्वे हरीकेशिये कीधो रे।
चंडाल तणे कुल ऊपन्यो, तपथी सवी कारज सिद्धो रे मद. ॥२॥

वलश्री नामे भलोजी, मृगापुत्र प्रसिद्ध ।
माता ने नामे करी जो, गुण निष्फन्न तस दीध हो मावडी. ॥२॥

भणी गणी पण्डित थयोजी, यौवन वय जब आय ।
सुन्दर मन्दिर कराविया जी, परणावे निज माय हो मा. ॥३॥

तन जोवन रुपे सारखीजी, परण्या बत्रीश नार ।
पंच विषय सुख भोगवेजी नाटकना घमकार हो
मावडी तण. ॥४॥

रत्न जडित सोहामणाजी, अद्भूत ऊंचा आवास ।
देव दोगुंदुकनी परेजी, विलशे लीला विलाश हो मा. ॥५॥

एक दिन बैठा मालियेजी, नारी ने परिवार ।
मस्तक पग दाझे घणांजी, दीठो श्री अणगार हो मावडी. ॥६॥

मुनि देखी भव सांभर्योजी, वसियो मन वैराग हो ।
ऊतर्यो आमण दुमणोजी, लागो जननी ने पाय हो मा. ॥७॥

पाय लागीने विनवेजी, सांभल मोरी रे माय ।
नटवानी परे नाचियोजी, लख चोरासीमाय हो मावडी. ॥८॥

पृथ्वी पानी तेऊवली जी, चोथी वायु रे काय ।
जन्म मरण दुःख भोगव्याजी, तेम वनस्पति काय हो मा. ॥९॥

विकलेन्द्री तिर्यंच माझी, मनुष्य देव मोझार ।
धर्म विहुणो आतमां जी, रडवडियो संसार हो मानडी. ॥१०॥

साते नरके हुं भम्योजी, अनन्त अनंती रे वार ।
छेदन भेदन त्या सह्या जी, कहता न आवे पार हो मा. ॥११॥

सायरना जलथी घणाजी, मे कीधा मायाना थान ।
तृप्ति न पाम्यो आत्मा जी, अधिक आरोग्या धाम हो
मानडी. ॥१२॥

चारित्र चिन्तामणी समोजी, अधिक मारे मन थाय ।
तन धन जोबन कारमोजी, क्षण क्षण तुटे रे आय हो
मानडी. ॥१३॥

माता अनुमती दीजिये जी, लेशुं संजम धार ।
पच रतन मुझ सोभर्या जी, करशु तेहनी सार हो मा. ॥१४॥

वयण सुणी बेटा तणाजी, जननी धरणी ढलंत ।
चित वल्यो तव आणंदेजी, नयणे नीर भरन्त गे जाया,
तुझ विण घडीमन जाया. ॥१५॥

जननी माता इम भणेजी, सुण सुण मोग रे पूत ।
मन मोहन नूं वालहोजी, कांई मागे घर सूतरे जाया. ॥१६॥

मोटा मन्दिर मालीयाजी, नारियों ने परिवार ।
तुझ विन सहु अलखामणीजी, किम जावे दिन रात रे
जाया. ॥१७॥

नव महीना उदरे धर्योजी, जन्म तणा दुःख दीठ ।
कनक कचोले पोषियो जी, हवे हूँ थई अनीठ रे जाया. ॥१८॥

योवन वय नारी तणाजी, भोगवो वहुलारे भोग ।
योवन वय बीत्यां पछीजी, आदर जो तप योग रे जाया. ॥१९॥

पड्यो अखाडी जिम हाथियोजी, मृगलो पड्योरे पास ।
पंखी पडीयो जिम पिंजरे जी, तेम कुंवर घर वास रे
जाया. ॥२०॥

घर घर भिक्षा मांगवीजी, सरस निरस हो आहार ।
चारित्र छे वच्छ दोहिलोजी, जिम खांडा नी धार रे जाया. ॥२१॥

पंच महाव्रत पालवाजी, पालवा पंच आचार ।
दोष बयालीस टालीनेजी, लेवो सूझतो आहार रे जाया. ॥२२॥

मीण दांते लोहमय चणाजी, किम चावीश कुमार ।
वेलु समोवड कोलियोजी, जिने कह्यो संयम भार रे जाया. ॥२३॥

पलंग तलाई पोढताजी, करवो भूमि संथार ।
कनक कंचोला छाडवाजी, काचलिये विवहार रे जाया. ॥२४॥

मस्तके लोच करावनाजी, तूं सुकुमार अपार।
बावीस परीषह जीतवाजी, करवो उग्र विहार रे जाया. ॥२५॥

पाय उभाणे चालवोजी, शियाले शीतल वाय।
चोमासो वत्स दोहिलोजी, ऊनाले लूह वायरे जाया. ॥२६॥

गगा सायर आदे करीजी, उपमा देखाडी रे माय।
दुकर चारित्र दाखियोजी, कायर पुरुष ने थायरे जाया. ॥२७॥

कुमर भणे सुण मावडी जी, संजम सुख भण्डार।
चोदहराज नगरी तणाजी, फेरा टालन हार हो मावडी. ॥२८॥

अनुमती तो आपशुंजी, कुण करसे तुझसार।
रोग आवी जब लागसे जी, कोण करशे ओषध उपचार रे
जाया. ॥२९॥

वनमा रहे छे मृगलोजी, कुण करे तेनी सार।
वन मृगलानी परे चालशु जी, हमे एकलडा निरधार
जाया. ॥३०॥

अनुमती लीधी मायनीजी, आव्या वन मोझार।
पच महाव्रत आदयोजी, पाले संयम भार मुनिश्वर
धन धन तुमे अवतार. ॥३१॥

माय मोकलावीने वलीजी, समरथ साहस धीर।
श्री गुरु चरणे जई नम्योजी, दिक्षा दो श्री वीर
मुनीश्वर. ॥३२॥

सुरनर किंनर बहु मल्याजी, ओच्छवनो नहीं पार ।
सर्व विरति जेणे आदरीजी, लह्यो भवजल पार
मुनीश्वर. ॥३३॥

मृगा पुत्र ऋषि राजियोजी, षट्काया गो रखवाल ।
ए समो नहीं वैरागियोजी, जिणे टाल्यो आतमभार
मुनीश्वर. ॥३४॥

भण्यो अध्ययन ओगणिसमो जी, मृगा पुत्र अधिकार ।
तप जप क्रिया शुद्ध करी जी, आराधी पंचाचार मुनीश्वर. ॥३५॥

संयम दुक्कर पालियोजी, करी एक मास संथार ।
कर्म खपावी केवल लहीजी, पहोंच्या मुक्ति गति मोझार
मुनीश्वर. ॥३६॥

इति

---

(४६) ★ मृगा पुत्र की सज्झाय ★

※ राम विजयजी कृत ※

(तर्ज—धारणा मनावे रे मेघ कुमार नेरे)

भवि तुमे वन्दोरे मृगापुत्र साधुनेरे, बलभद्र रायनो नन्द ।
तरुण वय विलसेरे निज नारीशुं रे, जिमते सुर दोगुंद
भवि. ॥१॥

एक दिन बैठारे मन्दिर मालियेरे, दीठा श्री अणगार ।
पग उभराणे रे जयणा पालतोरे, षट्काय राखणहार
भवि. ॥२॥

ते देखी पूर्व भव सांभर्यो रे, नारी मुकी निराश ।
निरमोही थई हेठो उतर्योरे, आव्यो मायनी पास भवि. ॥३॥

माताजी आपो रे अनुमती मुझनेरे, लेशुं संजम भार ।
तन धन जोबन ऐ सवी कारमुं रे, कारमों ए संसार भवि. ॥४॥

वच्छ वचन साभली धरणी ढलीरे, शीतल करी उपचार ।
चित्तवल्यो तव एणीपेरे, उचरे रे, नयणे वहे जलधार भवि. ॥५॥

सुण मुझ जायारे ए सवी वातडीरे, तुझ विना घडी छ मास ।
खिणने रखावे रे विरहो ताहरो रे, तूं मुझ सास उसास
भवि. ॥६॥

तुझने परणावी रे उत्तम कुलतणी रे, सुन्दर बहु सुकुमाल ।
वाक विहुणी रे किम उवेखीनो रे, नाखे विरहनी जाल भवि. ॥७॥

सुण मुझ मायडीरे मे सुख भोगव्यारे, अनन्त अनन्ती वार ।
जिम जिम सेवेरे तिम वाधे घणों रे, ए बहु विषय विकार
भवि. ॥८॥

सुण वच्छ मारा रे संजम दोहिलु रे, तूं सुकुमाल शरीर ।
परिषह सहवा रे भूमि संथारवुं रे, पीवुं ऊंनो रे नीर भवि. ॥९॥

मताजी सह्यारे दुःख नरके घणारे, ते मुखे कह्या नवि जाय ।
तो ए संयम दुःख हूँ नवि गणु रे, जेहथी सिव सुख थाय
भवि. ॥१०॥

वच्छ ? तूं रोगातंके पीडियो रे, तव कुण करसे रे सार ।
सुण तूं मायडीरे मृगलानी कोण लिये रे, खवर ते वन मोझार ।
भवि. ॥११॥

वनमृग जिम माताजी, विचरशुं रे, दियो अनुमति इणीवार ।
इम वहु वचने रे मनावी मायनेरे, लिधो संजम भार
भवि. ॥१२॥

सुमिति गुप्ती रुडी परे पालवे रे, पाले शुद्ध आचार ।
कर्म खपावीने मुगतें गया रे, श्री मृगापुत्र अणगार
भवि. ॥१३॥

वाचक राम कहे ऐ मुनि तणारे, गुण समरो दिन ने रात ।
धन धन छे एहनी करणी करे रे, धन तस मायने तात भवि
तुमें वन्दोरे मृगापुत्र साधुने रे. ॥१४॥

---

(५०) ★ श्री गज सुकुमार की सज्झाय ★

✻ वीर विजय जी कृत ✻

(तज—झांझरीया मुनिवर धन धन)

श्री जगनायक वन्दियेरे, बावीसमो जिनराय ।
द्वारीका नगरी समोसर्या रे, सुरनर सेवे पाय गुणवन्ता—
भविया वन्दो गज सुकुमार ॥१॥

श्री जिनवर चरणे नमीरे, गज सुकुमार कुमार ।
भव सायर उत्तारणी रे, वाणी सुणीरे अपार गुणवन्ता. ॥२॥

मात पिता ने विनवे रे, लेशुं संयम भार ।
माय कहे वत्स सांभलो रे, भोगवो ऋद्धि विस्तार
गुणवन्ता. ॥३॥

कुँवर कहे सुणो मातजी रे, वीनतडी मुझ एक ।
राजरमणी भोग नवा नवारे, पाम्या वार अनेक
गुणवन्ता. ॥४॥

धन योवन छे कारमुंरे, कुटुम्ब सहु परिवार ।
अनित्य पणे ए जाणिये रे, आ ससार असार गुणवन्ता. ॥५॥

श्री नेमीश्वर तीर्थं करूँ रे, सयल सुख दातार।
जन्म मरण दुःख छोडवारे, सेव्युं जंगम आधार
गुणवन्ता. ॥६॥

बोले कुँवर चतुरनरु रे, मया करो मुझ आज।
चारित्र लीधे मातजी रे, सीझे सगला काज गुणवन्ता. ॥७॥

जननी पिता बहु विनवेरे, पहोंता जग गुरु पास।
सर्व विरति अति आदरी रे, कुंवर मनमें उल्लास
गुणवन्ता. ॥८॥

आदेश पामी गुरु तणोरे, मुनिवर काउसग्ग लेई।
सोमल ससुरो आवीयोरे, निज बयणे निरखेई गुणवन्ता. ॥९॥

मस्तके पाल माटी तणी रे, बांधी अग्नि भरेई।
कोप चढ्यो विप्र अति घणोरे, उपसर्ग घोर करेई
गुणवन्ता. ॥१०॥

महा मुनीश्वर चिंतवेरे, समता रस भण्डार।
चिहुंगतिमां हूँ भम्योरे, एकलडों निरधार गुणवन्ता. ॥११॥

शुक्ल ध्याने हुओ केवली रे, पहोंच्या शिवपुर वास।
शाश्वत सुखने अनुभवे रे, वीर मुनि करे प्रणाम गुणवन्ता.
भविया वन्दो गज सुकुमार ॥१२॥

(५१) ★ श्री गज सुकुमार की सज्झाय ★

* विनय विजयजी कृत *

सोना केरा कांगराने, रूपा केरा गढ रे। कृष्णजीनी द्वारिका,
जोवानी लागी रढ रे, चिरजीवो कुंवर तुमे गज सुकुमार रे
पुरा पुण्ये तमे पामिया ॥१॥

नेमी जिणन्द आव्या वन्दन चाल्या भाई रे। गज शुकुमार
वीर साथे गोलाई रे चिरजीवो ॥२॥

वाणी सुणी मीठी लागी, मन मोह्यं ए मारे।
श्री जैन धर्म विना सार नहीं कईमारे चिरंजीवो. ॥३॥

घर आवी इम बोले, आज्ञा देवो माता रे।
संयम सुखे लेशु जेथी पामु सुख शाता रे चिरजीवो. ॥४॥

कुमरनी ऐ वाणी सुणी, माताजी मुर्छाणी रे।
कुंवर कुमर माता, आखें नाखती पाणी रे चिरजीवो. ॥५॥

हैया केरा हार जाया, तजी केम जाय रे।
देवना दीधेला तुम विण, सुख नहीं थायरे चिरंजीवो. ॥६॥

सोना सरीखा वाल तारा, कंचन वरणी काया रे।
एवी रे कायानो एक दिन, थासे धुल धाणी रे चिरजीवो. ॥७॥

संयम खांडानी धारा, एमा नहीं सुख रे।
बावीस परिशह जीतवा, एछे अति दुःख रे चिरंजीवो. ॥८॥

यादव कृष्ण एम बोले, राज करो भाई रे।
आज्ञा आपो आण थापो, शिरछत्र ठाई रे चिरंजीवो. ॥९॥

सोनैयानी थेली काढ़ो, भण्डारी बोलाई रे।
ओघा पातरा लावे आपो, दीक्षा लेशुं भाई रे चिरंजीवो. ॥१०॥

राज पाट वीरा तुमे, सुख हवे करो रे।
दीक्षा आपे मने छत्र, तुमे धरो रे चिरंजीवो. ॥११॥

आज्ञा पामी ओच्छव कीधो, दीक्षा आपे लिधी रे।
देवकी कहे छे जाया, वहेले वरजो सिद्धी रे चिरंजीवो. ॥१२॥

मुझने मुकीने जाया, मावडी मती कर जोरे।
कर्म खपावी इण भव, वहेला मुक्ति वरजोरे चिरंजीवो. ॥१३॥

कुंवारो अन्तेउर तजी, साधु वेश लीधो रे।
गुरु आज्ञा लेईने, स्मशाने काउसग्ग किधो रे चिरंजीवो. ॥१४॥

खेरना अंगारा लई ने, मस्तके ठवीया रे।
जंगले जमाई जोई, सोमल ससरो कोप्यो रे चिरंजीवो. ॥१५॥

मोक्ष पाग बन्धानी, ससराने दोष नवि दीधो रे ।
वेदना अनती सही, समतारस पीधो रे चिरंजीवो. ॥१६॥

धन्य जननीना जाया, गज सुकुमार नामरे ।
समरथ थई जेणे कीधा सिद्ध आत्म काम रे चिरंजीवो. ॥१७॥

वेदना अनंती सही, दोष नहीं जोयुं रे ।
घर मातो लई केवल, मुक्ति ए मन मोह्यु रे चिरंजीवो. ॥१८॥

विनय विजय एम कहे, एवा मुनिने धन्य रे ।
कर्मना बीज बाली जेणे, जीती लिधु मन रे चिरंजीवो.
कुंवर तुमे गज सुकुमार रे ॥१९॥

---

(५२) ★ गज सुकुमार मुनि की सज्झाय ☆

※ भाव सागरजी म. कृत ※

(तर्ज—नलना)

द्वारिका नगरी अति भली, कृष्ण तिहा भूपाल साधुजी ।
लघु नन्धन जग लाडलो, नाम छे गज सुकुमार साधुजी
हितधरी गांउ मुनिवर एहवा ॥१॥

नेमि तणी वाणी सांभली, जाण्यो अथिर संसार साधुजी ।
अनुमती मांगी आविया, भूमि तिहां महाकाल साधुजी
हितधर गांवु. ॥२॥

सुधीर तिहां काउसग्ग रह्या. अविचल मेरू समान साधुजी ।
भात पाणी वोसराविया, ध्याता शुभमती ध्यान साधुजी
हितधर गांवु. ॥३॥

सोमल आवि तिहां नीसर्यों, दीठा साधु दयाल साधुजी ।
ऋषि गज सामो देखी करी, कोप चढ्यो ततकाल साधुजी
हितधर गांवु. ॥४॥

गीली माटी लावीने, माथे वान्धी पाल साधुजी ।
खेर तणा खीरा खरा, ठवीया कर्म चंडाल साधुजी
हितधर गांवु. ॥५॥

धुखे अंगारा धग धगे, जाणे ताती भाड़ साधुजी ।
चट चट वाजे चामडी, तट तट तुटे नाड़ साधुजी
हितधर गांवु. ॥६॥

चारित्र घोडे मुनि चढ्या, दर्शन तरकस तीर साधुजी ।
ज्ञाननी वरछी फेरता, क्षमा खड्ग समधीर साधुजी
हितधर गांवु. ॥७॥

उज्ज्वल वेदना ऊपनी, राख्यों निजमन धीर साधुजी ।
नांकें सल घाल्यो नहीं, चढते पारम वीर साधुजी
हितधर गाउं. ॥८॥

भय शत्रु भय माजियां, अनुकूल अनुकूल साधुजी ।
मनथिर करी मथिया, कर्म कीधा चकचूर साधुजी
हितधर गाउं. ॥६॥

कठिन परीषह जीतने, पाम्या केवल ज्ञान साधुजी ।
आतम निज उजवालिया, पहोता पद निर्वाण साधुजी
हितधर गाउं. ॥१०॥

उत्तम करणी जिण कीधी, धन धन गज सुकुमार साधुजी ।
भाव सागर भणे भावशुं, वन्दे वारम्वार साधुजी
हितधर गाउं. ॥११॥

---

(५३) ★ मेघ रथ राजा की सज्झाय ★

☼ राग। नमय सुन्दर जी ☼

दशमें भव थी शान्तिजी, मेघरथ जीव हो राय म्हारा राजा ।
पोषध शालामां पढ्या, पोषध लियो मन भाव म्हारा राजा

धन धन मेघरथ रायजी ॥
जीवन दया गुण खाण धर्मी राजा, धन धन मेघ रथ
रायजी. ॥१॥

ईशानाधिपति इन्द्रजी, वखाण्यो मेघरथ राय रूडाजी ।
धर्म चलाव्यों नहीं चले, आसुर देवता आय रूडा राजा
धन. ॥२॥

सिंचाणो पारेवो तनु अवतरी, पडियो खोला मांय रूडा०
राखो राखो मुझने राजवी, मुझने सिंचाणु खाय रूडा०
धन. ॥३॥

सिंचाणो कहे सुणो राजिया, ए छे महारो आहार रूडा०
मेघरथ कहे सुणो पंखिया, हिंसाथी नरक अवतार
रूडा पंखी. ॥४॥

शरणे आव्यु रे पारेवडु, नहीं आपुं निरधार रूडा पंखी ।
मांटी मंगावी तुझने देऊं, तेहनो कर तूं अहार रूडा पंखी
धन. ॥५॥

मांटी खपे मुझने एहनी, कवली छे ताहरी देह रूडा राजा० ।
जीव दया मेघरथ वसी, सत्यन मेले धर्म तेह रूडा राजा०
धन. ॥६॥

काती लेई पिंड कापीने, ले मास तूं मिचाण रूडा पंखी ।
त्राजुये तोली मुझने दियो, ए पारेवा परमाण रूडा राजा
धन. ॥७॥

त्राजूं मंगावे मेघरथ रायजी, कापी कापी मूके छे मास रूडा० ।
देव माया कारण सवि, नावे एकण अमा रूडा राजा०
धन. ॥८॥

भाई राणी सुतवल वले, हाथ झाली कहे तेह गेला राजा ।
एक पारेवाने कारणे, शूं कापो छो देह गेला राजा धन. ॥९॥

महाजन लोग वारे सहुं, मकरो एवडी वात रूडा राजा ।
मेघरथ कहे धर्मफल भलां, जीव दया मुझ वात धर्मी राजा
धन. ॥१०॥

त्राजुये बेठा रायजी, जे भावते खाय रूडा पंखी ।
डीमथी पारेवो अधिक गम्यो, धन्य पिता तुझ माय
धर्मी राजा. ॥१ ॥

चडते परिणामे राजजी, सुर प्रगटयो तिहां त्याय धर्मी० ।
खमावे बहु रंगे करी, लली लली लागे छे पाय रूडा०
धन. ॥१२॥

इन्द्र प्रशंसा ताहरी करी, तेहवो तूं छे राय रूडा राजा।
मेघरथ काया साजी करी, सुर पहोत्यों निज ठाम धर्मी राजा०
धन. ॥१३॥

संयम लीधो मेघरथ रायजी, एक लाख पूर्वनूं आय धर्मी।
वीस स्थानक विधे सेविया, तीर्थंकर गोत्र वंधाय रूडा०
धन. ॥१४॥

इग्यारमें भव श्री शान्तिजी, पहोत्या सर्वार्थसिद्ध। रूडा राजा,
तेत्रीश सागर आऊंखो, सुख विलशे सुरऋद्ध रूडा. ॥१५॥

एक पारेवानी दया थकी, वे पदवी पाम्या नरेश रूडा०।
पांचमा चक्रवर्ती ऊपन्या, सोलमा शान्ति जिनेश रूडा. ॥१६॥

वारमां भवे शान्तिजी, अचिरा कूंखे अवतार रूडा०।
दीक्षा लेईने केवल वर्या, पहोता मुक्ति मोझार रूडा राजा. ॥१७॥

त्रीजे भव शिव सुख लह्या, पाम्या अनंतु ज्ञान रूडा०।
तीर्थंकर पदवी लहीं, लाख वर्ष आयु जाण रूडा राजा. ॥१८॥

दया थकी नव निधी होवे, दया ते सुखनी खाण रूडा०।
भव अनंतनी ए सगी, दया ते सुखनी खाण रूडा०
राजा. ॥१९॥

गज भव शशलो राखियों, मेघ कुमार गुण खाण रूडा० ।
श्रेणिक राय सुत सुख लह्या, पहोतो अनुत्तर विमान रूडा. ॥२०॥

इम जाणी दया पालजो, मनमांहीं करुणा लाय रूडा० ।
समय सुन्दर इम विनवे, दयाथी सुख निर्वाण रूडा० रा. ॥२१॥

---

(५४) ❀ श्री सनतकुमार चक्रवर्तीनी सज्झाय ❀

❀ जिनय कुशल गणि कृत ❀

(राग—वे बनाकी लगी ए शिरोमणी)

सरस्वती सरस वचन मांगु, तोरे पाय लागुं ।
सनतकुमार चक्री गुण गाऊं, जिम हूं निर्मल थाऊं
रंगीला राणा रहोजी, जीवन रहो रहो मेरे,
सनतकुमार, विनवे सविपरिवार रंगीला राणा. ॥१॥

रूप अनुपम इन्द्रे वखाण्युं, सुर दो आवे माया ।
ब्राह्मण रूपधरी जोय आया, धरी धरी निरखे काया
रंगीला. ॥२॥

जेवो वखाण्यो तेहवो दीठो, रूप अनुपम भारी ।
स्तवनां सांभली मनमां हरख्यो, आण्यु गर्व अपारी
रंगीला. ॥३॥

अव शुं निरखो लाल रंगीले, खेह भरी मुझ काया ।
नहाई धोई जब छत्र धराऊं, तब जोई जो मोरी काया
रंगीला. ॥४॥

मुकुट कुंडल हार मोतीना, करी शणगार बनाया ।
छत्र धरावी सिंहासन बैठो, तस फरी ब्राह्मण आया
रंगीला. ॥५॥

देखी जोता रूप पलटाणु, सुणो हो चक्री राया ।
सोल रोग तारी देहमें उपन्या, गर्व न कर कूडी काया
रंगीला. ॥६॥

कलमलियो घणो चक्री मनमां, सांभली देवनी वाणी ।
तुरंत तंबोल नाखीने जोवे, रंगभरी काया पलटाणी
रंगीला. ॥७॥

गढ़ मढ़ मन्दिर पोल मालिया मेल्या, मेली ते सवि ठकुराई ।
नव निधि चौदह रतन सवी मेल्या, मेली ते सयल सगाई
रंगीला. ॥८॥

हय गय रथ अंते उरी मेली, मेली ते ममता माया ।
एकलडो सयम लई निचरे, केडन मेले राणा राया
रगीला. ॥९॥

पाय घुघरी घम घम वाजे, ठम ठम करती आवे ।
दश आगुलिये बे कर जोडी, निनती घणी रे कराचे
रगीला. ॥१०॥

तुम पाखे मारुं दिलडुं दाझे, दिन केही पर जाशे ।
एक लाखने सहस गाणुं, नयेणे करी निरखाशे.
रगीला. ॥११॥

मात पिता हेते करी झूरे, अन्तेउरी सवि रोवे ।
एक वार मनुष्य जोवो मेरे चक्री, सुनतकुमार नहीं जोवे
रंगीला. ॥१२॥

चामर धरावो छत्र धरावो, राज्य मे प्रतपो रूडा ।
छ खण्ड पृथ्वी आण मनावो, ते किम जाएवा कूडा
रगीला. ॥१३॥

छत्र धरे शिर चामर ढाले, राजन प्रतपो रूडे ।
छ. खण्ड पृथ्वी राज्य भोगवो, छ. माम लगे फरे केडे
रंगीला. ॥१४॥

तब फरी देव छलवा कारण, वैद्य रूप करी आवे ।
तप शक्तियें करी लब्धि ऊपनी, थुंके करी रोग शमावे
रंगीला. ॥१५॥

बे लाख वरस मंडलीक चक्री, लाख वरस जी दीक्षा ।
पनरमां जिनवरने वारे, नर देव करे जीव रक्षा रंगीला. ॥१६॥

श्री विजयसेन सूरीश्वर वाणी, तप गच्छ राजे जाणी ।
विनय कुशल पण्डितवर भाणी, तस चरणे चित्त लाया
रंगीला. ॥१७॥

सात सो वरसे रोग शमायो, कंचन सरखी काया ।
शान्ति कुशल मुनि एम पयंपे, देवलोक तीजा पाया
रंगीला. ॥१८॥

इति

---

(५५) ★ श्री जंबू स्वामी की सज्झाय ★

※ भाग्य विनय सूरि कृत ※

(तर्ज—भेखरे उतारो राजा भरतरी.)

सरस्वती स्वामीने विनऊं, सद्गुरु लागु जी पायजी ।
गुण रे गाऊं जंबू स्वामीना, हरख धरी मन मांहिं जी
धन धन जंबू स्वामीने. ॥१॥

संजम पंथ स्वामी दोहिलो, व्रत छे खांडानी धारजी ।
वेलु समान जे कोलिया, तेकेम गलिया जायजी धन धन. ॥२॥

पाय उभराणे चालवु, दिनकर तपेरे निलाड ।
मध्याहने करी गोचरी, लेवोजो सूझतो आहार धन धन. ॥३॥

कोडी नराणु सोवन ताहरे, ताहरे छे आठज नार ।
भोग वेलारे जोग काई लियो, भोगवो भोग संसार
धन धन. ॥४॥

राम सीताना वियोगडे, बहुत कियो रे सग्राम ।
छतीरे नारी पियु ? कांई तजो, कां तजो धनने माल धन. ॥५॥

परणीने पियुजी ? शुं परिहरो, हाथ मेल्यानो सबन्ध ।
पछी करशो स्वामी ओरतो, जेम कीधो मेघ मुणींद धन. ॥६॥

रत्न कचोले जीमता, काचलडे व्यवहार ।
पलंग तलाई पोढता, सथारो दु खकार धन धन. ॥७॥

शियाले शीतल दले, उनाले लू वाय ।
वरसाले घणो दोहिलो, अति सुकुमाल तुम काय धन. ॥८॥

पखी मेलाये सौ मले, परभाते उडी जाय ।
जे जेवी करणी करे, तेहवी गती थाय धन धन. ॥९॥

अंतेउर कयु' एकटु', कूवा कांठे नहीं माय ।
काचे तांतणे चालणी, त्रुटि जाय रे त्राण   मुनिवर. ॥१०॥

अ'तेउर थयु' दया मणु', राजा थयो निराश ।
माटी पणु' मनमां रह्यु', धिक पड्यो घरवास   मुनिवर. ॥११॥

नगर पड़ह वजड़ावियो, वस्ती दीशे हेरान ।
प्रजाने पीड़ा घणी, कोई दियो जीवन दान   मुनिवर. ॥१२॥

पडह आव्यों घर आंगणे, नगरी हालम डोल ।
जो माता अनुमती दीयो, तो हूँ उघाडु' रे पोल मुनिवर. ॥१३॥

वली वली वहुवर शु' कहूँ, नहीं निर्लजने लाज ।
नवकुल नाग नाशी गया, आव्यु' काकिडे राज मुनिवर. ॥१४॥

दोष दीजे निज कर्मने, कलंक चढाव्यु' रे माय ।
पडह छिवी उभी रही, जई संभलावो राय   मुनिवर. ॥१५॥

वेगे ते गई वधामणी, राजा मन नहिं विश्वास ।
प्रत्यक्ष जुवे ए पारखु', त्यां जई करे रे तपास   मुनिवर. ॥१६॥

सुखासन वेसी करी, आव्यो जिहाँ छे रे कूप ।
वदन ते पुनम चन्दलो, देखी हरख्यो रे भूप   मुनिवर. ॥१७॥

राजा मन आणंदियो, हैडे हर्ष न माय ।
प्रजाने पीडा घणी, सार करो मोरी माय   मुनिवर. ॥१८॥

अवर पुरुष नथर पिता, सती मन मांही सोय ।
मानर सहु मेडिये चढी, सतीने जुवे सहु सोय मुनिवर. ॥१६॥

काचे तातणे चालणी, सतीकला चढी सोल ।
कामिनी कूप जले भरी, उघाडी त्रणपोल मुनिवर. ॥२०॥

कोई पियर कोई सासरे, कोई होशे माने मोसाल ।
चोथी पोल उघाडसे, जे हसे शियल चोशाल मुनिवर. ॥२१॥

सुरनर होशे साखीया, सुभद्रा ए टाल्यु कलंक ।
चोथी पोल उघाड से, जेहशे शियल निकलंक मुनिवर. ॥२२॥

नाक राख्यु नगरी तणु, गाम उत्तारी रे गाल ।
राय राणा प्रशसा करे, सतीये शिरोमणी सार मुनिवर. ॥२३॥

जे नर नारी पालशे, ते तरसे संसार ।
सिद्धि तणा सुख पामशे, अमर तणो अवतार मुनिवर. ॥२४॥

मंनो कहे शियल सती, महिलाए राख्यु नाम ।
पाषण केरा दुघडा, रहेशे सोना केरे ठाम.

मुनिवर मोये रे ईरजा. ॥२५॥

(५७) ★ श्री शालि भद्रजी की सज्झाय ★

※ कवियण कृत ※

राज गृही नगरी मोझारो जी, वणजारो देशावर सारोजी ।
इण विणजेजी, रत्न कंवल लेई आविया जी ॥१॥

लाख लाखिणी वस्तु लाखेणी जी, ए वस्तु छे अति झिणीजी ।
कांई परिमल जी, घट घट मन्दिर परिहरी जी. ॥२॥

पूछे गांमने चोवटे, लोग मल्या थटो थटे ।
परजांई पूछो जी, शालिभद्रन मन्दिरिये जी. ॥३॥

शेठाणी सुखे भद्रा निरखेजी, रत्न कंवल लई परखे जी ।
लई पहोंचाड़ो जी, शालिभद्र ने मन्दिरीयेजी जी. ॥४॥

सुण हो भाई वणजारा, थारे कांवल सोले सारीजी ।
कांई मारेजी मारे वहुं, वत्तीशो जी भाई वणजशे
हाँ रे मारे सवदो नहीं वने जी. ॥५॥

सुणो हो माता भद्राजी, थारे वहुँओ वत्तीशोजी ।
कांई मारे जी मारे कांवल सोलो जी, माता भद्रा हो
एक एक पाटी आपदो जी. ॥६॥

तेडाव्यो भडारी जी, वीश लाख निरधारो जी ।
गर्बा देजो जी, श्रेहने घेर बेठा पहों चाडेजी जी. ॥७॥

राणी कहे सुणो राजाजी, आपणा राज किम काजा जी ।
मुक काजे जी, एक न लीवी स्वामी कामली जी. ॥८॥

सुणो चेलणा राणी जी, ए वाता मे जाणी जी ।
सिञाणी जी, श्रेनो अचंभो छे घणो जी. ॥९॥

शतण तो तन कस्शुं जी, शालिभद्रनुं मुख जोशुं जी ।
शणगारो जी, गजरथ घोडा पालखी जी. ॥१०॥

आगल कुंत हिंचावता, पाछल पात्र नचावता ।
राय श्रेणिक जी, शालिभद्र घेर आविया जी. ॥११॥

पहेले भुवन मे पग दियो, राजा मनमा चमकियो ।
काई जोग्यो जी, आतो चाकर तणो जी. ॥१२॥

बीजे भवन मे पग दियो, राजाजी मनमा हरखियो ।
काई जोन्यो जी, आ घर तो सेवकों तणुं जी. ॥१३॥

तीजा भुवन में पग दियो, राजाजी मनमा चमकियो ।
काई जोज्योजी, आतो श्रेष्ठी तणां जी. ॥१४॥

चोथे भुवन में पग दियो, राजा मनमां हरखियो ।
कांई जोज्यो जी, आघर तो राधण तणुं जी. ॥१५॥

राय श्रेणिक नी मुद्रिका, खोवाणी खोल करे जी ।
माय भद्राजी, थाल भरी तव लाविया जी. ॥१६॥

जागो जागो मारा नंदनजी, केम सुता आनन्देजी ।
कांई आंगणे जी, श्रेणिक राय पधार्या जी. ॥१७॥

हूँ नवि जाणुं माता मोलमां, हूं नवि जाणुं माता तोलमां ।
तमे लेजो जी, जेम तमने सुख उपजे जी. ॥१८॥

पूर्वे कही नहीं पूछता, अब कांई पूछो मोरा जननी जी ।
मोरी माताजी, हूँ न जाणुं वणजमां जी. ॥१९॥

राय करयाणुं लेजोजी, मों माँग्या दाम देजोजी ।
नाणाँ चूकवीजी, राय भंडारे नंखावी दियो जी. ॥२०॥

वलती माता इम कहे, साची नंदन सहे ।
कांई साचोजी, पृथ्वीनाथ पाधरिया जी. ॥२१॥

नणमां करे तव राजियो, कांई नणमां करे वे राजीयों ।
कांई नणमां जी, न्याय अन्याय करे सही जी. ॥२२॥

पूर्वे सुकृत नवि कीधा, सुपात्रे दान नवि दीधा ।
मुझ मायेजी, हजुं पण एवो नाथ छे जी. ॥२३॥

अव्रतो करणी करशुंजी, पंच विषय परिहरशु जी ।
पाली संयम जी, नाथ सनाथ थाशुं सही जी. ॥२४॥

इन्दुवत् अंग तेजजी, आवे सहुने हेज जी ।
नख शिख लगेजी, अंगोपांग शोभे घणा जी. ॥२५॥

मुक्ताफल जिम चमके जी, काने कुंडके झलके जी ।
राय श्रेणीक जी, शालिभद्र ने खोले लियो जी. ॥२६॥

राजा कहे सुणो माताजी, तुम कुंवर सुख माताजी ।
हवे एहनेजी, पाछो मन्दिर मोकलो जी. ॥२७॥

शालिभद्र निजघर आव्याजी श्रेणिक घेर सिधाव्या जी ।
पछी शालिभद्रजी, चिंते मनमा धर्मने जी. ॥२८॥

श्री जैन धर्म आदरू, मोह माया ने परिहरूं ।
हु छोड्ं जी, गजरथ, घोडा पालखी जी. ॥२९॥

सुणीने माता विलखीजी, नारियो सगली तलखीजी ।
तिण वेलाजी, अशाता पाम्या घणी जी. ॥३०॥

माता पिता ने भ्रातजी, आल पंपालनी वातजी ।
इण जगमां जी, स्वार्थना सर्वे सगा जी. ॥३१॥

हंस विना शां सरोवर्या, पियु विना शा मन्दिर्राया ।
मोहवश थकाजी, उच्चाट करे घणो जी. ॥३२॥

सर्वनीर अमूल्यजी, वाटकडे तेल फूलेलजी ।
शाह धन्नोजी शरीर, समारण मांडियो जी. ॥३३॥

धन्ना घेर सुभद्रा नारीजी, बैठा महेल मोभारीजी ।
सांभरंता जी एकज, आंसु खेरव्युं जी. ॥३४॥

गोभद्र शेठनी डीकरी, भद्रावाई तोडी मायजी ।
सुण सुन्दरी जी, ते किम आंसु खेरव्युं जी. ॥३५॥

शालिभद्रनी वेनडी, वत्तीश भोजाईनी नणदली ।
तो ताहरे जी, शामाटे रोवु पड़े जी. ॥३६॥

जगमां एकज वंधवो, संयम लेवा मन करे ।
नारी एक एक जी, दिन दिन प्रत्ये परिहरे जी. ॥३७॥

एतो मित्र कायरू, शुं लेशे संजम भायरू ।
जीभडली जी, मुख मायानी जुदी जाणवी जी. ॥३८॥

कहेवुं तो घणुं सोहिलुं, पण करवुं तो अति दोहिलुं ।
सुणो स्वामी जी, एवी ऋधि कोण परिहरे जी. ॥३९॥

कहेवुं तो घणुं सोहिलुं, पण करवुं तो अति दोहिलुं ।
सुण सुन्दरी जी, आजथी त्यागी तुजने जी. ॥४०॥

हु तो हसती मलकीने, तुमें कियो तमासो सलकीने,
सुणो स्वामी जी, अवतो चिंता नवि धरू   जी. ॥४१॥

चोटी अंबोडों वालीजी, धन्नाशा उठ्या चालीजी,
काई आव्याजी, शालिभद्र ने मंदिरीये   जी. ॥४२॥

उठो मित्र कायरू, संयम लेईये भायरू जी,
आपण दोय जणाजी, संजम शुद्ध आराधीये   जी. ॥४३॥

शालीभद्र वैरागिया, शाह धन्नो अति त्यागीया,
दोनु रागीया जी, श्रीवीर समीपे आविया   जी. ॥४४॥

संजम मर्म लीनोजी, तपस्याए मन भीनोजी,
शाह धन्नोजी, मास क्षमण करे पारणा   जी. ॥४५॥

तप करी देहने गालीजी, दूषण सगला टालीजी,
वैभार गिरीजी, ऊपर अणशण आदर्यो   जी. ॥४६॥

चडते परिणामे सोयजी, कालकरी जन दोयजी,
देव गतिये जी, अनुत्तर विमाने ऊपन्या   जी. ॥४७॥

सुर सुखने तिहा भोगवी, त्याथी देव दोनुं च्यवी,
विदेहे जी, मनुष्यपणुं तेह पामशे   जी. ॥४८॥

शुद्ध संयम आदरी, सकल कर्मनो क्षय करी,
लेई केवल जी, मोक्ष गतिने पामशे   जी. ॥४९॥

दान तणा फल देखोजी, धन्नो शालिभद्र पेखोजी,
नहीं लेखो जी, अतुल सुखने पामशे   जी. ॥५०॥

इम जाणी सुपात्रे पेखोजी, वेगे पानी मोत्तजी,
नही भोको जी, कदिये जीवने ऊपजे जी. ॥५१॥

उत्तमना गुण गावेजी, मनवांछित फल पावे जी,
कहे कवियणजी, श्रोता जन तुमे सांभलो जी. ॥५२॥

इति

---

(५८) ★ श्री नागेश्वरी ब्राह्मणी की सज्झाय ★

(तर्ज—जल जलती मिलती गणी रे लाल)

चम्पा नगरी सोहामणी रे लाल, भरत क्षेत्र मोझार हो
भविक जन ।
सोमल ब्राह्मण तिहां वसेरे लाल, नागेश्वरी घरनार हो भविकजन
साधुने वहोराव्युं कडवुं तुवड्ं रे लाला. ॥१॥

साधुने वहोराव्युं कडवुं तुवड्ं रे लाल, कियो मन न विचार
हो भविकजन ।
तेणे काले तेणे समेरे लाल, धर्मघोष अणगार हो
भविकजन साधु. ॥२॥

तेहना शिष्य अति दीपता रे लाल, धर्म रुचि मुनि राय हो
भविकजन ।
मास मास तप आदरे रे लाल, रहे गुरुनी लार हो
भवि. साधु० ॥३॥
मास खमणने पारणे रे लाल, लेई गुरुनी आण हो भवि. ।
नागेश्वरी घर आविया रे लाल, दीयो घणो सन्मान हो
भवि. साधु० ॥४॥
तेवो घरमां जाईने रे लाल, हरखशुं लाई उठाय हो भवि. ।
कडवा तुंबडानों सालणो रे लाल, सर्व दीधो वहोराय भवि.
साधु० ॥५॥
आहार पूरो जाणी करी रे लाल, आव्या गुरुजीनी पास हो भवि.
एहवो आहार वत्स मत करो रे लाल, होशे जीव विनाश हो
भवि. साधु० ॥६॥
आहार लेई मुनि चालियारे लाल, गया वन मोझार हो भवि. ।
एक बिंदु तिहा परठव्यो रे लाल, हुवो जीव महार हो भवि.
साधु० ॥७॥
एक बिन्दु ने नाखिने रे लाल, हुवो जीवा नो विनाश हो भवि.
जीव दया मन चिंतवी रे लाल, परिणम्यो आहार असार हो
भवि. साधु० ॥८॥

एक मुहुर्त ने अन्तरे रे लाल, परिणम्यो आहार असार हो भवि.
अतुल वेदना उपनी रे लाल, तुंबा तणे प्रसाद हो भवि.

साधु० ॥९॥

संथारा साथ पड़ी करी रे लाल, त्यागे सर्व आहार हो भवि.
पाप अठारे पच्चखीयारे लाल, काल कियो तेणिवार हो भवि.

साधु० ॥१०॥

साधु आणी मन भावन रे लाल, गया अनुत्तर विमान हो भवि.
महा विदेहमां जन्मशे रे लाल, पामशे केवल ज्ञान हो भवि.

साधु० ॥११॥

ब्राह्मण सुणीने कोपियो रे लाल, नागेश्वरी ने दीधी काढ़ हो भवि.
सोल जातिना कोढ उपन्यारे लाल, वेदना पीड़ी अपार हो भवि.

साधु० ॥१२॥

साते नरकमां जई करी रे लाल, फरी असंख्यातो काल हो भवि.
दुःख अनंता भोगव्यारे लाल, कर्म तणा फल जोय हो भवि.

साधु० ॥१३॥

सेठ तणे घर अवतरी रे लाल, चंपा नगरी मोझार हो भवि.
सुकुमालिका नामे भलीरे लाल, रूपे रंभा अवतार हो भवि.

साधु० ॥१४॥

सेठ कुमरी परणावीयाँ रे लाल, कुमर अति सुकुमाल हो भवि.
तत्काल ते छोडी गयो रे लाल, लागी अग्निनी झाल हो भवि.
साधु० ॥१५॥

शेठ सेठजीनी घेरे आवियोरे लाल, ओलंभो दीधो
तेणीवार हो भवि.
विण अवगुण परिहरी रे लाल, तुम मन कोण विचार हो भवि.
साधु० ॥१६॥

शेठजी पुत्रने इम कहे रे लाल, ते कीधुं काई पुत्र हो भवि. ।
पाछा जावो एहने घर रे लाल, राखो शेठ घर सूत हो भवि.
साधु० ॥१७॥

पुत्र कहे पिता सुणोरे लाल, कहो तो दूं जल झंप हो भवि.
कहो तो अग्निमा बली मरूं रे लाल, कहो तो पडुं कूवे जाय—
हो भवि. साधु० ॥१८॥

कहो तो डुंगरथी पडी मरूं रे लाल, कहो तो हूं विष खाय
हो भवि.
कहो तो फांसी खाई मरू रे लाल, कहो तो जाऊं देशे जाय हो
भवि. साधु० ॥१९॥

कहो तो शस्त्र खांची मरू रे लाल, कहो तो लेऊं संयम भार
हो भविकजन.
तात वचन लोपुं नहीं रे लाल, पण नहीं वंछूं ए नार हो भवि.
साधु० ॥२०॥

शेठ सुणी घर आवियो रे लाल, कुंमरी ऊपर बहु कोण हो भवि.
दुम्नक पुरुष अणावियो रे लाल, ते पण गयो तेने छोड हो
भवि. साधु० ॥२१॥

कुमरी मन चिंता थईरे लाल, कांई सरजाई किरतार हो भवि.
कीधा पाप में अति घणारे लाल, उदय हुआ इणिवार हो भवि.
साधु० ॥२२॥

दान देवा तिहां मांडीयो रे लाल, दिन दिन प्रत्ये प्रभात हो भवि.
गोवाली का साध्वी पधारीया रे लाल, सीयल सुशोभित गात हो
भवि. साधु० ॥२३॥

करजोडी विनती करे रे लाल, मनशुं करो उपकार हो भवि.
मुझ भरतार वांछे नहीं रे लाल, कांई करो उपचार हो भवि.
साधु० ॥२४॥

एह वचन तिहां सांभलीरे लाल, साध्वी करे धर्म उपदेश हो भवि.
धर्म सुणाव्यो मोटकुरे लाल, जेथी पामे सुख अशेष हो भवि.
साधु० ॥२५॥

धर्मकथा हेतशुं सुणीरे लाल, श्रावकनॉ व्रत चार हो भवि. ।
एह धर्म मुझने तारसे रे लाल, एह संसार असार हो भवि०
साधु० ॥२६॥

अनुमती लई पिता तणीरे लाल, लीधो सयम भार हो भवि०
चार महाव्रत उचयारे लाल, रहे गुरुणीनी लार हो भवि०
साधु० ॥२७॥

करजोडी विनन्ती करे रे लाल, द्यो मुझने आदेश हो भवि० ।
वनमाही काउसग्ग करूं रे लाल, लेशु आतापनातेम हो
भवि० साधु० ॥२८॥

गुरुणी वचन लेई करी रे लाल, गई नाग मोझार हो भवि. ।
छठ छठ तप काउसग्ग करे रे लाल, दीठी तिहॉ गणिका नार हो
भवि. साधु० ॥२६॥

गणिका देखी नियाणुं करेरे लाल, होऊं पच पुरुषनी नार हो भवि.
अध मासनी संलेहणा करीरे लाल, बीजे स्वर्ग अवतार हो भवि.
साधु० ॥३०॥

सुरपद आयुष भोगवी रे लाल, च्यवी सुकमालिका नाम हो भवि.
द्रुपद राजा घरे अवतरी रे लाल, चुलणी कूंखे द्रौपदी नाम हो
भवि. साधु० ॥३१॥

पांच पांडव घर आरजारे लाल, हुई अति सुजाण हो भवि. ।
संयम लेई स्वर्ग गई रे लाल, पछी जाशे निर्वाण हो भवि.
साधु० ॥३२॥

महा विदेहमां सिद्धसे रे लाल, पामशे केवल ज्ञान हो भवि. ।
पांचे पांडव मुगति गयारे लाल, पहोंच्या अविचल स्थान हो
भविकजन. जेणे साधुने वहोराव्युं कडवुं तुंमडोरे लाल. ॥३३॥

इति

---

(५६) ★ चन्दन बाला की सज्झाय ★

* कुंवर सागरजी कृत *

(तर्ज—तुझ साथे नही बोलुं हो ऋषभजी)

बाल कुंवारी चन्दनबाला, बोले बोल रसाला रे ।
रूप अनुपम नयण विशाला, गंगाजल गुण माला रे बाल. ॥१॥
शेठ धनावह मन्दिर आणी, बेटीनी परे जाणी रे ।
अणख अदेखाई मनमां आणी, तस घरणी दुहराणी रे
बाल. ॥२॥

मृला कुमती तणी छे कूंडी, चन्दणा मस्तक मूंडी रे ।
वेडी जडीवे जोई मति ऊंडी, तालु देती भूंडी रे वाल. ॥३॥

आयो शेठ अण दिन अन्ते, दिवस बपोरे चढंते रे ।
अडद बाकुला देई ए क्रान्ते, सुपडा खणे खाते रे वाल. ॥४॥

पाच दिवस ऊणो छमासी, अभिग्रह वीर अभ्यासी रे ।
आव्या आगणे योग विलासी, देखी कुंवरी उल्लासी रे
वाल. ॥५॥

एक पग उमरा मा राखी, नयणे आंसुडा नाखी रे ।
बाकुला पडिलाभ्या मन साखी, मुक्तितणी अभिलाखी रे
वाल. ॥६॥

साडी बारे कोडी पर सिद्धि, वृष्टि सौनैयानी कीधी रे ।
अनुक्रमे संयम कमला लिधी, मृगावती ने दीक्षा दिधीरे
वाल. ॥७॥

एक दिन वीर कोशाम्बी आव्या, चन्द्र सूरज मन भाव्या रे ।
मूल विमाने विमाने आया, तेज अधिक तम कायारे वाल. ॥८॥

उठो स्थानक आपणे चेली, जाशुं दोय जणा वहेलीरे ।
एनी वाणी जाय न मेली, आवी गुरुणी एकेलीरे वाल. ॥९॥

घोर धपट अंधारे आवी, पगे लगाई खमावीरे ।
केवल लेई निज कर्म खपावी, गुरुणीये खबर न पाई रे
वाल. ॥१०॥

हाथ ऊंचो लई चन्दना जगावी, आवे नाग उजाई रे ।
ते अंधारे खबर किम पाई, केवल ज्ञान उपाई रे वाल. ॥११॥

मैं ए किधी माठी करणी, ज्ञाननी आशातना करणी रे ।
चेली पगे लागे तस गुरुणी, तूं हीज तारण तरणीरे वाल. ॥१२॥

गुरुणी चेली कर्म विछोडी, पहुंची मुक्ति शुं जोडी रे ।
विजय कवि पण्डितनी जोडी, शिष्य कुंवर कहे कर जोडी रे—
वाल कुमारी चन्दन वाल० ॥१३॥

इति

---

(६०) ★ रुक्मिणी की सज्झाय ★

※ राज विजय जी कृत ※

(तर्ज—आच्छेलाल इस राग मे)

विचरंता गामोगाम, नेमि जिनेश्वर नाम ।
आच्छेलाल नयरी द्वारिकावती आविया जी. ॥१॥

वन पालक सुखदाय, दिये वधामणी आय ।

आच्छेलाल नेमी जिणन्द पधारिया जी० ॥२॥

कृष्णादिक नर नार, सहु मलि पर्षदा बार ।

आच्छेलाल नेमजी ने वन्दन आविया जी० ॥३॥

देशना दीये जिनराय, सहुने आवे दाय ।

आच्छेलाल रुक्मिणी, पूछे श्री नेमने जी० ॥४॥

पुत्रने माहारे वियोग, हुनो किण कर्म सजोग ।

आछेलाल भगवन्त मुझने उपदिसो जी. ॥५॥

पूरव भव विरतंत, भापे श्री भगवन्त आछे० ।

कीधा कर्म न छूटिये जी. ॥६॥

तूं हुती नृपनी नार, पूरव भव कोई वार ।

आछे० एक दिन रमना संचर्या जी. ॥७॥

जोता वन मोझार, दीठो एक सहकार ।

आछे० मोरडी व्याणी तिण ऊपरे जी. ॥८॥

साथे तमारो नाथ, ईंडा झाल्या हाथो हाथ ।

आछे० कुंकुम वरणा थे किया जी. ॥९॥

नवि ओलख्या ते मोर, करवा लागी शोर ।

आछे० सोले घडी नवि सेविया जी. ॥१०॥

उठी घटा घनघोर, चौदिशी बोले दादर मोर ।
आछे० पपईया पिउ पिउ करे जी. ॥११॥

बांधी तिहाँ अन्तराय, इम भाखे जिनराय ।
आछे० सोले वरस विरहो पड्यो जी. ॥१२॥

हँस हँस बांधे कर्म, नही ओलख्यो जिन धर्म ।
आछे० रोता न छूटे प्राणीया जी. ॥१३॥

देशना सुणी अभिराम, रुक्मिणी राणी नाम ।
आछे० सुधो संजम आदरे जी. ॥१४॥

थिरकर मन वचकाय, मुक्ति पुरी में जाय ।
आछे० राजविजय रंगे भणे जी. ॥१५॥

---

(६१) ★ बाहुबलि की सज्झाय ★

※ समय सुन्दरजी गणि कृत ※

राजतणा अति लोभिया, भरत बाहुवल झूझे रे ।
मुठी उपाडी मारवा, बाहुवल प्रति बूझे रे वीरा म्हारा
गज थकी उतरो, गज चढ़ियाँ केवल न होसी रे बंधव
म्हारा गजथकी उतरो. ॥१॥

लोच करी चारित्र लियो, वली आव्यो अभिमानो रे ।
लघु बंधव वादु नहीं, काउसग्ग रह्यो शुभ ध्यानो रे वीरा. ॥२॥

वरष दिवस काउसग्ग रह्या, वेलडिया वींटाणा रे ।
पखी माला माडिया, शीत ताप सूकाणा रे वीरा म्हारा. ॥३॥

वनमाहीं ऊंचे स्वरे, ब्राह्मी सुन्दरी इम भाषे रे ।
ऋषभ जिनेश्वर मोकली, बाहुबलजी नी पासेरे वीरा म्हारा. ॥४॥

साध्वी वचन सुणया इसा, चमक्यो चित्र मझारो रे ।
हयगय रथ मे परिहर्या, पिणनव मुक्यो अहेकारो रे
वीरा म्हारा. ॥५

वैरागे मन बालियो, मुक्यो निज अभिमानो रे ।
पाव उपाड्यो वादवा, उपनो केवल ज्ञानो रे वीरा म्हारा. ॥६॥

पहुँता केवली पर्षदा, बाहुबल ऋषि राया रे ।
अजर अमर पदवी लही, समय सुन्दर वन्दे पाया रे
वीरा म्हारा गजथकी उतरो. ॥७॥

इति

बुद्धिवले आज्ञाग्रही, चेलणाने अवदात रे ।
कहे श्रेणिक जा यहां थकी, एहनी छे वणी वातरे सम० ॥७॥

नन्दा माता साथ शुं, लीधो संयम भार रे ।
विजय विमाने उपन्या, करशे एक अवतार रे समकित. ॥८॥

श्रेणिक कूणिकने थया, वैरतणा अनुबन्ध रे ।
ते सवि अभय संजम पछी, ते सवि कर्म संबन्ध रे सम० ॥९॥

ज्ञान विमल प्रभु वीरजी, आणा धरे जे शीश रे ।
ते नित्य नित्य लीला लहे, जागती जास जगीशरे
समकित शील भूषण धरो. ॥१०॥

---

(६५) ★ श्री गोतम पृच्छा सज्झाय ★

(तर्ज—भेखरे उतारो राज भरतरी.)

श्री गोतम स्वामी पृच्छा करे, कहोने स्वामी वर्द्धमानजी ।
किण कर्मे निरधन निरवंशी, किणे कर्मे निफल जावजी
कहोने स्वामी वर्द्धमानजी ॥१॥

उ० परधन भोगने पर टमे, तेणे कर्म निर्धन होय ।
हो वच्छ ? गोयमा साभलो. ॥२॥

थापण मोसोरे जे करे, तेणे कर्मे निरवंशी होय ।
हो वच्छ गोयमा साभलो. ॥३॥

घात घाले गर्भावासनी, तेणे कर्मे निष्फल होय हो. ॥४॥

प्र० केणे कर्मे वेश्याने निघरा, किणे कर्मे नपु सक होय ।
कहोने स्वामी वर्द्धमान जी. ॥५॥

उ० दुगंच्छा करे जिन धर्मनी, तेणे कर्मे वेश्याज होय हो. ।
शीयल खडी ने भोग भोगव्या, तेणे कर्मे निवरा होय हो.
वेश्यानो सगज जे करे, तेणे कर्मे नपु सक होय हो. ॥६॥

प्र० केणे कर्मे गर्भथी गली जावे, केणे कर्मे पिटी मर्याजी
कहोने. ॥७॥

उ० याडी वेडावे कुण मोगग, तेणे कर्मे गर्भथी जाय हो. ।
फूल त्रिधाबी कर्म बांधिया, तेणे कर्मे पिटी मर्या जाय
हो. ॥८॥

प्र० केणे कर्मे टूंटाने पागला, केणे कर्मे जाति अन्ध होय. ।
कहोने स्वामी वर्द्धमानजी. ॥९॥

उ० जे जीव करे रे चौरंगमां, तेणे कर्मे पांगला होय हो. ।
आंखों काढेरे पर जीवनी, तेणे कर्मे जाति अंध होय
हो. ॥१०॥

प्र० केणे कर्मे शोकज उपजे, केणे कर्मे कलंक चढंत-
कहोने. ॥११॥

उ० वेरोने वंचोरे जे करे, तेणे कर्मे शोक्य उपजंत हो. ।
साख भरिने कर्म बांधियां, तेणे कर्मे कलंक चढत हो-
वच्छ. ॥१२॥

प्र० केणे कर्मे विषधर उपजे, केणे कर्मे जशहीन होय
कहोने. ॥१३॥

उ० रीसभर्या मरेरे अण बोलडे, तेणे कर्मे विषधर होय.
जे जीव रागरे व्यापीयो, तेणे कर्मे जशहीण होय हो-
वच्छ. ॥१४॥

प्र० केणे कर्मे जीव निगोदमां, केणे कर्मे तिर्यचमां जाय
कहोने. ॥१५॥

उ० जे जीव मोहरे व्यापीयो, तेणे कर्मे निगोदमां जाय हो-
वच्छ. ॥१६॥

जे जीव मायामां व्यापीयो, तेणे कर्मे तिर्यंचमां जाय हो
वच्छ. ॥१७॥

प्र० केणे कर्मे जीव एकेन्दरी, केणे कर्मे पंच इंद्रिय होय कहोने. ॥१८॥

उ० पच इन्द्रिवश नवि करी, तेणे कर्मे पचइन्द्रि होय हो- वच्छ. ॥१९॥

प्र० केणे कर्मे जीवडो बहु भमे, केणे कर्मे थोडोरे संसार- कहोने. ॥२०॥

उ. जे जीव मोह मच्छर करे, तेणे कर्मे संसार फरन्त हो. ॥२१॥

जे जीव विनय भक्ति करे, तेणे कर्मे संसार तरन्त हो- वच्छ. ॥२२॥

प्र केणे कर्मे जीवडो नीच कुले, किण कर्मे ऊंचकुल होय कहोने. ॥२३॥

उ. दान दीधारे असूझता, तेणे कर्मे नीचे कुल होय- हो. ॥२४॥

दान दीधारे सुपात्र मे, तेणे कर्मे ऊंच कुले होय हो- वच्छ. ॥२५॥

प्र केणे कर्मे जीवडो नरकमा, केणे कर्मे नरक मोझार हो- वच्छ. ॥२६॥

उ. जे जीव लोभे रे व्यापीयो, तेणे कर्मे नरक मोझार हो
वच्छ. ॥२७॥

दान शीयल तप भावना, तेणे कर्मे स्वर्ग विमान हो
वच्छ. ॥२८॥

प्र. गोतम केवल मांगीयुं, द्योने स्वामी वर्द्धमान हो-
वच्छ. ॥२९॥

उ. इण मोहे केवल न पामिये, मोहथी न होय निरवाण हो ।
गोतम केवल पामिया, महावीर स्वामी पोंत्या निर्वाण
हो वच्छ गोयम सांभलो. ॥३०॥

इति

---

(६६) ★ श्री मुनि खंधककुमार की सज्झाय ★

ऐवंति नयरी सोहामणी रे, राजा केतु रे राय ।
वन गया मुनिने वांदवाजी रे, मन वसियो वैराग्य;
मुनिश्वर जोवो जोवो भगवंतना कहेण मुनि. ॥१॥

गारे आनी कहे मायनेजी, हूं लेशुं संयम भार ।
कुंवर महारो नानकडोजी रे, ए अणघटतुं थाय मुनि. ॥२॥
गावसिंह वनमा वसेजी रे, खंधककुमार केम जाय ।
पांचसो सुभट आगे कर्याजी रे, मेल्या कुमारनी सहाय मु. ॥३॥
सावत्थी नयरीमा आवीयाजी रे, श्रावक हरख्या अपार ।
आनयरी गनेची तणीजी रे, हैडा हरख्या अपार मुनि. ॥४॥
जन सघला जीमवा गयाजी रे, यतिने मेल्यो रे एक ।
आहार लेवा जब उठीयाजी रे, सावत्थी नयरीमां जाय मु. ॥५॥
रायने राणी नीरखताजी, नयणे छुट्या रे नीर ।
आव्यो ते माहरो बंधवोजी रे, क्रोध चढ्यो आवीर मुनि. ॥६॥
रायते जनने बोला वीयारे, यतिने दीयो आहार ।
जन जाई ऋषिने मिल्याजी रे, नवने झाल्या रे हाथ मुनि. ॥७॥
मसाण भूमि लई गयाजी रे, काप्या नहीं रे लगार ।
त्वचा उतारी जीवती रे, हण्यो नानडो बाल मुनि. ॥८॥
जन जीमीने आवीजी रे, शोधवा लागारे वच्छ ।
ते नयने देखे नहींजीरे, हैडा फाटी रे जाय मुनि. ॥९॥
जन लाई राजाने मल्याजी रे, राजा पूछे रे वात ।
कई नयरीना किहा वसोजी रे, रहेता केनी रे पास मुनि. ॥१०॥

लब्धि कहे भवियण तुमे, मकरो मोह विकारो रे ।
तो तुमे मनक तणी परे, पामो सद्गति सारो रे नमो. ॥१०॥

---

(६८) ★ श्री कलावती की सज्झाय ★

वहेन कलावती तमने विनवुं, स्वामिनी सेवा धर जो मन ।
पति परमेश्वर आपणे छे बेनी, जाभा ते करजो जतन हो
वहेन करम करे ते सहेवुं. ॥१॥

सत्य पणाथी सवसुं रे बोली, अवसुं रे समझ्या छे स्वामी ।
वांक शोभानथी कशो स्वामीनो, लख्या लेख ललाट हो
वहेन. ॥२॥

परणीने आवी त्यांरथी, जरी लाडयां नथी रही स्वामी ।
मान आप्युं छे अमने छणुं जे, शोभा नथी रही खायी हो
वहेन. ॥३॥

हुं जावुं छु वन विषेहने, भा भा प्रणाम छे तमने ।
सर्व बेनोनो क्षमा मांगु छुं, मारे जावुं छे वन मोझार हो
वहेन. ॥४॥

प्रभु प्रतापे संतान दीधु, कर्मे कीधुं केञु ।
भर जगलमां जन्मज देशे हे प्रभु सहाय तमारी लेवूं वहेन ॥५॥

कालो रथने कालो छे माथो, कालानल्द शणवस्त्र ।
गलीनो चांलो कपाले करीयो, त्याथी ते चाल्या जाय हो–
वहेन ॥६॥

चालतां चालता अटवी रे आवी, भर जगल धाडे वन ।
त्याथी सतीने हेटे उतार्या, आखें अंगूडानी धार हो
वहेन ॥७॥

सुभटे सभलाव्यु वहेन कलावती, राजानो हुक्म आयो ।
कहेता अमारी काया रे कंपे, वेरखा कापीने आनो हो वहेन ॥८॥

रोता रोता सतीजी वोल्या, वेरखा कापीने ल्योने ।
वेरखा कापीने कहे जो स्वामीने, पाली छे आज्ञा तमारी हो
वहेन ॥९॥

वेरखा काप्या त्यारथी, ते सतीने दुःख थाय ।
अफसोस करतां मूर्छा रे आवी, सारवार नथी कांई पासे हो
वहेन ॥१०॥

सवानव मासे पुत्र जन्मीयो, चन्द्र सूरज वेउ थंभे ।
भर जंगलमा जन्मज दीधा रे, प्रभु शरण तमारू हो वहेन ॥११॥

आकाशमां रे देव सिंहासन, चलाय मानज थाय ।
देवे विचार्युं सती छे दुःखी, देव देवनी छे सहाय हो
वहेन. ॥१२॥

देव आवीने नमन करे छे, कलावती दुःखी जोई ।
बालक लीधुं हा हाथमां रे, सतीने तेडीने जाय रे हो
वहेन. ॥१३॥

साव सोनानो महेल बनाव्यो, फरतां बेठाई देवी ।
सती आज्ञा विना कोईना आवे, एवो शियलनो प्रभाव रे
वहेन. ॥१४॥

सार सोनानी मांचीये वेसी, ने बालक बवरावे रे ।
बालक बवरावता अफसोस करतां, स्वामी हशे सुखीके दुःखी हो ।
वहेन. ॥१५॥

निमित्तीने वेशे देव पधार्या, आव्या राज द्वार ।
राजमां आवी प्रणाम करीने, बेठा ही राजन पास हो वहेन. ॥१६।.

निमित्ती बोल्या अरे राजाजी, किम उदास देखाओ ।
राजन बोल्या अरे निमित्तीजी, कलावती नीच बुद्धि जाणी हो
वहेन. ॥१७॥

वेरखा पहेरता त्यारे में पूछ्यु, कहो राणीजी आयास्यां थी।
तेणे अमोने उत्तर आप्यो, जे मारे मन तेणे मोकल्या हो
वहेन. ॥१८॥

माराथी नलीयो, कोण रसे छे, एवु जाणी काढी।
वनवास वेरखा कापीने, भडारे मूक्या, ते तमने देखाडु हो
वहेन. ॥१६॥

वेरखा जोईने निमित्तीजी बोल्या, शु डी थई राजन।
जय विजय बंधक तेना, सीमंत अवसरे मोकल्या हो
वहेन. ॥२०॥

नाम छापेलु जुओराजा जी, वगर विचार्यु कर्यु राय।
एटल साभलता मूर्छा रे आवी, रंवको छे तेनी पास हो
वहेन. ॥२१॥

मूर्छा उतरंता राजजी बोल्या, शु करुं निमीत्ती याजी।
आज भर जंगलमा शुं रे, थयुं हवे वगर विचार्यु कर्यु काम।
वहेन. ॥२२॥

जाओ सेवको जोवा सतीनी, शोधमा चारे तरफ फरीआवो।
जे कोई सतीने शोधीने वारे, तेने मोए माग्यु अनुदान हो
वहेन. ॥२३॥

निमित्तीने राजन तिहां थी, चाल्या आव्यानी वन मोझार ।
चालतां चालतां अटवी रे आवी, देवताई महेल जोया हो
वहेन. ॥२४॥

सामे कलावती गोखमां बैठा खोलामां पुत्र दोनी पास ।
छेटे थी आवतां राजन जोया, हरखनो नथी रह्योपार हो
वहेन. ॥२५॥

पासे आवीने दर्शन कर्या, हरखना आंसुडानी धार ।
पुत्रने दीधो स्वामीना हाथमां, हरखनो नहीं रह्योपार हो
वहेन. ॥२६॥

तेणे समे वनमां मुनि पधार्या, पूछे वेरखडानी वात ।
कहोने मुनि में तो शा पाप, कर्या हशे ते कर्म उदय
वहेन. ॥२७॥

तुं रे हती वाई रायनी, कुंवरी अेहतो सुडानो जीव ।
ते ए सूडानी पांखो छेदी ते, कर्म उदय आव्युं आज हो
वहेन. ॥२८॥

तमे तमारी वस्तु संभालो असे लेशुं संयम भार ।
संयम लीधो श्री महावीरनी पासे, पहोत्या मुक्ति मोझार हो
वहेन. ॥२६॥

सुमति विजय कहे शीतल प्रभावथी दु:खीनो सुखीथाय।
भव्य जनोने नमन करूं छु, तेथी उतरशे भवपार हो
वहेन. ॥३०॥

---

(६६) ★ श्री कलावतीनी सज्झाय ★

नयरी कौशांबीनो राजा कहिये, नामे जयसिंग राय।
बेन भणी रे, जेणे बेरखडा मोकलीया कर्मे भाईना
कहेवाय रे. ॥१॥

कलावती सती शिरोमणी नार, पहेलीने रमणीये राज पधारिया।
पूछे छे बेर खडानी वात कहोने स्वामी, तमे बेरखडा घडाविया
मरखो न राखो नार रे कर्मे. ॥२॥

बीजीने रमणी राजा महले पधारिया, पूछे बेरखडानी वात।
कहोने नीरो तमने बेरखडा घडाव्या, तु नथी शीयलवती नाररे
कर्मे. ॥३॥

घणु जीवो जेणे वेरखड़ा मोकलीया, अवसर आवियो एह ।
अवसर जाणी जेणे वेरखड़ा मोकलीया, तेहमें पहेर्या हूंते एह रे
कर्मे. ॥४॥

मारा मनमां एना मनमां, तेणे मोकलीया एह ।
रात दिवस मारा हैडै न विसरे, दीठे हरखन मायरे कर्मे. ॥५॥

एणे अवसरे राजा रोप भराणो, तेडाव्या सुभट बेचार ।
सुकी नदीमां छेदन करावी, करलेई वेहलो रे आवरे कर्मे. ॥६॥

वेरखड़ा जोई राजा मनमां विमासे, में कीधो अपराध ।
विण अपराधे मै तो छेदन कराव्यां, ते में कीधो अन्याय रे
कर्मे. ॥७॥

इण अवसर राजा धान न खाय, तेडाव्या राजा बेचार ।
रात दिवस राजा मनमें विमासे, जो आवे शी लेव करती नार रे
कर्मे. ॥८॥

सूकूं सरोवर लेहेरे जाय, वृक्ष नव पल्लव थाय ।
करनवा आवे ने बेटो घवरावे, शियल तणे सुपसाय रे
कर्मे. ॥९॥

इण अवसर मारा वीरजी पधार्या, पूछे पर भवनी वात ।
शा शा अपराध में कीधा प्रभुजी, तेमने कहोरे आज कर्मे. ॥१०॥

तुंहती गाई राजानी कुवरी, अहतो सुडानी ते जात ।
सेजे सेजे ते तो माण रज्यो, भांगी सुडानी पाखरे कर्मे. ॥११॥

तमे तुमारी वस्तु सभालो, भोर सजम केरोभान ।
दीक्षा लेशुं महावीर जीनी पासे, पहोंच शुं मुक्ति मोभार
कर्मे. ॥१२॥

पुत्र हतो ते रायने सोंपीयो, पोते लीधो संजम भार ।
हीर विजय गुरु इणि परे बोले, आगागमन निवार कर्मे. ॥१३॥

---

(७०) ★ श्री रेवती नी सज्भाय ★

सोनाने सिंहासन बैठा रेवती, बैठा बैठा मन्दिर मोभार रे ।
गजपति दीठा मुनिने आवता, सुन्दर सिंह अणगार रे
मन्दिर पधारो मेरे पूज्यजी. ॥१॥

आज सुरतरु फल्यो आंगणे, मोतीडे वुठा मेह रे ।
सिंह अणगार पधारता, प्रगट्यो धर्म सनेह रे मं. ॥२॥

गंगाजलमां रे जिम कमलडे, मधुकर केली करंतरे ।
तेम मुजमन मधुकर परे, उलट्यो राग अत्यन्त रे म. ॥३॥

पूज्यजी ने वांदी निहालतां, तेम तेम रागनी हेल रे ।
शान्त स्वभावी सोहामणा, सूरति मोहन वेल रे म. ॥४॥

आदर मानदीधा घणा, पूछे कांई सिंह अणगार रे ।
कहोने पूज्य केम पधारिया, आदेश द्यो शुं विचार रे म. ॥५॥

मुजगुरु ए तुम घर मोकल्यो, भानुनी पाक वहोरायरे ।
रेवती कहे पूज्य केम लह्युं, केवल ज्ञान पसाय रे म. ॥६॥

शुभ परिणामें करी आप्यो, बीजोरो पाक उधार रे ।
मणी माणक मोती तणी, वृष्टि हुई तिणवार रे म. ॥७॥

देव आयुष्य तिहाँ बाधीयुं, रेवतीये तेणी वार रे ।
वीर प्रभु सुख सम्पदा, सफल कर्यो अवतार रे म. ॥८॥

पुरुष भयारे संसारमां, तेम वली नारी संसार रे ।
राजिमती सीता कुन्ती, द्रोपदी, मृगावती चन्दन बाला रे
म. ॥९॥

इत्यादिये जैन धर्म आदर्यो, धन धन ते नर नार रे ।
वीर किंकर एम उचरे, दानथी जय जय कार रे म. ॥१०॥

———

(७१) ❀ श्री अंजना सतीनी सज्झाय ❀

अंजना वात करे छे मारी सखी, मने मेली गया मारा पति ।
अतरग महेलमा मेली रोती, साहेली मने कर्मे मल्यो वनवास
साहेली मारा पुण्य जोग तुम पास. ॥१॥

लश्करे चढताने शुकन दीधा,
ते तो नाथे म्हारा नही लीधा ।
ढीका पाटु पोते मने दीधा साहेली. ॥२॥

सखी चकलानो सुणी पुकार,
गते आव्या पवनजी दरवार ।
वारे वरसे लीधी छे सम्भाल साहेली. ॥३॥

सखी कलक चढाव्यु मारे माथे,
म्हारी सासु ए राखी नहीं पासे ।
म्हारा ससरे मे करे वनवासे साहेली. ॥४॥

पाचसो सखीयो दीधी छे म्हारा वापे,
तेमा एक नथी म्हारा पासे ।
एक वसत वाला म्हारी साथे साहेली. ॥५॥

कालो चाल्यो ने राखडी काली,
रथ मेल्यो छे वन मोझारी ।
हवे सहाय करो देवमारी साहेली. ॥६॥

म्हारी माता ए लीधी नहीं सार,
म्हारा पिता ए काढ़ी घर बाहर ।
सखी न मेल्यो पाणीनो पानार साहेली. ॥७॥

मने वात न पूछी मारा वीरे,
मारा मनमां न रहती धीर ।
मारे अंगे फाटी गया चीर साहेली. ॥८॥

मने दिशा लागे छे काली,
मारी छाती जाए छे फाटी ।
अंधारी अटवीमां कर्मे नाखी साहेली. ॥६॥

मारू जमणु फरके छे अंग,
न थी बैठी हुं कोईनी संग ।
आते शो पड्यो रंगमां भंग साहेली. ॥१०॥

सखी धावता छोडव्या हशे बाल,
नहीं तरकापी हशे कुणी डाल ।
तेना कर्में पामी खोटो आल साहेली. ॥११॥

ननमा भमता मुनि दीठा आज,
पूर्व भवनी पूछी छे वात।
जीवे शा कीधा छे पाप साहेली. ॥१२॥

वेन हँसता रे जोहरण तमे लीधा,
मुनिराज ने बहु दुःख दीधा।
तेना कर्मे तमे वनवास लीधा साहेली. ॥१३॥

पूर्वे हसे शोकनो बाल,
तेंने देखी उछलती मनमा झाल।
तेणे कर्मे जोया वनमा झाड साहेली. ॥१४॥

सखी वनमा जनम्यो छे बाल,
क्यारे उतरशे अमारो आल।
ओच्छव करशुं माने मोशाल साहेली. ॥१५॥

वनमा भमता मुनि दीठा आज,
अमने धर्म बताओ मुनिराज।
क्यारे सरसे अमारा काज साहेली. ॥१६॥

वनमा मलशे मामा मामी आज,
पछी करशे पवनजी साज।
त्यारे सरशे तमारा काज साहेली. ॥१७॥

मुनिराजनी सीख छे सारी,

सहु उरमां लेजो अवधारी ।

माणक विजयनी जाऊं बलिहारी

साहेली मने कर्म मल्यो वनवास. ॥१८॥



(७२) ★ श्री कमलावती की सज्झाय ★

(तर्ज—सुनोने लागो हो वचन दाजेणा)

महलो ते बेठी हो राणी कमलावती, उड़ेरे झीणेरी खेह ।

सांभल हो दासी, आजरे नगरीमाँ, खेपत अति भलो

जोईरे तमासो इषुकार नगरीनो, मनमाँ जे उपन्यो संदेह

सांभल हो दासी आजरे नगरीमाँ, खेपत अति भलो. ॥१॥

कांतो दासी प्रधाननो दण्ड लियो, कांई लुट्या राजा ए गाम,

साँभल हो दासी ।

कांई कोईना धनमां गाडा नित्यों, कांई पाडी राजा ए माम

सांभलो दासी आजरे. ॥२॥

नथी रे माईजी प्रधाननो दण्ड लियो, नथी लुट्या राजा ए गाम
साभल हो माईजी, आजरे नथी कोटना धनना गाडा निमर्या,
नथी पाडी राजा ए माम, सॉभलो हो बाईजी हुकम करो तो
गाडा यहीं धरूं. ॥३॥

भ्रगु पुरोहित जमा भारजा, वली तेना दोय कुमार सॉभल०
साधु पासे जाई संयम आदरे, तेनो धन लावे छे राय साभल हो
हुकम करो गाडा यहीं धरू. ॥४॥

वयण सुणीने माथो धुणियों, राजाना मोटा छे भाग सांभल
हो दासी,
तेनो धन लेनो जुगतो नथी, ब्राह्मण पाम्यां वैराग साभलो दासी
ब्राह्मणनी छडी ऋद्धिमत आदरो ॥५॥

महेलो थी उत्तर्या राणी कमलावती, आव्या राई हेठ हजुर
सामल हो राजा ।
वचन कहे छे घणा आकरा, जिम कोपे चढ्यो बोले वाघ साभल,
हो राजा ब्राह्मणनी छडी ऋद्धि. ॥६॥

वम्याने आहारनी इच्छा कुण करे, करे वली श्वानने काग साभलो
हो राजा; पहलाने दान दिधु हाथ से, ते पाछो लेना नहीं आवे-
लाज साभल हो राजा. ॥७॥

रत्न जडित राय तारो पिंजरो, मांहे सुवडो मने जाण सांभल. ।
हूँ रे बैठी त्हारा राज्यमां, रहतां न पामुं कल्याण सांभल हो
राजा आज्ञा आपो तो संजम आदरूं. ॥२०॥

मेलव्युं धन रहेशे नहीं, थोडुं पण आवे नहीं साथ सांभल. ।
आगल जासो तो पाथरूं, संवल लेजोजी साथ सांभल
आज्ञा आपो तो संयम आदरूं. ॥२१॥

राणीना वचन सुणी करी, बुझ्या तव इषुकार सांभल० ।
एक चित्ते तन धन जोबन जाण्या कारमां जाण्यो संसार असार
सांभली एक चित्ते छय जीवे ते संयम आदर्यो. ॥२२॥

भ्रगु पुरोहित जसा भारजा, वली तेना दोय कुमार सांभली० ।
राजा सहित राणी कमलावती, कांई लीधो संयम भार सांभली
एक चित्ते छय जीवते. ॥२३॥

तपजप करी संयम पालता, कांई करता उग्र विहार सांभली. ।
कर्म खपावी केवल पामिया, कांई होता मुगति मोझार.
सांभली एक चित्ते छय जीवे ते संयम आदर्यो. ॥२४॥

इति

नाठी वनमां चोरे लूटी, गणिकाने घेरे वेची ।
यार पुरुष थी यारी रमता, कर्मनी वेला मे खेंची हो
राज श्री कहुं कथनी. ॥११॥

माधव सुत केशव पितु शोधन, भमी वेश्यानी घर आव्या ।
धन देखी जिम दूध मिंजारी, गणिका ने मन भाव्या हो
राज श्री कहुं कथनी. ॥१२॥

वेश्याए द्विजने मुझ सोंप्यो, जाणी मैं ललचारी ।
धिक् धिक् पुनथी यारी रमता, कर्मे नाच नचारी हो राज श्री
कहुं कथनी. ॥१३॥

यारी रमता काल गयो केई, एक दिन फीणी में हासी ।
क्यानी रहेता मी क्या जागे, तव तेने अथथी प्रकाशी हो राज
श्री कहुं कथनी. ॥१४॥

ब्रह्मन राणी बात सुणीने, गुह्य में राखी भारी ।
पुत्रने कहुं तुम देश सिधावो, मैं दुनिया निसारी हो
राज श्री कहुं कथनी. ॥१५॥

पुत्र वलारी कहुं गणिकाने, हा हा धिक् तुझ मुझने ।
महा पातकनी शुद्धि माटे, अग्नि शरण हो मुझने राज श्री
कहुँ कथनी. ॥१६॥

सरांता कांठे चय सलगावी, अग्नि प्रवेश मैं कीधो ।
कर्मे नदीना पूरमां तणाणी, अग्नि भोग न लीधो हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥१७॥

जलमाँ तणाणी कांठे आवी, अहीरे जीवती काढी ।
मुझ पापिणीने नदीये न संघरी, अहिरे करी भरवाडो हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥१८॥

ते भरवाडी दही दूध लईने, वेचवा पुरमां पेठी ।
गज छुट्यो कोलाहल सुणीने, पणीहारीने हूं नाठी हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥१६॥

पणीहारीनो फुटयुं वेड्डँ, धुसके रोवा लागी ।
दही दुधनी मटकी फुटी, तोय हूँ हसवा लागी हो
राज शी कहुं कथनी. ॥२०॥

हसवानुं कारण तें पुछयुं वीरा, मैं अथथी इति कीधुं ।
केने रोवुं ने केने जोवुं में, दैवे दुःख मने दीधुं हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥२१॥

महीयारीनी दुःखनी कहानी, सुणी मुर्छा थई द्विजने ।
मुर्छावली तव हा हा उच्चरे, द्विज कहे धिक २ मुझने हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥२२॥

माता पुत्र पस्तावो करता, ज्ञानी गुरुने मिलीया।
गुरुनी दीक्षा शिक्षा पाली, भवना फेरा टलिया हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥२३॥

एक भवोभव बाजी रमता, उलट सुलट पडे पासा।
नाना विधि भवोभव शाकलचन्द, खेले कर्म तमासा हो
राज शी कहुँ कथनी मारी. ॥२४॥

इति

---

(७५) ★ पर्युषण की सज्झाय ★

※ माणक विजयजी कृत ※

पर्व पजुसण आविया, आनन्द अंगे न माय रे।
घर घर उत्सव अति घणा, श्री संघ आवीने जायरे पर्व. ॥१॥

जीव अमारी पलावीये, कीजिये व्रत पचखाण रे।
भाव धरी गुरु वंदीये, सुणीये सूत्र वखाण रे पर्व. ॥२॥

मोहटा राजानी चाकरी करतां, राँक सेवक बहु हरसे ।
सुरतरु सरिखो अपजस थासे, तो लरी केम फरसे हो—
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥६॥

छप्पन क्रोड जादवनो साहिबो, कृष्णज नरकज जासे ।
नेमि जिनेश्वर केरा रे बंधव, जग मांहे अपजस थासे हो—
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥७॥

समकित शुद्धनी परीक्षा करीने, बोलिया केवल ज्ञानी ।
नेमि जिनेश्वर दियोरे दिलासो, खरो रुपैयो जाणी हो
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥८॥

नेमि कहेरे तुम चिंता नकरसो, तुम पदवी हम सरिखी ।
आवती चोवीशमां होशे रे तीर्थंकर हरिपोते मन हरखीहो
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥६॥

जादवकुल उजवाल्यो रे नेमजी, समुद्रविजय कुल दीवो ।
इन्द्र कहेरे सिवादेवीनो नंदन, क्रोड दीवाली जीवो हो
प्रभुजी नहीं जाऊं. ॥१०॥

---

(७४) ★ कामलता की सज्झाय ★

* साकल चन्दजी कृत *

शी कहुँ कथनी मारी हो राज शी कहुँ कथननी-मारी ।
मने कर्म करी महियारी हो राज शी० टेर—
शिवपुर गाममा माधव द्विजनी, कामलताभिध नारी ।
रूपकला भर योवन भावे, ऊर्वशी रंभा हारी हो राज०
शी कहुं कथननी मारी. ॥१॥

पालणे केशव पुत्र पोढानी, हूं भरवा गई पाणी ।
शिवपुर दुशमन राये घेरी, हुँ पणीयारी लुटाणी ही
राज शी कहु कथनी. ॥२॥

सुभटो ए निज रायने सोंपी, राय करी पटराणी ।
रंगना सुतथी पणपति माधव, विसरी नहीं गुण खाणी हो
राज शी कहु कथनी. ॥३॥

वर्ष पनरनो पुत्र थयो तव, माधव द्विज मुज माटे ।
भमतो योगी सम गोखे थी, दीठो जाता वाटे हो राज
शी कहु कथनी. ॥४॥

दासी द्वारा द्विजने बोलावी, द्रव्य देइने दुःख काप्यूं ।
चौदस निशी महाकाली मन्दिर, मनशुं वचन में आप्युं हो
राज शी कहुं कथनी. ॥५॥

कारमी चुंके चीस पोकारी, महीपतीने में कीधुं ।
एकाकी महाकाली जावा, तुम दुःखे में व्रत लीधुं हो
राज शी कहुं कथनी. ॥६॥

विसरी बाधा कोपे काली, पेटमां पीडथई भारी ।
राय कहे ए बाचा करशुं, ते क्षण चूंक मटी मारी हो
राज शी कहुँ कथनी. ॥७॥

चौदसने दिन राजा राणी, एकाकी पग पाली ।
महीपती आगलने हुं पाछल, पहोत्यां बिहुं महाकाली हो
राज शी कहुं कथनी. ॥८॥

राजा ए निज खड्ग विश्वासे, मारा करमां आप्युं ।
जब नृप मन्दिर मांही पेठो, तब तस शिर में काट्युं हो
राज शी कहुं कथनी. ॥९॥

रायने मारी पतिने जगाडुं, ढंढोलता नवि जागे ।
नाग डस्यो पति मरण पाम्यो, जब उभय भ्रष्ट थई भागी
हो राज शी कहुं कथनी. ॥१०॥

(७६) ★ ढाल दूसरी सज्झाय ★

पहेले दिन बहु आदर आणी, कल्पसूत्र घर आणो ।
कुसुम वस्त्र केसरशुं पूजी, रात्रि जागे लिये लाहोरे
प्राणी कल्पसूत्र आराधो, आराधी शिव सुख साधोरे प्राणी. ॥१॥

प्रह उठीने उपाश्रये आवी, पूजी गुरु नव अंगे ।
वाजींत्र वाजता मंगल गाता, गहुली दिये मन रंगेरे प्राणी. ॥२॥

मन वच काया ए त्रिकरणे, श्री जिन शासन माहिं ।
सुविहित साधु तणे मुख सुणिये, उत्तम सूत्र उमाहीरे प्राणी. ॥३॥

गिरिमांही जेम मेरू वडो गिरी, मंत्र माहे नवकार ।
वृक्षमाहे कल्पवृक्ष अनुपम, शास्त्रमाहे कल्पसार रे प्राणी. ॥४॥

नवमा पूर्वनुं दशा श्रुतस्कन्ध, अध्ययन आठम जेह ।
चौद पूर्वधर श्री भद्रबाहु, उद्धर्युं श्री कल्प श्रेह रे प्राणी. ॥५॥

पहेला मुनि दश कल्प वखाणों, चेत्र गुण कर्या नेह ।
तृतीय रसायन सरिखुं ए सूत्र, पूरवमां नहीं फेर रे प्राणी. ॥६॥

नवमें प्राणुं अगरो वीरथी, सदा कल्प वखाण ।
ध्रुवसेन राजा पुत्रनी आरति, आनन्दपुर मंडाण रे प्राणी. ॥७॥

अट्ठम तपनी महिमा ऊपर, नागकेतु दृष्टांत ।
ए तो पीठिका हवे सूत्र वांचना, वीर चरित्र सुणो संतरे
प्राणी. ॥८॥
जंबू द्वीपमां दक्षिण भरते, माहणकुंड सुठाम ।
आषाढ़शुदि छट्टे चवियां, सुरलोक थी अभिराम रे प्राणी. ॥९॥
ऋषभदत्त घरे देवा नन्दा. कूखे अवतरिया स्वाम ।
चौदह सुपन देखी मन हरखी, पियु आगल कही तामरे
प्राणी. ॥१०॥
सुपन अर्थ कह्यो सुत होशे, ए हवे इन्द्र आलोचे ।
ब्राह्मण घर अवतरिया देखी, बैठो सुरलोक शोचे रे
प्राणी. ॥११॥
इन्द्र स्तवी उलट आणी, पूरण प्रथम वखाण ।
मेघकुमार कथाथी सांचे, कहे बुध माणेके जाणीरे प्राणी. ॥१२॥

---

(७७) ☆ ढाल तीसरी सज्झाय ★

इन्द्र विचारे चितमांजी, ए तो अचरिज वात ।
नीचकुले नाव्या कदाजी, उत्तम पुरुष अवदात—
सुगुणनर जुओ जुओ कर्म प्रधान, कर्म सबल बलवान सुगु, ॥१॥

आवे तो जन्मे नहीजी, जिन चक्री हरिराम ।
उग्रभोग राजन कुलेजी, आवे उत्तम ठाम सुगुण. ॥२॥
काल अनते ऊपन्याजी, दश अच्छेरा रे होय ।
तिण अच्छेरु ए थयुंजी, गर्भ हरण दश माहे सुगुण. ॥३॥
अथवा प्रभु सत्तावीशमा जी, भवमा त्रीजे जन्म ।
मरिचि भव कुलमद कीयोजी, तेथी बाध्युं नीच कर्म सुगु. ॥४॥
गोत्र कर्म उदये करीजी, माहण कुले उवताय ।
उत्तम कुले जे अवतरे जी, इन्द्रजित ते थाय सुगुण. ॥५॥
हरिण गमेषी तेडीनेजी, हरि कहे एह विचार ।
विप्र कुलथी लेई प्रभुजी, क्षत्रियकुल अवतार सुगुण. ॥६॥
राय सिद्धारथ घर भलीजी, राणी त्रिशला देवी ।
तास कूँखे अवतरीयाजी, हरि सेवक ततखेव सुगुण. ॥७॥
गज वृषभादिक [illegible]दरुजी, चौद सुपन तिणवार ।
देखी राणी जेहवांजी, वर्णव्या सूत्रे सार सुगुण. ॥८॥
वर्णन करो सुपन तणुंजी, मुकी बीजूं वखाण ।
श्री क्षमा विजय गुरु तणोजी, कहे माणेक गुण खाण
सुगुण. ॥९॥

इति

---

(७८) ☆ श्री देवानन्दा की सज्झाय ☆

※ चन्द्र सूरि कृत ※

जिनवर रूप देखी मन हरखे, स्तन से दूध झराया ।
तब गोयम कुं भयो रे अचंबो, प्रश्न करण कुं आया हो
गोतम यह तो मेरी अम्मा, यह तो मेरी माता हो गणधर
यह. ॥१॥

तस कूँखे तुम किम नहीं वसिया, कवण किया तुम कम्मा ।
पूर्व भव जब वीर प्रकाशे, इण किया हे कम्मा हो गोतम. ॥२॥

त्रिशलादे देराणी हुंती, देवानन्द जेठाणी ।
विषय काय थी कांई न जाणी, कपट बात मन आणी
गोतम. ॥३॥

तब श्राप दीयो देराणी, तुम संतान न होज्यो ।
कर्म आगल कोई न छूटे, इन्द्र चक्रवर्ती जोज्यो हो
गोतम. ॥४॥

देराणी रा रत्न डाबला, बहुला रत्न चोराणा ।
झगडो करताँ न्याय हुओ जब, कछुय न पाया नाणा
गोतम. ॥५॥

भरतराय जब ऋषभने पूछे, इसमें कोण जिणन्दा ।
मरिची पुत्र त्रिदंडी तुमारो, चोवीशमो जिणन्दा हो गोतम. ॥६॥

कुलनो मद कियो मे गोतम, भरतराय जब बांधा ।
मन वचन काय एकत्र करीने, हरख्यो अतिह आणन्दा
गोतम. ॥७॥

कर्म सयोगे भिक्षु कुल पायो, उपन्यो ब्राह्मणी कूंखे ।
इन्द्रे अवधि जोता देख्यो, नान प्रभु जे तेह हो गोतम. ॥८॥

व्यासी दीन तस कुखे वसियो, हरिण गमेषी आयो ।
पूर्वभव त्रिशला देराणी, तस कुखे छिटकायो हो गोतम. ॥६॥

ऋषभदत्तने देवानन्दा, लीधो सयम भार ।
तव गोतम यह मुक्ते जासी, भगवती सूत्रनी साखी गोतम. ॥१०॥

सिद्धारथ त्रिशला देराणी, अच्युत देवलोक जाशे ।
आचारगे दूजे खधे, इम कही सूत्रनी साखे हो गोतम. ॥११॥

खरतर गच्छ श्रीपति जिन चन्दा, दिनी मनोहर वाणी ।
विनय करी गुरु गोतम पूछे, उलट अंगे आणी हो
गोतम. ॥१२॥

इति

---

(७६) ★ पर्युषण की सज्झाय ★

* कृपाचन्द सूरि कृत *

(तर्ज—देशी—रतनी)

सखी पर्व पजुषण आव्या, भवि जनना मनमां भाव्या ।
एमां आश्रव पांच हटाव्या, एतो सर्व जीव सुख भाव्या—
सनेही पर्व पजुषण सेवो, एतो सेवी शिव सुख लेवो सनेही. ॥१॥

श्रीवीर जिनेश्वर भाखे, ए पर्व सेवो श्रुत साखे ।
श्री भद्र बाहु स्वामी दाखे, एतो कल्पसूत्र इम आखे सनेही. ॥२॥

आठ दिवस अमारि पलावो, जिन चैत्ये पूजा रचावो ।
कल्पसूत्र घरे पधरावो, देवे रात्रि जोगो भल भावो सनेही. ॥३॥

रथ हय वर गज सणगारे, शासननी शोभा वधारे ।
वाजित्र ध्वनि मनुहारे, वर घोडो सजे दिल सारे
सनेही पर्व. ॥४॥

आडंबर करीने लावे, श्री कल्पसूत्र शुभ भावे ।
सद्‌गुरुनें हाथे ठावे, सुहव मिल मंगल गावे सनेही पर्व. ॥५॥

सद्‌गुरुनी मीठी वाणी, सुणो चऊ विह संत गुण खाणी ।
मनमां अति उल्लट आणी, संसार तरे भवि प्राणी सनेह पर्व. ॥६॥

इकवीश वार सुणी जे, पूजा प्रभावना कीजे ।
छठ अट्ठम चौथ करीजे, सुणी वीर जन्म जस लीजे
सनेही पर्व. ॥७॥

आषाढ चोमासेथी जाणो, पचास दिवस परमाणो ।
संवच्छरी पर्व कहाणो, भाखे श्री जिनवर भाणो सनेही पर्व. ॥८॥

इम पर्व आराधन करिये, पंच कारण मनमा धरीये ।
श्री जिनवाणी अनुसरिये, कृपाचन्द सूरि जस वरिये
सनेह पर्व. ॥९॥

इति

---

(८०) ★ श्री मेघकुमार की सज्झाय ★

(तज–ए छत जगमा दीवो)

वीर जिनद समो सर्याजी, वदे मेघकुमार ।
सुणी देशना वैरागियोजी, ए ससार असार रे मायडी
अनुमती द्यो मुझ आज, सयम नियम अपार रे मायडी. ॥१॥

वछ तूं केणे भोलव्यो रे, श्रेणिक तात नरेश ।
कांई ऊंणो किण दूहव्योरे, हूँ नवि द्यूं आदेश रे जाया
संयम विषम अपार ।
किम निरवाहिस भार रे जाया संयम. ॥२॥

आदि निगोदे हूँ रुल्योजी, सहिया दुःख अणंत ।
सासोश्वासें भव पूरियाजी, तेह न जाणुं अंत हे मायडी.
अ० ॥३॥

हिवणा तूं बालक अच्छेजी, जोवन भयोरे कुमार ।
आठ रमणी परणावियो रे, भोगवो सुख अपार रे जाय हूँ
नवि. ॥४॥

जन्म मरण निरयतणो जी, दुःख न सहियो जान ।
वीर जिणंद वखाणियो जी, ते मैं सुणियो कान हे मायडी.
अ० ॥५॥

वछ कावलिये जीमणोजी, अरस नीरस आहार ।
भुंई पाला नित हींडणोजी, जाणसी तुझ कुमारे जाय हूँ न. ॥६॥

भमतां जीव अनंत भम्योजी, धर्म दुहेलो होय ।
जरा व्यापे जोवन खिसेजी, तव किम करणो होयरे मायडी.
अ० ॥७॥

मृग नयणी आठे रमेजी, तोड़े नवसर हार ।
जोबनभर छोड़ नहींजी, काई मूको निराधार कुमरजी हू न. ॥८॥
हँस तूलिका सेजडीजी, रूप रमणी रस भोग ।
अतिहीं सुँहाली देहडीजी, किम हुए संयम जोगरे
जाया हुँ न. ॥९॥
स्वारथनो सहू ए सगोजी, अरथपखे सहु कोय ।
विषय विषम महुरा कयाजी, किम भोगविये सोयहे मायडी. ॥१०॥
स्वमि २ माऊ पमाय करोजी, मे दीघु तुझ दुःख ।
दिओ आदेश जिम होऊं सुखीजी, वीर चरणे ल्युं दीखहे
मायडी अ० ॥११॥
तन फाटे लोयण झरेजी, दुःखन सहिया जाय ।
वछ सुखी हुवो तिम करोजी, मे दीधो आदेश रे जाया.
सं. ॥१२॥
मणि माणक मोती तज्याजी, तोड्यो नवसर हार ।
मृग नयणी आठे रडेजी, हिन अब करण आधार
नरेसर संयम विषम. ॥१३॥
कुमर भणे सुहलिनी प्रियाजी, बहु दुःख ए संसार ।
नेह तुम्हारो जाणियेजी, जो ल्यो संयम भार रे नारी—
संयम सुख भण्डार. ॥१४॥

रथ शीविका तत्र सभी करीजी, कुंवर धारणी माय ।
श्रेणिक राय उच्छव करेजी, चारित्रल्यो ऋषिराय रे
जाय सं. ॥१५॥

इम जाणी वैरागियोजी, गरजे जेनर नारी ।
कर जोडी पूनों भणेजी, ते तरस्ये संसार हे मायडी अनुमती द्यो
मुझ आज. ॥१६॥

इति

---

(८१) ❀ श्री प्रसन्नचन्द ऋषि की सज्झाय ❀

❀ ऋद्धि हरखजी कृत ❀

राज छंडी रलियामणो रे, जाणी अथिर संसार ।
वैरागे मन वालियो, कांई लीधो संयम भार—
प्रसन्नचन्द प्रणमूं तुमारा पाय, तुमे मोटा मुनिराय प्र. ॥१॥

वनमांहे काउसग्ग रह्योरे, पग ऊपर पग ठाय ।
बांह बेऊं ऊंची करी, सूरज सांमी दृष्टि लगाय प्र. ॥२॥

श्रेणिक वन्दन निसयो रे, वीरजी ने वन्दन जाय ।
देई तीन प्रदक्षिणा, त्रिविध त्रिविध खमाय प्र. ॥३॥

दूर मुख दूत वचन सुणीरे, कोप चढ्यो ततकाल ।
मनशुं संग्राम माडियो, जीव पड्यो जंजाल प्र. ॥४॥

श्रेणिक प्रश्न पूछियो रे, एहनी शी गति थाय ।
भगवत कहे हमणा मरे तो, सातमी नरके जाय प्र. ॥५॥

क्षिण एक अंते पूछियोरे, सर्वार्थ सिद्ध विमान ।
वाजी देवनी दुंदुभी, मुनि पाम्या केवल ज्ञान प्र. ॥६॥

प्रसन्नचन्द मुनि मुगते गयारे, श्री महावीरना शिष्य ।
ऋषि हरख कहे धन्यते, जिण दिठा रे प्रत्यक्ष प्रसन्नचन्द. ॥७॥

इति

---

(८२) ★ श्री द्विमुख राजा की सज्झाय ★

✲ समय सुन्दरजी गणि कृत ✲

नगरी कपिलानो धणीरे, जयराज गुण खाणी ।
न्याये नित पाले प्रजारे, गुणमाला पटराणी
दमूहराय वीनो प्रत्येक बुद्ध ॥१॥

(८४) ★ अष्टमी की सज्झाय ★

※ सुमति विजयजी कृत ※

जीव वारूं छुं मोरा वालमा, परनारी थी प्रीतम जोड रे ।
परनारीनी संगत नहीं भली, तारा कुलमां लागे छे खोटरे
जीव. ॥१॥

जीव आ संसार छे कारमो, जीव दीसे छे आल पंपाल रे ।
जीव इम जाणीने चेतजो, आगलमां छोड़े नाखी छे जालरे
जीव. ॥२॥

जीव मात पिता भाई बेनडी, जीव कुंटब तणो परिवार रे ।
जीव वेती वारूं सहु संगे, पछे होवा कीना जुहार रे जीव. ॥३॥

जीव देहली लगे सगी आंगणे, जीव छेरी लगे सगी माय रे ।
जीव सीमलगे साजन भला, पछी हँस एकेलो ही जाय रे
जीव. ॥४॥

जीव जाताँ थका नहीं जाणियो, जीव नहीं जाण्यो वार तींवार रे ।
जीव गाड़ु भरिया लाकड़ा, वली खोखरी हांडी सार रे जीव. ॥५॥

जीव आठम तप नहीं जाणियो, जीव कीधा छे महोला पाप रे।
जीव सुमति विजय मुनि इम भणे, जीव आवागमन विचार रे
जीव. ॥६॥

इति

---

(८५) ★ दूज की सज्झाय ★

* सुमति विजयजी कृत *

या बीज कहे सुण कान्त मंत घर आवो तो सही, आवो तो सही
रे मारा चेतन आवो तो सही या. टेर।
रतन तीन तुम पास खास किम खोवो छो सही, यों शम संवेग-
को रंग पिया किम धोवो छो सही, धोवो छो सही रे मारा
चेतन. ॥१॥

कुमती कुटिल कुनार भार जोवो छो सही, यों नरक निगोद के-
बीज पिया किम बोओ छो सही, बोओ छो सही रे मेरा
चेतन. ॥२॥

निज स्वरूप रमणे रह्या ज. नवी परनो प्रचार रे गुणवंताजी ।
भाषा समिति थी सुखे थयु ज. ते जाणे मुनिराय हे
गुणवंताजी. ॥२॥

ज्ञानवंत निज ज्ञानथी ज. अनुभव भापक थायरे गुणवंताजी ।
भाषा समिति स्वभावथी ज. अनुभव भापक थायरे
गुणवंताजी. ॥३॥

हवे द्रव्य थी पण महामुनि ज. सावद्य वचननो त्यागरे गुणवंताजी ।
सावद्य विरम्या जे मुनि ज. ते कहीये महाभाग रे
गुणवंताजी. ॥४॥

पर भापण दूरे करी ज. निज स्वरूप ने भासरे गुणवंताजी ।
आनंदघन पदते लहे ज. आतम ऋद्धि उल्लास रे
गुणवंताजी. ॥५॥

---

(८८) ★ तीजी ढाल ★

(राग—वंगला राजा नहीं नमे)

तीजी समिति एषणा नाम, तेणे दीठो आनन्दघन स्वाम
चेतन सांभलो ।
जब दीठो आनंदघन वीर, सहज स्वभावे थयो छे धीर. ॥१॥

वीर थई अरि पुंठे धाये, अरि हतोते नाठो जाय गयो आमलो।
वीरनी सन्मुख कोई न थाय, रत्नत्रय शुं मलवा जाय चे. ॥२॥

अरिनल हवे नथी कांई रेप, निज स्वभावमा म्हाल्यो विशेष.
निरखण लाग्यो निज घरमाय, तव निसामो लीधो त्याय चे. ॥३॥

हवे परघरमा कदीय न जाऊं, परने सन्मुख कदीय न थाऊ।
अेम विचारी थयो घर राय, तव परपरिणिति रोजी जाय चे. ॥४॥

मुनिवर करुणा रस भण्डार, द्वेष रहित हवे लेछे आहार।
द्रव्य थकी चाले छे एम, परपरिणतिनो लीधो नेम चे. ॥५॥

द्रव्य भावशुं जे मुनिराय, समिति स्वभावमां चाल्या जाय।
आनंदघन प्रभु कहीये तेह, दुष्ट विभावने दियो छेह चे. ॥६॥

---

(८९) ★ ढाल चौथी ★

(जगत गुरु हीरजी रे—ए)

चौथी समिति आदरो रे, आदान निखेवणा नाम।
आदानने जे आदर करे रे, निज स्वरुपने ताम स्वरूप-
गुण धारजो रे, धारजो अक्षय अनंत भविक वारजो रे. ॥१॥

निखेवणा ते निवारवुं रे, परवस्तु वली जेह ।
तेह थकी चित्त वालवुं रे, करवा धर्मशुं नेह स्वभाव. ॥२॥
धर्म नेह जब जागियो रे, तब आनन्द जणाय ।
प्रगट्यो स्वरूप विषे हवे रे, ध्याता ते ध्येय थाय स्वभाव. ॥३॥
अज्ञान व्याधि नसाडवा रे, ज्ञान सुधारस जेह ।
आस्वादन हवे मुनि करे रे, तृप्ति न पामे तेह स्वभाव. ॥४॥
स्वरूपमां जे मुनिवरा रे, समिति शुं धरे स्नेह ।
सुमति स्वरूप प्रगटावीने, दीधो कुमतिनो छेह स्वभाव. ॥५॥
काल अनादि अनंतनो रे, हतो सलंगण भाव ।
ते पर पुद्‌गलथी हवे रे, विरक्त थयो स्वभाव स्वभाव. ॥६॥
द्रव्य भाव दोय भेदथी रे, मुनिवर समिति धार ।
आनंदघन पद साधशे रे, ते मुनि गुण भंडार स्वभाव. ॥७॥

---

(६०) ★ ढाल पांचमी ★

(रूडा राजवी—अे देशी)

समिति पंचमी मुनिवर आदरो रे, उन्मारगनो परिहार रे
सुधा साधुजी ।
मुनि मार्ग रूडी परे साधजो रे, पर छोडीने निज संभार रे
सुधा साधुजी. ॥१॥

पारिठावणिया नामे वली जे कह्यु रे, तेतो परिहरवो परभावरे सु.
आदर करवो निज स्वभावनो रे, ए तो अकल स्वभाव कहेवाय रे
सुधा साधुजी. ॥२॥

पर पुद्गल मुनि परठवे रे, विचार करी घट मांय रे।
लोक सज्ञाने जे मुनि परिहर रे, गति चार पछे वोसिराय रे
सुधा साधुजी. ॥३॥

अनादिनो संगवली जे हतो रे, तेनो हवे करे मुनि त्याग रे।
विकल्पने सकल्पने टालना रे, वली जेथया उजमाल र।
सुधा साधुजी. ॥४॥

अनाचीर्ण मुनि परठवे रे, ते जाणीने अनाचार रे।
आचारने वली मुनि आदरे रे, कर्त्ताकार्य स्वरूपी थाय रे
सुधा साधुजी. ॥५॥

षट् द्रव्यनु जाणपणु कह्यु रे, ते जे जाणे आप स्वभावरे।
स्वभावनो कर्त्तावली जे थयोरे, तेतो अनवगाही कहेवाय रे
सुधा साधुजी. ॥६॥

सुमितिशु हवे मुनि म्हालता रे, चालता समिति स्वभावरे।
कुमति थी दृष्टि नही जोडता रे, वली तोडता जे विभाव रे
सुधा साधुजी. ॥७॥

परपरिणत कहे सुण साहेबा रे, तमे मुझने मूकी केम रे ।
कहो मुनि कवण अपराध थी रे, तमे मुझने छोडी अेम रे
सुधा साधुजी. ॥८॥

में मारो स्वभाव नवि छोडियो रे, नथी महारो कोई विभावरे ।
पचरंगी माहरूं स्वरूप छे रे, तेने आदरूं छुं सदा कालरे
सुधा साधुजी. ॥६॥

वर्ण गंध रसादि छोडुं नहिरे, तो स्यो अवगुण कहेवायरे ।
कदी अव स्वभाव न आदरूं रे, सडण विध्वंसन न छंडायरे
सुधा साधुजी. ॥१०॥

सिद्ध जीवथी अनंत गुण कह्यांरे, मारा घरमां जे चेतन रायरे ।
ते सघला मारे वश थई रह्यारे, तमथी छोडीने केम जवायरे
सुधा साधुजी. ॥११॥

तव मुनिवर कहे कुमति सुणोरे, तारूं स्वरूप जाण्युं अमे आजरे ।
तारा स्वरूपमां जिम तुं मगन छे रे, मारा स्वरूपमां थयो हूं आजरे
सुधा साधुजी. ॥१२॥

मारूं स्वरूप अनंतमें जाणियुं रे, तेतो अचल अमल कहेवायरे ।
सुमति थी स्वभावमां रंगरमुं रे, तारा सामुं जोयुं केम जायरे
सुधा साधुजी. ॥१३॥

तारे मारे हवे नहि बनेरे, तमे तमारे घरे हवे जाओरे।
आटला दाहडा हुं बालपणे, हतोरे हवे पण्डित वीर्य प्रगटायो रे
सुधा साधुजी. ॥१४॥

सुमतिशुं मे आदर माडियोरे, एतो बहु गुणवंती कहेवायरे।
सुमतिना गुण प्रगटपणे रे, में तो लीधा उपयोग मांयरे
सुधा साधुजी. ॥१५॥

सांभल-सुमतिना गुण कहूरे, जे अचल अखंड कहेवायरे।
स्थिरतापणुं सुमतिमा घणुरे, तुजमां तो अस्थिरता समाय रे
सुधा साधुजी. ॥१६॥

तारा सुख तो मे हवे जाणियारे, दुःखदायक सदा कालरे।
सारा सुख विभाव कहेवाय छे रे, नथी पुन्य पापनो ख्यालरे
सुधा साधुजी. ॥१७॥

ज्ञानी तो ओहने सुख नवि कहेरे, सुखतो जाणयुं ओक स्वभावरे।
तारा पुंठे पड्या तेतो आथलारे, भव कूपमां पड्या सदायरे
सुधा साधुजी. ॥१८॥

तारू स्वरूप मे बहु जाणियु रे, तुं तो जड स्वरूप कहेवायरे।
जडपणु प्रगट मे जाणियुं रे, तू तो पर पुद्गलमा समायरे
सुधा साधुजी. ॥१९॥

तेनो विवरो प्रगट हवे सांभलोरे, संसार समुद्र अथाहरे ।
तृष्णा रूप जलते मध्ये घणु रे, पण पीवे तृप्ति न थायरे
सुधा साधुजी. ॥२०॥

ते समुद्रनो अधिष्टायक वलीरे, तेतो नामे मोह भूपालरे ।
तेना प्रधान वली पंच छे रे, तेतले त्रेवीश छडीदार रे
सुधा साधुजी. ॥२१॥

राजधानी त्रेवीश जणने आपीकरी, तेनी खबर राखे ते पंच रे ।
राजधानी एवीते मेलवी रे, धर्म रायनु लूटे धन सँच रे
सुधा साधुजी. ॥२२॥

बाह्य धर्मीजो अने आदरे रे, तेने भोलवे ते छडीदार रे ।
वश करी सोंपे मोहरायने रे, मोह करावे प्रमाद प्रचार रे—
सुधा साधुजी. ॥२३॥

तेथी जाये नरक निगोदमां रे, तिहां काल अनादि गमाय रे ।
दृढ धर्मी अेथी नवि चले रे, जेणे कीधा चायक भाव रे ।
सुधा साधुजी. ॥२४॥

प्रमादीने मोह पीठे घणु रे, अप्रमादी घेर नवि जाय रे ।
तेणे पंच महाव्रत आदर्या रे, छोड्या सर्व अनाचार रे
सुधा साधुजी. ॥२५॥

आचारथी हुँ हवे नवि चलूं रे, सुख सुज चितना अभिप्राय रे ।
कुमतिजी ? कहूँ तमने अेटलुं रे, मारा ममरखी छे अनंत कायरे
सुधा साधुजी. ॥२६॥

ते सर्वने दासपणुं दीयो रे, ते साले छे मुझ चित्तमांय रे ।
शुं कीजे पुंठते नवि फेरवे रे, वो पण मुझने दया थाय रे
सुधा साधुजी. ॥२७॥

तेथी देशना बहुविध करूं रे, जिहां चाले मारो प्रयास रे ।
चेतनजी ने बहुपरे शीखवुं रे, तेने वतावुं स्थिरवास रे
सुधा साधुजी. ॥२८॥

तेतो तारे वश फरी न होवे रे, तुने वोसिरावी शिवजाय रे ।
धर्मरायनी आणने अनुसरे रे, तेतो आनन्दघन महाराज रे
सुधा साधुजी. ॥२९॥

इति

[६१] ★ पांच व्यवहार की ढाल ★

※ श्री ज्ञान विमल सूरि कृत ※

(ए छीडी किहां राखी-ए देशी)

श्री जिनवर देवे भविजन हेते, मुगति तणो पंथ दाख्यो ।
ज्ञान दर्शन चारित्र तप चउविध, एथी शिव सुख चाखोरे
आतम ! अनुभव चितमां धारो, जेम भव भ्रमण निवारो रे ।
आतम. ॥१॥

ज्ञान थकी सवि भाव जणाये, दर्शन तास प्रतीत ।
चारित्र आवतां आश्रव रूंधे, पूर्व शोषे तप नितरे आतम. ॥२॥

ज्ञान दर्शन बेहुं सहचारी, चारित्र तस फल कहिये ।
निरासंश तप कर्म खपावे, तो आतम गुण लहियेरे आतम. ॥३॥

ते चारित्र निश्चय थी निज गुण, समिति गुप्ति व्यवहार ।
ज्ञान क्रिया सम्मत फल कहिये, चारित्रनो निरधाररे आतम. ॥४॥

ते व्यवहार कह्यो पण भेदे, पंचम अंग मोझार ।
श्रुतने आणा प्रथम, जीव धारण विचार रे आतम. ॥५॥

केवली मण, पज्जव ने ओही, चवदह पूर्व दश पूर्व ।
नव पूर्व लगे षट् विध आगम, व्यवहारी होय सर्व रे आतम. ॥६॥

शेष पूर्व आचार, प्रकल्पह (क) छेदादिक सवि नाण ।
श्रुत व्यवहार कही जे बीजे, अतिशय विण जे नाण रे
आतम. ॥७॥

देशांतर स्थिर बेहु गीतारथ, ज्ञान चरण गुण वलगा ।
कोई कारणथी मिलन न होवे, तिण हेते कगी अलगा रे
आतम. ॥८॥

प्रश्न सकल पूछेवा काजे, गुणी मुनि पासे मूके ।
तेह (थी) ग्रहीने उत्तर भाखे, पण आशय नवि चूके रे
आतम. ॥९॥

तेनी आणा तहत करीने, जे निःशंक प्रमाण ।
जेम तृषित सर नदी न पामे, पण तस जले तृषा हाण रे
आतम. ॥१०॥

ते आणा व्यवहार कहीजे, ए त्रीजो पण बेहु सरिसो ।
गूढ़ आलोचना पद जे भाख्या, ते प्रायश्चित्त परखो रे
आतम. ॥११॥

जीत व्यवहार सुणो हवे पंचम, द्रव्य क्षेत्र काल भाव ।
पुरुष साहस ने पडिसेवा, गाढ़ अगाढ़ हेतु दाव रे आ. ॥१२॥

इत्यादिक बहुं जाण गीतारथ, तेणे जे शुभ आचरियो ।
आगममां पण जे न निषेध्युं, अविधि अशुद्ध नवि धरियो रे
आतम. ॥१३॥

पूरव चार व्यवहार न बाधे, साधे चारित्र योग ।
पाप भीरू पंचांगी सम्मत, संप्रदायी गुरु लोग रे आ. ॥१४॥

गच्छगत अनुयोगी गुरु सेवी, अनियत वासी आउत्त ।
अे पण गुण संयमनो धारी, तेह ज जीत पवित्तरे आ. ॥१५॥

पासत्थो उसन्नो कुशीलो, संसत्तो अहा छंदो ।
अे पंच दोषने दूर न करे अने, मुनि पणुं भाखे मंदोरे
आतम. ॥१६॥

गुण हीणो ने गुणाधिक सरिखो, थाये जे अन्नाणी ।
दर्शन असार तो चरण किहां थी, अे धर्म दास गणि वाणी रे
आतम. ॥१७॥

गुण पक्षीने गुणनो रागी, शक्ति निधि उजमाल ।
श्रद्धा ज्ञान कथे न करणी, ते मुनि वदु त्रिकालरे आतम. ॥१८॥

निषम काल मांहे पण अे गुण, परखी जे मुनि वंदे ।
प्रवचनने अनुसारिणी किरिया, करतो भवभय छेदेरे आ. ॥१६॥

एह सुत्त व्यवहार तरोनल, शासन जिननु दीपे ।
संप्रति दुप्पसह सूरिलगे अे, कुमित कदाग्रहने जीपेरे आ. ॥२०॥

इण व्यवहारे जे व्यवहरशे, संयमनो खप करशे ।
ज्ञान निमल गुरुने अनुसरशे, ते भवसिंधु ने तरशे रे
आतम ? अ. ॥२१॥

---

(६२) ★ श्री चमा छत्रीशी प्रारम्भ ★

* गणि समय सुन्दरजी कृत *

आदर जीव चमा गुण आदर, म करिश रागने शेप जी ।
समताये शिव सुख पामीजे, क्रोधे कुगति विशेषजी आ. ॥१॥

समता संजम सार सुणीजे, कल्प सूत्रनी साखजी ।
क्रोध पूर्व कोडि चारित्र बाले, भगवंत इणी परे भाखजी श्रा. ॥२॥

कुण कुण जीव तर्या उपसमथी, सांभल तुं दृष्टांतजी ।
कुण कुण जीव भम्या भवमांहे, क्रोध तणे विरतंतजी श्रा. ॥३॥

सोमल ससरे शीश प्रजाल्युं, बांधी माटीनी पालजी ।
गजसुकुमाल क्षमा मन धरतो, मुगति गयो तत कालजी
श्रा. ॥४॥

कुलवालुओ साधु कहातो, किधो क्रोध अपारजी ।
कोणिकनी गणिका वश पडियो, रडवडियो संसारजी श्रा. ॥५॥

सोवनकार करी अति वेदन, वाध्रशुं वींटयुं शीशजी ।
मेतराज ऋषि मुक्ति पोहोंतो, उपशम एह जगीशजी श्रा. ॥६॥

कुरुड कुरुड बे साधु कहाता, रह्या कुणाला खालजी ।
क्रोध करीते कुगते पहोंता, जनम गमायो आलजी श्रा. ॥७॥

कर्म खपावी मुगते पहोता, खंधक सूरिना शिष्यजी ।
पालक पापिये घाणी पील्या, नाणो मनगां रीष जी श्रा. ॥८॥

अचंकारी नारी अचूकी, त्रोड्या पीयुशुं नेह जी ।
बब्बर कुल सह्यां दुःख बहुलां, क्रोध तणां फल एहजी श्रा. ॥९॥

नावणे सर्व शरीर निखुरयु, तत क्षण छोड्यां प्राणजी ।
साधु सुकोशल शिव सुख पाम्या, एह क्षमा गुण जाणजी
आ. ॥१०॥

कुल चाडाल कहीजे निहुमे, निरति नहीं कहे देवजी ।
ऋषि चंडाल कहिजे वढतो, टालो वेदनी टेव जी आ. ॥११॥

सातमी नरक गयो ते ब्रह्मदत्त, काढी ब्राह्मण आखजी ।
क्रोध तणा फल कडुआ जाणी, राग द्वेष थी नाखजी आ. ॥१२॥

खंधक ऋषिनी खाल उतारी, सह्यो परिसह जेहजी ।
गरभ वासना दुःख थी छूट्यो, सबल क्षमा गुण तेहजी
आ. ॥१३॥

क्रोध करी खधक आचारिज, हुआ अग्निकुमार जी ।
दंडक नृपनो देश प्रजाल्यो, भमशे भवह मझारजी आ. ॥१४॥

चण्डरूद्र आचारिज चलता, मस्तक पीडित अणगारजी ।
क्षमा करता केवल पाम्यो, नव दीक्षित अणगारजी आ. ॥१५॥

पाच वार ऋषि ने सताप्यो, आणी मनमा द्वेष जी ।
पच भव सीस दयो नद नाविक, क्रोध तणा फल देखजी
आ. ॥१६॥

सागरचंदनुं शीश प्रजाली, निशि नभसेन नरिंद जी ।
समता भाव धरी सुरलोके, पहुंतो परमानंदजी आ. ॥१७॥

चंदना गुरुणीये घणुं निभ्रंछी, धिग् धिग् तुझ अवतारजी ।
मृगावती केवल सिरि पामी, एह क्षमा अधिकारजी आ. ॥१८॥

सांब प्रद्युम्न कुंवर संताप्यो, कृष्ण द्वैपायन साहजी ।
क्रोध करी तपनुं फल हार्यो, कीधो द्वारिका दाहजी आ. ॥१९॥

भरतने मारण मूठी उपाडी, बाहूबल बलवंत जी ।
उपशम रस मन मांहे आणी, संजम ले मतिसंत जी आ. ॥२०॥

काउसग्गमां चडियो अति क्रोधे, प्रसन्नचंद्र ऋषिराय जी ।
सातमी नरक तणां दल मेल्यां, कडुआं तेण कषायजी
आ. ॥२१॥

आहार मांहे क्रोधे ऋषि थूंक्यो, आण्यो अमृत भावजी ।
कुरग डुये केवल पाम्युं, क्षमा तणो परभाव जी आ. ॥२२॥

पार्श्वनाथने उपसर्ग कीधा, कमठ भवांतर धीठजी ।
नरक तिर्यंच तणां दुःख लाधां, क्रोध तणा फल दीठजी
आ. ॥२३॥

क्षमावंत दमदंत मुनीश्वर, वनमां रह्यो काउसग्ग जी।
कौरव कटक हण्यो ईंटाले, त्रोड्या कर्मना वर्गजी आ. ॥२४॥

शय्यापालक काने तरुओ, नांख्यो क्रोध उदीरजी।
बेहु काने खीला ठोकाणा, नवि छूटा महावीरजी आ. ॥२५॥

चार हत्यानो कारक हूंतो, दृढप्रहारि अतिरेकजी।
क्षमा करीने मुक्ते पहोंतो, उपसर्ग सह्या अनेकजी आ. ॥२६॥

पहुरमाहे उपजतो हार्यो, क्रोधे केवल नाण जी।
देखो श्री दमसार मुनीसर, सूत्र गुण्यो उठाणजी आ. ॥२७॥

सिंह गुफावासी ऋषि कीधो, स्थूलि भद्र उपर कोपजी।
वेश्या वचन गयो नेपाले, कीधो संयम लोपजी आ. ॥२८॥

चन्द्रावतसक काउसग्ग रहियो, क्षमा तणो भण्डार जी।
दासी तेल भर्यो निशी दीवो, सुरपदवी लहे सारजी आ. ॥२९॥

इम अनेक तर्या त्रिभुवन मे, क्षमा गुणे भवि जीवजी।
क्रोध करी कुगते ते पहोता, पाडंता मुखरीव जी आ. ॥३०॥

विष हालाहल कहीये विरुओ, ते मारे एक वारजी।
पण कसाय अनती वेला, आपे मरण अपार जी आ. ॥३१॥

क्रोध करतां तप जप कीधां, न पडे कांई ठाम जी ।
आप तपे परने संतापे, क्रोधशुं केहो काम जी आ. ॥३२॥

क्षमा करतां खरचन लागे, भांगे क्रोड़ कलेशजी ।
अरिहंत देव आराधक थाये, व्यापे सुजस प्रदेश जी आ. ॥३३॥

नगर मांहै नागोर नगीनो, जिहां जिनवर प्रसादजी ।
श्रावक लोग वसे अति सुखिया, धर्म तणे प्रसादजी आ. ॥३४॥

क्षमा छतीशी खँते कीधी, आतम पर उपगार जी ।
सांभलतां श्रावक पिण समज्या, उपशम धर्यो अपार जी
आ. ॥३५॥

युग प्रधान जिणचंद सूरिशर, सकलचन्द तसु शिष्यजी ।
समय सुन्दर तसु शिष्य भणे इम, चतुर्विध संघ जगीशजी
आदर जीव क्षमा गुण. ॥३६॥

इति

———

(९३) ★ क्रोध की सज्झाय ★

(समय सुन्दर जी कृत)

क्रोध कियो आछो नहीं, आभडतां लक्ष्मी नासेजी ।
दुःख दारिद्र घरमें घसे, कोडोना पाप उपार्जेजी।
"क्षमा रे किया सुख ऊपजे जी" ओ भाख्यो श्री जगदीशो जी,
जे सुख चाहो जीवको थे, कोईमत करजो रीसोजी क्षमा. ॥१॥

गाल वेचीजे राडमे, लाडु नहीं वेचीजे जी ।
नालो मिटी वैरी हुवे, इसडो काम न कीजे जी क्षमा. ॥२॥

बाप बेटो भाई भाई, सासु वहु गुरु चेलोजी ।
क्रोध थकी उछल पडे, न जाणे नेडी सगाईजी क्षमा. ॥३॥

क्रोधी नर कालो पडे, आ सघरी नात बिगाडेजी ।
आगोरे पीछो जोवे नहीं, लागीणी प्रीत घटाडेजी क्षमा. ॥४॥

कोईरे वचन करडो कहे, अथवा ते आवो पीछोजी ।
दवने दाध्ये ते पागरे, नही पागरे वचनारो विंध्योजी क्षमा. ॥५॥

ज्यारे घरमे एक क्रोधी, सवलाने संतायेजी ।
ज्यारे घरमे सघला क्रोधी, ज्यारा किसा हवाला जी क्षमा. ॥६॥

तपस्या तपेने रीस करे, आ आंखमां मरच किम आंजेजी ।
तपस्या विणसे क्रोधथी, आ दूध विणासे कांजीजी क्षमा. ॥७॥

क्षमारे किया शंका नहीं, आगे फल लागे आछाजी ।
खंधक ऋषि क्षमा करी, वेनोई खाल उतारीजी
राय प्रदेशी देखने, ओ तत्क्षण लीधो मोक्षजी क्षमा. ॥८॥

समय सुन्दर कहे क्रोधने, तमे दीजो देसोटो जी ।
क्रोध तजे शिवपुर लहे, पासे भवनो पारजी क्षमा. ॥९॥

---

(९४) ★ श्री उपदेश सित्तरी सज्झाय ★

❋ श्री सार मुनि कृत ❋

उत्पत्ति जो जो आपणी, मनमांही विमास ।
गरभावासे जीवडो, वसियो नव मास
उत्पत्ति जो जो आपणी. ॥१॥

नारी तणे नाभी तले, जिन वचने जोय ।
फल तणी जिम नालिका, तामे नाडी छे दोय उत्पत्ति. ॥२॥

तसु तले योनि कहीये, वर फूल समान ।
आमातणी माजर जिस्यो, तिहाँ मॉस प्रधान उत्पत्ति. ॥३॥

रुधिर स्रवे तिण ठामथी, ऋतु काल सदैव ।
रुधिर शुक्र जोगे करी, तिहाँ उपजे जीव उत्पत्ति. ॥४॥

जे अपावन पवने करी, वासित-दुरगध ।
तिणे थानक तु ऊपनो, हवे हुओ मदंध उत्पत्ति. ॥५॥

नाली नास तणी घणु, भरिये रू वाल ।
ताती लोह शीलाक ते, जाले ततकाल उत्पत्ति. ॥६॥

तिम महिलानी योनिमें, छे नव लख जीव ।
पुरुष प्रसगे ते सहु, मरी जाय सदीव० उत्पत्ति. ॥७॥

उपजे नर नारी मले, पंचेंद्रिय जेह ।
तेह तणी सख्या नही, तजो कारज एह उत्पत्ति. ॥८॥

नव लख जीव टके, तिहाँ उत्कृष्टी वार ।
जीव जघन्यपणे टके, एक दो त्रण चार उत्पत्ति. ॥९॥

जीव जघन्य तिहाँ रहे, मुहुरत परिमाण ।
बार वरसनी स्थिति, तिहाँ उत्कृष्टी जाण उत्पत्ति. ॥१०॥

तिणे गरमें कोई जीवडो, इम कहे जगदीश ।
फरी मरी आवे तो रहे, संवत्सर चौवीश उ. ॥११॥

महिला वरस पंचावने, कहिये निर्बीज ।
पचोतर वरस पछे, थाए पुरुष अबीज उ. ॥१२॥

जिमणी कुखे नर वसे, तिम वामी नार ।
वच्चे नपुंसक जाणिये, जिन वचने विचार उ. ॥१३॥

हवे सामान्य पणे इहाँ, आव्यो गर्भावास ।
सात दिवस उपर रहे, नरगति नव मास उ. ॥१४॥

आठ वरस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टो काल ।
गर्भावासे भोगव्या, इम बहु जंजाल उ. ॥१५॥

कार्मण काये करि लीयो, पहिलो ते आहार ।
शुक्र अने शोणित तणो, नहिं झूठ लगार उ. ॥१६॥

पर्यापति पूरी नही, तिहाँ विसवा वीश ।
तिणे आहारे तनु थयो, औदारिक अरु मीस उ. ॥१७॥

पवन आवे उदर थकी, ते उपजावे अंग ।
अग्नि करे थिर तेहने, जल सुरस सुरंग उ. ॥१८॥

कठिनपणुं पृथिवी रचे, अवगाह आकाश ।
पाचे भूत शरीरनो, एम करे प्रकाश उ. ॥१९॥

बार मुहूर्त ऋतु पछे, मिलसे नर नार ।
गर्भ तणी उत्पत्ति तिहाँ, नही अवर प्रकार उ. ॥२०॥

कलल हुवे दिन सातमे, अर्बुद दिन सात ।
अर्बुद थी पेशी वधे, घन-मास कहात उ. ॥२१॥

मास तणी गोठी हुवे, अडतालीश टंक ।
प्रथम मासे जिनवर कहे, मनम धरो संक उ. ॥२२॥

रुधिर मास बीजे हुवे, हवे त्रीजे मास ।
कर्म तणे योगे करी, माताने मन आश उ. ॥२३॥

चौथे मासे मातना, परिणमे सहु अंग ।
हाथ अने पग पाचमे, तिन मस्तक संग उ. ॥२४॥

पित्त रुधिर छठे पडे, सातमे रस संच ।
नर-धमणी नस सातमे, पेशी मय पच उ. ॥२५॥

रोमराई पण सातमे, साड़ी तिन क्रोड ।
उपजे ऊणा केटले, इम आगम जोड उ. ॥२६॥

आठमें मासे नीपनु, एम सकल शरीर ।
ऊंधेशिर वेदन सहे, जंपे श्री जिन वीर उ. ॥२७॥

शोणित शुक्र सलेपमां, लघुने वडी नीत ।
वात पित्त कफ गर्भमें, ए थाये इण रीत उ. ॥२८॥

मात तणी टूंडी लगे, बालकनुं नाल ।
रस आहार तणो तिहाँ, आवे ततकाल उ. ॥२९॥

जननी लेवे आहार ते, जाए नाडो नाड ।
रोम इन्द्री नख चखवधे, तिम मज्जाने हाड उ. ॥३०॥

सविहु अंगे उल्लसे, सर्वांग आहार ।
कवल आहार करे नहीं, गर्भे रह्यो विचार उ. ॥३१॥

ते गर्भे किण जीवने, थाय ज्ञान विभंग ।
अथवा अवधि कहीजिये, तिणे ज्ञान प्रसंग उ. ॥३२॥

कटक करी वैक्रिय पणे, जूझी नरके जाय ।
को जिन वचन सुणी करी, मरी सुर पण थाय उ. ॥३३॥

ऊंधे मुखे गोडा हिये, सहेतो बहु पीड ।
दृष्टि आगल विहुं हाथशुं, रहे मूठी भीड उ. ॥३४॥

नर विण वसा जलादिके, उपजे ओधान ।
अथवा विहुँ नारी मल्यां, कह्यो गर्भ विधान उ. ॥३५॥

कोई उत्तम चिंतवे, देखी दुःख रास ।
पुण्य करूं परो नीकली, नावुं गर्भावास उ. ॥३६॥

ऊ ठ कोडी सूई अगमा, कोई चांपे समकाल ।
तिणथी गर्भमा अठगुणी, सहे वेदना वाल उ. ॥३७॥

माता भूखी भूखीयो, सुखिणी सुख थाय ।
माता सूते ते सुवे, परवश दिन जाय उ. ॥३८॥

गर्भथकी दुःख लखगणुं, जनमे जिण वार ।
जनम थये दु.ख विसर्यु, धिक मोह विकार उ. ॥३९॥

उपज्यो अशुचि पणे तिहाँ, मल मूत्र कलेश ।
पिंड अशुचि करी पूरियो, नहि शुचि लव लेश उ. ॥४०॥

तुरत रूदन करतो थको, जनमे जिणवार ।
माता पयोधरे मुख ठवे, पिये दूध तेवार उ. ॥४१॥

दीसे दिन दिन दीपतो, करे रग अपार ।
लाड कोड माता पिता, पूरे सुविचार उ. ॥४२॥

छिद्र बारह नारीने, नरना नव जाण ।
रात दिवस वहेता रहे, चेतो चतुर सुजाण उ. ॥४३॥

सात धातु साते त्वचा, छे सातशे नाड ।
नवशे नारा छे पिंडमा, तिम त्रणशे हाड उ. ॥४४॥

संधि एकसो साठ छे, सत्तोत्तेर सो मर्म ।
तीन दोष पेशी पांचशे, ढाक्यां छे चर्म उ. ॥४५॥

रुधिर सेर दश देहमां, पेशाव सरीष ।
सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष उ. ॥४६॥

पित्त टांक चोसट छे, वीरज बत्तीश ।
टांक बत्तीश सलेषमां, जाणे जगदीश उ. ॥४७॥

इण परिमाण थकी जदा, ओछो अधिक थाय ।
व्यापे रोग शरीर में, नवि चले तव काय उ. ॥४८॥

पोष्यो पहिले दशके, इम वाध्यो अंग ।
खान पान भूषण भलां, करे नव नव रंग उ. ॥४९॥

हवे बीजे दशके भणे, विद्या विविध प्रकार ।
त्रीजे दशके तेहने, जाग्यो काम विकार उ. ॥५०॥

जिण थानक तुं ऊपन्यो, तिणसें मन जाय ।
चोथे दशके धनतणा, करे कोडि उपाय उ. ॥५१॥

पहोतो दशके पांचमे, मनमां ससनेह ।
बेटा बेटी ने पोतरा, परणावे तेह उ. ॥५२॥

छठे दशके प्राणियो, वसी परवश थाय ।
जरा आवी यौवन गयु, तृष्णा तोय न जाय उ ॥५३॥

आव्यो दशके सातमे, हवे प्राणी तेह ।
नल भागयुं बूढो थयो, नारी न धरे नेह उ. ॥५४॥

आठमे दशके डोसलो, खुलिया सहु दंत ।
कर कपावे शिर धुणे, करे फोकट खंत उ. ॥५५॥

नवमे दशके प्राणियो, तन शक्ति न क्रे ।
सांखे वचन सहु तणा, दिन झूरता जाय उ. ॥५६॥

खाट पड्यो खूं खूं करे, मुगालो देह ।
हाल हुकम हाले नहीं, दिये परिजन छेह उ. ॥५७॥

आस गले वेपड मिले, पडे मुँहडे लाल ।
बेटा बेटी ने नहू, न करे संभाल उ. ॥५८॥

दशमे दशके आवियो, तन पूरी आय ।
पुण्य पाप फल भोगवी, प्राणी पर भव जाय उ. ॥५९॥

दश दृष्टांते दोहिलो, लही नरभव जाय ।
श्री जिन धर्म समाचरे, ते पामे भवपार उ. ॥६०॥

तरुण पणे जे तप तपे, पाले निर्मल शील ।
ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील उ. ॥६१॥

कोडी रतन कवडी साटे, कांई गमे रे गमार ।
धर्म विना ए जीवने, नही को आधार उ. ॥६२॥

काया माया कारिमी, कारिमो परिवार ।
तन धन जोवन कारिमो, साचो धर्म संसार उ. ॥६३॥

चउदे राज प्रमाण ए, छे लोक महंत ।
जनम मरण करी फरसीयो, जीव वार अनंत उ. ॥६४॥

आप स्वारथीया सहु, नहीं केहनो कोय ।
निज स्वारथ विण पूगतां, सुत पण रिपु होय उ. ॥६५॥

जरा न आवे जिहां लगे, जिहां लगे स्वस्थ शरीर ।
धर्म करो जीव तिहां लगे, होई साहस धीर उ. ॥६६॥

आरज देश लह्यो हवे, लाधो गुरु संजोग ।
अंग थकी आलस तजो, करो सुकृत संजोग उ. ॥६७॥

श्री नेमीराज तणी परे, चेतो चित्त मांहि ।
स्वारथनो सहु को सगो, कोई किणरो नांहि० उ. ॥६८॥

भोग सजोग तजी सहुं, थया जे अणगार ।
धन धन तसु माता पिता, धन धन तस अवतार उ. ॥६९॥

सुरतरु सुरमणि सारिखो, सेवो श्री जिन धर्म ।
जिण थी सुख संपत्ति वधे, कीजे तेहज कर्म उ. ॥७०॥

तंदुल वेयालिया मे अछे, एहनो अधिकार ।
तिणथी उद्धरीने कह्यो, नहीं झूठ लगार उ. ॥७१॥

कलश

एह जैन धर्म विचार साभली, लहिये संजम भार ए ।
वली सिहनी परे सदा पाले, नियम निरतिचार ए
ससारनां सुख भोगवी, ते शीघ्र ले हे भवपार ए
श्रीरत्न हर्षशुं शिष्य रगे, इम कहे श्रीसार ए उ. ॥७२॥

---

(१) ☆ विभाग दूसरा ☆

* उपदेशिक सज्झाय *

(संत संगतनु पद)

लोढु लाल बने अग्नि संगे, पण रातो रहे क्षणवार ।
जो निकले वार, संगत एनी शुं करे जेनु अन्तर
जाण कठोर संगत एनी शुं. ॥१॥

घृत दूध साकर थी सिंचो सदा, पण निंवडानी कडवास,
नवि जाय । मधुर नवि थाय संगत एनी शुं. ॥२॥

बाहिर मेघ वर्षे वहुजोर थी, पण मग सेलियो न भिजाय,
वीजा गली जाय । संगत एनी शुं. ॥३॥

चन्दन वृक्षनी मूले विंटी रह्यो, मणिधर न मूके स्वभाव ।
जाण्यो न प्रभाव संगत एनी शुं. ॥४॥

पानी मांहे पड्यो रहे सर्वदा, कालमिठ तणो कोर ।
भिजायन कोर संगत एनी शुं. ॥५॥

आंधण उकलतां मांही बोरिये, कण कोरडियो न रंधाय ।
विजा गली जाय संगत एनी शुं. ॥६॥

सरने निर्मल नीरे नवरावीये, पडे रास देखी ततकाल ।

आणी मतवाल संगत एनी शुं. ॥७॥

धोवे सोमण साबु साथे लई, पण कोयलो सफेद नवि थाय ।

कालम नवि जाय संगत एनी शुं. ॥८॥

काला रंगनुं कापडो लई करी, राता रंगमा बोल जबोल ।

मिटे नवि डोल संगत एनी शुं. ॥९॥

कागे हंस तणी संगत करी, नवि चुकयो पोतानो चरित्त ।

अवली एनी रीत संगत एनी शुं. ॥१०॥

झरमर झरमर मेउला वरसी रह्या, निली कंचन थई वनराय ।

जवासो सुकाय संगत एनी शुं. ॥११॥

दुर्जन सज्जननी मोहबत करी, पण अन्तर कपट न जाय ।

सज्जन नवि थाय, संगत एनी शुं. ॥१२॥

कस्तुरी कपुरनी गजमां, कदी डुंगरी दाटे कोय ।

सुगन्धी नथी होय संगत एनी शुं. ॥१३॥

कस्तुरीना क्यारामां रोपता, नवि जाय लसन केरी वास ।

दुष्ट जेनुं नाम संगत एनी शुं. ॥१४॥

सती सद् गुणावलीनां संगमां, कदी दुष्टाने नावे रंग ।
खोटा जेना ढंग संगत एनी शु ं. ॥१५॥

गाढ़ अज्ञानी ज्ञान पामे नहीं, कहे संत समागम आम ।
भणे मुनि श्याम संगत एनी शु ं करे. ॥१६॥

इति

---

(२) ★ जीवने कायानो संवाद–सज्झाय ★

* उदय विजयजी कृत *

(तर्ज—चेती तो चेताऊं तने रे०)

कामण गारी काया नारी, ते करी मारी खुवारी ।
गयो नर भव हारी रे, कृतघ्नी काया. ॥१॥

रात दिन पाली पोषी, माल भर्यों ठांसी ठांसी ।
अन्ते करी भारी हांसीरे कृतघ्नी. ॥२॥

मालादि उडावी खाधा, लगारे न लिधी बाधा ।
छतां तारा टूट्या सांधारे कृतघ्नी. ॥३॥

सारू सारूं खाऊ पिऊ, पथारी पथारी सोउं ।
निरंतर नाऊं धोउं रे कृतघ्नी. ॥४॥

विलास कराव्या घणा, शोभामा न राखी मणा ।
तारे माटे जीवो हण्यारे कृतघ्नी. ॥५॥

भोलापणुं मारूं धारी, फजेती करावी मारी ।
अन्ते निकली नठारी रे कृतघ्नी. ॥६॥

रात दिन करी सेवा, खवराव्यां मीठा मेवा ।
कराव्या ठठारा केवा रे कृतघ्नी. ॥७॥

पुजारी हूँ थयो तारो, धर्म नहीं दिल धार्यो ।
बोजो पापनो वधार्यो रे कृतघ्नी. ॥८॥

तारी साथे संग कीधो, कुमति नो पंथ लीधो ।
छता तेवो दगो दीधो रे कृतघ्नी. ॥९॥

वेमना न दीधी मांखी, रोगथी बचावी राखी ।
तेतो केवली छे साखी रे कृतघ्नी. ॥१०॥

जे जे कीधुं तेते लीधुं, होठथी पडतुं ज लीधु ।
तोय उतर्युं नहीं सीधुं रे कृतघ्नी. ॥११॥

फटको ते मोटो दीधो, दुःखी दुःखी मने कीधो ।
सीधो नरकमा लीधो रे कृतघ्नी. ॥१२॥

काया कहे सुण भोला, खानारी हूँ आखा कोला ।
गगडावुं मोटा गोला रे चे. ॥१३॥
सार: संगे जेह राच्यो, तेने मारूं हुँ तमाचो ।
तोय मुकुं नहीं माचोरे चे. ॥१४॥
अमारी छे जड़जाती, रहुं रात दिन खाती ।
तोज रहुँ मन माती रे चे. ॥१५॥
स्त्री अने पुरुष वेद, मारोने तारो भेद ।
तेमां शाने धरे खेद रे चे. ॥१६॥
बांध्या जेवा तारी हाथे, तेतो आवे तारी साथे ।
तेमां नही मारी माथे रे चे. ॥१७॥
आजथी तारोने मारूं, अंतर छे न्यारूं न्यारूं ।
तेने नहीं दिल धारूं रे चे. ॥१८॥
गोजारी कायानी वाणी, सांभलजो भवि प्राणी ।
तेनो तजो संग जाणी रे चे. ॥१९॥
कायाली मायाने तजो, नीतिनो शृंगार सजो ।
उदयथी प्रभु भजोरे चे. ॥२०॥

इति

(३) ★ माया की सज्झाय ★

* उदय सागरजी कृत *

(तर्ज—मथुरामां खेल खेली आव्या हो त्या क्या रमी आव्या)

माया मोकाण कर नारी, मुंझावो छो शाने मायामां ।
दुर्गतिमा दोरनारी मुंझावो, छो शाने मायामा टे०
माया छे कामण माया छे मोहन, माया छे जगनी धुतारी मुं०
नाना मोटाने लागे छे व्हाली, लोभीने लागे छे प्यारी मु . ॥१॥

रंग बिरंगी देखाव आपी, जीवोने भ्रम करनारी । मुं०
आयु जगत फरी-पत्यु मायामा, अन्ते रडावी देनारी मु. ॥२॥

मारूं मारूं करी राखी माया तो, माठी गती कर नारी । मु०
मायाना फंदमां फाट वधारी, शांतिने करती विसारी मु. ॥३॥

मम्मण शेठने नन्द राजाना, हालता जुवो विचारी । मु०
क्षणमा रायने रंक बनावे, क्षणमा करती भिखारी मु. ॥४॥

माया ते कोईनी थई नथीने, नहीं थवानी तमारी । मु०
आने नमार्गने खाले अमार्ग, त्याथी जीवानी थनारी मु. ॥५॥

वेगमां विजली सरखी गति छे, झलकारो दईने जनारी । मु०
आखी आलमने मोह लगाडी, मार्गथी मुकावनारी मु. ॥६॥

दौलत आपीने वे लात मारे, एवी मायानी खुवारी । मु०
धरतीमां राखी मायाने दाटी, छतां नहींज करनारी मु. ॥७॥

जो जो मायानो विश्वास करतां, अन्ते तो छेहने देनारी । मु०
धोली रूपे थई पीली गिनीमां, रातीमां आंबु थनारी मु. ॥८॥

नोट रुपये रही रंगे लीलीमां, लोकोने ललचावनारी । मु०
पुण्य विनाना प्राणीना घरमां, धन कोलसा कर नारी मु. ॥९॥

मायानी थिरता करवी पडेतो, पुण्य करो नर नारी । मु०
हैयानी होली कलेजानो झगडो, माया छे सलगाव नारी मु. ॥१०॥

संसारी साधु जोगी सन्यासी, नग्न पतिने भिखारी । मु०
माया ते फंदमां फंसावी पाड्या, धर्मनु धन लूट नारी मु. ॥११॥

मायानो पास लाग्योजे जनने, ते गया नर भव हारी । मु०
मायाने मुकी वनमां वसेला, फंसावी त्याँ पाड़ नारी मु० ॥१२॥

दुनियानाँ लोको बनी बैठाछे, मायानी पाछल पुजारी । मु०
माया ए मुँझवी कोने न मार्या, कोनी करी न खुवारी मु. ॥१३॥

मायाना सगथी रह्या जे अलगा, ते नामनी वलीहारी । मुं०
मायानो मोह मनथी मुके तो, नी त उदय व र नारी
मुं झावो छो शाने मायामा मु. ॥१४॥

---

(४) ★ श्री कर्म ऊपर सज्जाय ★

※ दान मुनिजी कृत ※

(तज—कपुर हो अति उजलो)

सुख दुःख सरखा पामीये रे, आपद सपद होय ।
लीला देखी पर तणी रे, रोपम करजो कोयरे प्राणी
मन नाणो निपमाद एतो कर्म तणा ए काम रे प्राणी. ॥१॥

फलने अहारे जीवियारे, वारे वरस वन राम ।
सीता रावण लई गयोरे, कर्म तणा ए काम रे प्राणी. ॥२॥

नारी पाखे वन एकलो रे, मरण पाम्यो मुकुन्द ।
नीच तणे घर जल भर्यो रे, शीस धरी हरिश्चन्द्र रे प्राणी. ॥३॥

नल दमयंती परिहरी रे, रात्रि समय वन मांय ।
नाम ठाम कुल गोपियोरे, नले निर वाह्यो कालरे प्राणी. ॥४॥
रूप अधिक जग जाणिये, चक्री सनतकुमार ।
वरस सातशो भोगवीरे, वेदना साल प्रकाररे प्राणी. ॥५॥
रूपे वली सुर सारिखारे, पाँडव पांच विचार ।
ते वन वासे रडवड्यारे, पाम्या दुःख-संसाररे प्राणी. ॥६॥
सुरनर जस सेवा करे रे, त्रिभुवन पति विख्यात ।
ते पण-कर्म विटंबिया रे, तो माणस केई मातरे प्राणी. ॥७॥
दोष न दीजे कोइने रे, कर्म विटंबणा हार ।
दान मुनि कहे जीवने रे, धर्म सदा सुख कार रे प्राणी. ॥८॥

इति

---

(५) ★ श्री वणजारा की सज्झाय ★

* मुनि पद्म विजयजी कृत *

नर भव नगर सोहामणो वडझारा रे, पामीने करजे व्यापार
अहो मोरा नायक रे ।
सतावन संवर तणी व० पोठी करजे उदार अहो मोरा. ॥१॥

शुभ परिणामे विचारता व० किरियाणा बहु मूल अहो० ।
मोक्ष नगर जाता भणी व० करजे चित्त अनुकूल अहो. ॥२॥

क्रोध दावानल ओलवे व० माने विषम गिरिराज अहो० ।
ओलघजे हलवे करी व० सावधान करजे काज अहो. ॥३॥

वश जाल मायातणी व० नवि करजे विशराम अहो० ।
रेवाडी मनोरथ भट तणी व० पूरणनु नवि काम अहो. ॥४॥

राग द्वेष दोय चोरटा व० वाटमा करजे हेरान अहो० ।
विविध कार्य उल्लासथी व० ते हरजे र ठाम अहो मोरा. ॥५॥

एम सहु विघ्न निवारीने व० पहोंचजो शिवपुर ग्राम अहो० ।
क्षय उपशम जे भावना व० पीठे भरिया गुणराग अहो. ॥६॥

क्षायक भावे ते खरो व० लाभ होशे तेह अपार अहो० ।
उत्तम विजय इम कहे व० पद्म नमे वार वार अहो मोरा. ॥७॥

---

(६) ★ मन की सज्झाय ★

※ आनन्दघन जी म. कृत ※

क्या करूं मन स्थिर नहीं रहता, अधर फिरे मन मेरा रे वारी० ।
इस मन को वेर वेर समझाया, समझ २ मन मेरा रे मैं. ॥१॥

बैठ कहुंतो मन उठ चलता है, मन दोरा मन धीरारे वारी० ।
पाव पलक मन स्थिर नहीं रहता, कौन पतियारा मन तेरा रे मैं. ॥२॥

कूड कपट महा विषयका भरिया, परनारी संग फिरिया रे वारी०
भव भव में जीव हाल भटकतां, फोगट फेरा फिरियारे मैं. ॥३॥

कुटम्ब कबीलो माल खजाना, इसमें नहीं कोई तेरा रे वारी० ।
सांज भई जब उठ चलेगा, जंगल होगा डेरारे मैं. ॥४॥

कहत आनन्दघन मन समजावो, मन कायर मन शूरारे वारी० ।
मनका खेल अजर का प्याला, पीवे सो पीवण हारारे वारी०
मैं क्या करूं मन स्थिर नहीं रहता अधर. ॥५॥

---

(७) ★ पुण्य फलनी सज्झाय ★

※ मुनि लावण्य समय कृत ※

(भ्रज—सुग्रीव नयर सोहामण जी)

एक घर घोडा हाथीयाजी, पायक सख्या न पार;
म्होटा मन्दिर मालीयाजी, निश्र तणो अधार रे, जीवडा.
दीधाना फल जोय, निण दीधा केम पामीयेजी,
हृदय विमासी जोयरे जीवडा. ॥१॥

भरीयाने सहुको भरेजी, वुठ्या वरसे मेह;
सुखियाना सहुको सगाजी, दुःखिया शु नहीं नेहरे
जीवडा. ॥२॥

बेहु नर साथे जनमियाजी, श्रेनडो अन्तर काय;
एक माथे मुली वहेजी, एक तणे घर राजरे जीवडा. ॥३॥

एक सुखिया दीसे सदाजी, दु खिया एकज जोय;
सुख दुःख वेहु आतरू जी, पुण्य तणा फल जोयरे जीवडा. ॥४॥

सेज सुंवाली पालखीजी, भोजन कूर कपुर;
एकने कुकरा ढोकलाजी, पेटने पहोंचे पूर रे जीवडा. ॥५॥

एक घर आगण मलपतीजी, मीठा बोली रे नार;
एक घर कालो कुडीजी, कोय न चडे घरवार रे जीवडा. ॥६॥

एक चढे घोडे हंसलेजी, एक आगल हुई जाय;
एक नर पोढे पालखीजी, एक उभराणे पाय रे जीवडा. ॥७॥

एक घर बेटा सुन्दरुजी, राखे घरनां सूत;
एक नर दीसे वांभियाजी, एक कुल खांपण कुपूत रे जी. ॥८॥

एक रेशम टोपली पहेरणेजी, माथे मोलीडां सार;
एक तणे नहीं पहेरवाजी, ओढण अति सफार रे जीवडा. ॥९॥

एक चिहुँ मांहे जाणियेजी, विश्व मांहे चोशाल;
एकनु नाम न जाणियेजी, नाम होय धनपाल रे जीव. ॥१०॥

दोष म धरजो मानवीजी, दैव न देज्यो रे गाल;
जो वावी आव्या कोदराजी, तो किम लणशो शालरे जी. ॥११॥

दत्त विण गर्व न कीजियेजी, भोला मुरख लोक;
जिम दीपक तलज विनाजी, तणमां थाये फोकरे जीवडा. ॥१२॥

पात्र कुपात्रनो आंतरोजी, जोज्यो करीने विचार;
शालिभद्र सुख भोगवेजी, पात्र तणे अनुसार रे जीवडा. ॥१३॥

आंण म खंडो जिनतणी जी, शुभ अशुभ फल जाण;
मुनि लावण्य समय भणेजी ए सवी पुण्य प्रमाण रे जी. ॥१४॥

(८) ★ तेरह काठियो की सज्झाय ★

(तर्ज—झांझरिया मुनिवर धन्य धन्य तुम अवतार)

सोभागी भाई काठिया तेरे निवार—
काठिया तेरे निवार सोभागी भाई,
उत्तम पदवी तो लहोजी, जय जय जपे रे ससार,
सौभागी भाई काठिया तेरे निवार. ॥१॥

साधु समीपे आवताजी, आलस आणे अग,
धर्म कथा नवी सांभलेजी, मोडे अ ग बहु भग सौ. ॥२॥

बीजो मोह महाबली जी, पुत्र कलत्र शु लीन;
प्राणी धर्म न आचरेजी, घर धन ने अधीन सौ. ॥३॥

तीजो अवज्ञा काठियोजी, शु जाणे गुरु अेह,
व्यापारे सुख सपजेजी, कींजे हवे तेह सौ. ॥४॥

चोथे मान धरे घणुंजी, मुझ सम अवर कोय,
केम वन्दु जण जण प्रत्येजी, एम मोटी माम मन होय सौ. ॥५॥

पाचमे क्रोध वशे करीजी, छाडे धर्मना स्थान,
धर्म लाभ मुझने नवी दियोजी, नवी दियो गुरु सन्मान सौ. ॥६॥

छट्ठे जीव प्रमादथी जी, करे मदिरादिक सेव;
गुरुवाणी नवी सद्दहेजी, नवी मानेजिन देव सौ. ॥७॥

सातमें कृपण पणा थकीजी, नावे साधु समीप;
धर्म कथा नवी सांभलेजी, मंडारो धन टोप सौ. ॥८॥

आठमें गुरुभय उपन्योजी, कहेशे नरकनां दुःख;
के कहेशे केम नावियाजी, पामशो कहो केम मोक्ष सौ. ॥९॥

नवमे देहरे आवतांजी, दाखवे शोक विशेप;
घरनां कारज सवी करेजी, धर्मनां काज उवेख सौ. ॥१०॥

अज्ञान दशमो काठियोजी, देव तत्व गुरु तत्व;
धर्म तत्व नवी सद्दहेजी, एम आणे मिथ्यात्व सौ. ॥११॥

अव्याक्षेपक अग्यारमेजी, भल वलतो दिन रात;
प्राणी धर्म न ओलखेजी, समजाव्यो बहु भांत सौ. ॥१२॥

बारमें धर्म कथा तजीजी, कौतुक जोवा जाय;
रात दिवस उभो रहेजी, नयणे नींद न भराय सौ. ॥१३॥

विपय तेरमो काठियोजी, विषय शुं राता लोक;
विपय साकर लेखवेजी, अवर सवेजो फोक सौ. ॥१४॥

सिद्ध चेत्र जातां थकांजी, काठिया ओ अंतराय;
द्रव्य भावथी टालियेजी, तो मनो वंछित थाय, सौ. ॥१५॥

तेरह काठिया जिने कह्याजी, समजी वरजो अेह;
कुशल सागर वाचक तणोजी, उतम कहे गुण गेह सौ. ॥१६॥

इति

---

(६) ★ जीवको शीखामण की सज्भाय ★

(तर्ज—धारणी मनावे रे मेघ कुमारने रे)

काई नवी चेतोरे चित्तमॉ जीवडारे, आयु गले दिन रात;
वात विसारी रे गर्भावासनी रे, कुण कुण ताहरी जात,
काई नवी चेतो रे चितमां जीवडा रे. ॥१॥

दोहीलो दीसे भव मानव तणो रे, श्रावक कुल अवतार;
प्राप्ति दूरीरे गिरुआ गुरु तणीरे, तुझ न मले वारोवार–
कांई नवी चेतो रे. ॥२॥

तू मत जाणेरे ए धन माहरुं रे, कुण माता कुण तात;
आप सवारथे सहु कोई मल्युं रे, मकर पराई तू तांत-
काई नथी चेतो रे. ॥३॥

पुण्य विहूणा रे दुःख पामे घणारे, दोप दीये करतार;
आप कमाई रे पुरव भव तणी रे, न मिटे तेह लगार-
कांई नथी चेतो रे. ॥४॥

कठिण करमने अहनिशि जे करे रे, तेहनां फलजे विपाक;
हूं नथी जाणुं रे कुण गति ताहरीरे, ते जाणे वीत राग-
कांई नथी चेतो रे. ॥५॥

ते दुःख सह्यांरे बहु दुर्गति तणांरे, अनंत अनंती वार;
लब्धि कहे रे जे जिनने भजे रे, ते पामे मोक्ष द्वार
कांई नथी चेतो रे. ॥६॥

---

(१०) ★ निद्रा की सज्झाय ★

सुई सुई सारी रेन गमाई, वैरन निद्रा तू कहां से आई-सुई टेक।
निद्रा कहे हूं तो बाली रे भोली, बड़े २ मुनिजन के आंखों में-
ढोली सुई. ॥१॥

निद्रा कहे हूं तो जमकी रे दासी, एक हाथ मुक्तिनें दूजे हाथ—
फासी सुई. ॥२॥

निद्रा कहे हूँ तो कपट की काकी, मद मच्छर मॉही नित रहूँ
छाकी सुई. ॥३॥

समय सुन्दर कहे सुनो बाई बनिया, आप डूबे सारी डूब गई
दुनिया सुई. ॥४॥



(११) ★ इला पुत्र की सज्झाय ★

नामेला पुत्र जाणिये, धन दत्त शेठनो पूत ।
नटनी देखीने मोहियो नवि आव्यो घर सूत. ॥१॥

कर्म न छूटे रे प्राणीया, पूरव स्नेह विकार ।
निजकुल छडी रे नट थयो, न आणी शरम लगार कर्म. ॥२॥

एक पुर आव्यो रे नाचवा, ऊंचा वंश विशेक ।
तिहॉ राय जोवाने आविया, मलिया लोक अनेक कर्म. ॥३॥

दोय पग पेरी रे पावडी, वंश चढियो गजगेल ।
निराधार ऊपर नाचतो करतो नवा २ खेल कर्म. ॥४॥

ढोल वजावे रे नाटवी, गावे किन्नर साद ।
पावतल धू धरा धम धमे, गाजे अम्बर नाद कर्म. ॥५॥

मनमाँही चिन्तेरे भूपति, लुब्धियो नटवीनी साथ ।
जो नट पड़े रे नाचतो तो नटवी मुज हाथ कर्म. ॥६॥

दानन आपरे भूपति, नट जाण्यो नृप बात ।
हुँ धन वाच्छुरे रायनो, राय वाँच्छे मुज घात कर्म. ॥७॥

तिहाँ एक मुनिवर पेखिया, धन धन साधु अणगार ।
धिक धिक भिख्यारी जीवने, इम पाम्यो वैराग्य कर्म. ॥८॥

संवर भावेरे केवली, ततखिण कर्म खपाय ।
केवल महिमारे सुरकरे, समय सुन्दर गुण गाय कर्म. ॥९॥

इति

---

(१२) ★ आतम-हित सज्भाय ★

छोड़ वृथा अभिमान मूरख छोड़ वृथा अभिमान । टेक.
वड़े २ भूप भये पृथ्वी पर तेजरूप वलवान
कौन वचा इस काल डाल से, उठ गये नाम निशान–
मूरख छोड़. ॥१॥

भटकत फिरत सदा विषयन में जैसे मरघट स्वान ।
पलभर बैठ स्मरण नहीं कीना जासे होत कल्याण-मूछो. ॥२॥

दाम धौल गज रथ अरु सैन्या नारी चन्द्र समान ।
अन्त समय सबही को छोडी जा वैठे समसान मूछो. ॥३॥

अहो मन मूढ अब सुध लीजे मेरो कह्यो अरमान ।
स्थिरता नन्दन अभय नन्दन को अबही तू पहिचान
मूछो. ॥४॥

---

(१३) ★ समकित की सज्झाय ★

समकित नवि लह्यु रे, एतो रुल्यो चतुर्गति मांही–टेक०
त्रस थावर की करुणा कीनी, जीव न एक विराध्यो ।
तीन काल सामायिक करतां, सुध उपयोग न साध्यो
समकित. ॥१॥

झूठ बोलवाको व्रत लीनो, चोरी को पण त्यागी ।
व्यवहारादिकमां निपुण भयो पण, अन्तर दृष्टि न जागी–
समकित. ॥२॥

उरध भुजा करि उंधो लटके भसमी लगाय धूम गटके ।
जटा जूठ शिर मूंडे झूठो, विण सरधा भव भटके-
समकित. ॥३॥

निज परनारी त्याग ज करके, ब्रह्मचारी व्रत लीधो ।
स्वर्गादिक याको फल पामी, निज कारज नवि सीधो-
समकित. ॥४॥

ब्रह्म क्रिया सब त्याग परिग्रह, द्रव्य लिंग धर लीनो ।
देवचन्द्र कहे या विधतो हम, बहुत वार कर लीनो सम. ॥५॥



(१४) ☆ वैराग्योत्पादक सज्झाय ★

※ चितानन्द जी कृत ※

(राग जंगला-काफी)

नर देख तु निश्चय जोई, जगमें नहीं तेरा कोई ।
सुत मात तात अरु नारी, सहु स्वारथ के हितकारी
विन स्वारथ शत्रु सोई, जगमें नहीं तेरा कोई, नर देख. ॥१॥

तु फिरत महा मद माता, विषयन मग मूरख राता ।
निज मग की शुद्ध बुद्ध खोई जगमें. ॥२॥

घट ज्ञान कला नहीं जाकूं, परनिज मानत सुन ताकूं ।
आखर पछताना होई जगमें नहीं. ॥३॥

नवि अनुपम नर भव हारो, निज शुद्ध स्वरूप निहारो ।
अन्तर ममता मल धोई जगमें नहीं. ॥४॥

प्रभु चिदानन्द की वाणी, धारत निश्चय जग प्राणी ।
जिम सफल होत भव दोई जगमें. ॥५॥

इति

---

(१५) ★ कर्म की सज्झाय ☆

☆ श्री ऋद्धि हर्ष कृत ☆

देव दानव तीर्थंकर गणधर, हरिहर नरवर सबला ।
कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्या, सबल हुआ महा निबला रे
प्राणी कर्म समो नहीं कोई. ॥१॥

आदिश्वर ने कर्म हटाव्या, वर्ष दिवस रह्या भूख्या ।
वीरने वारे वर्ष दुःख दीधा, उपन्या ब्राह्मणी कूखेरे प्राणी. ॥२॥

साठ सहस सुत मार्या एकण दिन, जोध जुवान रसाला ।
सगर हुओ महा पुत्रनो दुःखियो, कर्म तणा एह चालारे
प्राणी. ॥३॥

बत्तीस सहस देशांरो साहिब, चक्री सनत कुमार ।
सोलह रोग शरीरमें उपन्या, कर्म कियो तनु छाररे प्राणी. ॥४॥

कर्म हवाल किया हरिचंदने, वेची सुतारा राणी ।
बारे वर्ष लग माथे आण्यो, नीच तणे घर पाणीरे प्राणी. ॥५॥

दधि वाहन राजानी बेटी, चावी चंदन बाला. ।
चौपद ज्युं चौवटे वेचाणी, कर्म तणा एह चालारे प्राणी. ॥६॥

सुभूम नामे आठमो चक्री, कर्मे सायर नाख्यों ।
सोले सहस यक्ष ऊभा देखे, पिण किणही नवि राख्यो रे
प्राणी. ॥७॥

ब्रह्मदत नामें बारमो चक्री, कर्मे कीधो आंधो ।
इम जाणी प्राणी थे कोई, कर्म कोई मति बांधो रे प्राणी. ॥८॥

छप्पन क्रोड यादव नो साहिब, कृष्ण महाबली जाणी ।
अटवीं मांहीं सूवो एकलडो, विल विल करतो पाणीरे प्रा. ॥९॥

पांचे पाटव महा जुझारा, हारी द्रौपदी नारी ।
बारे वर्ष लग वन रह वडिया, भमिया जेम भिखारी रे
प्राणी. ॥१०॥

वीस भुजा दस मस्तक हुता, लक्ष्मणे रावण मार्यो ।
एकलडे नर सहु जग जीत्या, ते पिण कर्मशुं हार्योरे प्रा. ॥११॥

लक्ष्मण राम महा बलवता, वली सत्यवंती सीता ।
कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्या, वीतक बहु तस वीतारे प्रा. ॥१२॥

सतीय शिरोमणी द्रोपदी कहिये, जिण सम अवर न कोई ।
पांच पुरुषनी हुई ते नारी, पूर्व कर्म कमाई रे प्राणी. ॥१३॥

समकित धारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मूसका ।
धर्मी नरने कर्म सतावे, कर्मशुं जोर न किसका रे प्रा. ॥१४॥

आभा नगरी नो जे स्वामी, साचो राजा चन्द ।
माता कीधो पखी कुकडो, कर्म नाख्यो तस फदेरे प्राणी. ॥१५॥

ईश्वर देव पार्वती नारी, करता पुरुष कहावे ।
अहनिश महिल मसाण में वासो, भिक्षा भोजन खावे रे
प्राणी. ॥१६॥

सहस किरण सूरज प्रतापी, रात दिवस रहे अटतो ।
सोल कला शशिधर जग चावो, दिन दिन जाय घटतो रे
प्राणी. ॥१७॥

इम अनेक खंड्या नर कर्मे, भांज्या ते पिण साजा ।
ऋद्धि हर्ष कर जोडी विनवे, नमो नमो कर्म महाराज रे
प्राणी. ॥१८॥

इति

---

(१६) ★ मान की सज्झाय ★

※ उदय रत्नजी कृत ※

रे जीव मान न कीजिये, माने विनय न आवे रे ।
विनय विना विद्या नहीं, ते किम समकित पावेरे रे जीव. ॥१॥
समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्तिरे ।
मुक्तिनां सुख छे शाश्वतां, ते किम लहिये जुक्तिरे रे जीव. ॥२॥
विनय बडो संसारमां, गुण मांहे अधिकारी रे ।
माने गुण जाये गली, प्राणी जो जो विचारी रे रेजीव. ॥३॥

मान कर्यु जो रावणे, तेतो रामे मार्यो रे ।
दुर्योधन गरवे कर्या, ते अन्ते सवि हार्यो रे जीव. ॥४॥

सूकां लाकडा सारिखो, दु खदायी ए खोटो रे ।
उदय रत्न कहे मानने, देजो तमे देश नटो रे रे जीव. ॥५॥

इति

---

(१७) ★ माया [कपट] की सज्भाय ★

समकितनु मूल जाणिएजी, सत्य वचन साचात ।
साचामा समकित वसेजी, मायामा मिथ्यात्व रे प्राणी
म करीश माया लगार. ॥१॥

मुख मीठो जठो मनजी, कूड कपटनो रे कोट ।
जीभे तो जी जी करे जी, चित्तमांही ताके चोट रे प्राणी. ॥२॥

आप गरजे आघो पडेजी, पण न धरे विश्वास ।
जेह मनशु राखे आतरोजी, ए मायानो वासरे प्राणी. ॥३॥

जेहशुं बांधे प्रीतडी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ।
मैल न छंडे मन तणोजी, ए मायानुं मूल रे प्राणी. ॥४॥

तप कीधो माया करीजी, मित्रशुं राख्यो रे भेद ।
मल्लि जिनेश्वर जाणजोजी, ते पाम्या स्त्री वेद रे प्राणी. ॥५॥

उदय रत्न कहे सांभलोजी, मेलो मायानी बुद्धि ।
मुक्ति पुरीजावा तणोजी, ए मारग छे शुद्ध रे प्राणी. ॥६॥

इति

---

(१८) ❀ वैराग्य की सज्झाय ❀

परदेशिया में कोण चलेगो तेरी लार, परदेशिया में कौन चलेगो,
चलेगी मेरी माता चलेगी मेरी नार ।
नहीं नहीं हो चेतन जावेगी देहली तक लार पर. ॥१॥

चलेगी मेरी माता कि जाई मेरी लार ।
नहीं नहीं हो चेतन, झूठा है सारा परिवार पर. ॥२॥

चलेगा मेरा भाई, चलेगा मेरा यार ।
नहीं नहीं चेतन, फूकेंगे तोय अग्नि मझार पर. ॥३॥

चलेगा मेरा बेटा, चलेगा परिवार ।
नहीं नहीं हो चेतन, मतलब का है संसार पर. ॥४॥

चलेगा मेरा माल, खज़ाना परिवार ।
नहीं नहीं चेतन, पड़ा रहेगा घरवार पर. ॥५॥

चलेगी मेरी फोजाँ, चलेगा दरबार ।
नहीं नहीं हो चेतन, जीतेजी का है सरकार पर. ॥६॥

चलेगी मेरी काया, चलेगा मन सार ।
नहीं नही हो चेतन, छोडेंगे तोय मझधार
परदेशिया में कौन चलेगा. ॥७॥

---

(१६) ★ नवकारवालीनी सज्झाय ★

* रूप विजयजी कृत *

कहेजो चतुर नर ए कुण नारी, धरमी जनने प्यारी रे ।
जेण जाया बेटा सुखकारी, पण छे बाल कुमारीरे कहेजो. ॥१॥

(२१) ★ उपदेशक सज्झाय ★

※ कायापर ※

(आनन्द घनजी म. कृत)

समझ नर आयु जावे ज्यूं रेलरे, समझ नर आयु जावे
ज्यूं रेल टेर ।
सीधी रे सडक वनी शिवपुर की, जिस पर चालत रेल रे
समझ. ॥१॥
वरस वरस की वनी, स्टेशन मास मास की झीलरे समझ. ॥२॥
नेम प्रेम की लालटेन है, विन बत्ती विन तेल रे समझ. ॥३॥
रात दिवस अंजन खेंचत है, विन घोडा विन वैलरे समझ. ॥४॥
नाडी रे तार खवर देने को, दश दरवाजा पड्या फेलरे
समझ. ॥५॥
रे मन मूर्ख भ्रमत फिरत है, ज्यूं घाणी को वेलरे समझ. ॥६॥
आनन्दघन कहे, रेमन मूरख तृष्णा वढे ज्यूं वेलरे समझ. ॥७॥

इति

---

(२२) ★ उपदेशिक पद ★

दुलहन नारी तू बडी बावली, पिया जागे तू सोवे रे ।
पिया चतुर तू निपट अज्ञानी, न जाने क्या होवेरे दु. ॥१॥
आनन्दघन प्रिया दरश पियासे, खोल घूँघट मुख जोवेरे दु. ॥२॥

इति

---

(२३) ★ वैराग्य की सज्झाय ★

※ उदय रत्नजी कृत ※

(तज-शेख उतारो राजा भरथरी)

ऊंचा ते मन्दिर मालिया, सोड वालीने सोतो ।
काढो रे काढो एने सहुकहे, जाणे जन्म्यो न होतो
एकरे दिवस एवो आवशे टेर.
एकरे दिवस एवो आवशे, मने सबे जी साले ।
मंत्री मल्या सहु कारमा, तेनो काई ननि चाले एकरे. ॥१॥

सात सोनाना रे साकला, पेरण नवा नवा वागा ।
धोला ते वस्त्र एना कर्मना, तेवो शोधवा लागा एकरे. ॥२॥

चरु काढिया अति घणा, बीजानो नहीं लेखो ।
खोखरी हांडी एनां कर्मनी, ते तो आगेजी देखो एकरे. ॥३॥

कोना छोरा कोना वाच्छरा, कोना मायने बाप ।
अन्त काले जावे जीव एकलो, साथे पुण्य ने पाप एकरे. ॥४॥

सगीरे नारी एनी कामिनी, ऊभी टुगमुग जोवे ।
तेहनो कांई पण चाले नहीं, बैठी ध्रुसके जी रोवे एकरे. ॥५॥

व्हाला ते व्हाला शुं करो, व्हाला वोलावी वलशे ।
व्हाला ते वनना लाकडा, तेतो साथेजी वलशे एकरे. ॥६॥

नहीं त्रापु नहीं तुवडी, नथी तरवानो आरो ।
उदय रत्न प्रभु इम भणे, भवजल पार उतारो एकरे.
दिवस एहवो अखरो ॥७॥

---

[२४] ★ एकत्व भावना सज्झाय ★

* गणि समय सुन्दर जी कृत *

आयो एकेलो एकोई जासी, क्यूं करे इतनी उदासीरे जीव० टेर ।
कुटुम्ब मिल्यो तरु खगनी वासे, अनथि प्रभाते उडजासी रे
जीव आयो. ॥१॥

पुद्गल रे पर पच लुभायो, मिल मिल वीछड जावे रे जीव० ।
गलण पडणरो धर्म कहावे, निश्चल केम ठहरावे रे
जीव आयो. ॥२॥

आछा सयोग मिल्या सुख माने, हुआ वियोग दुःख-
आणेरे जीव० ।
सुख दुःख बेहु झूठारे जाणो, जे निज स्वरूप पीछाणो रे
जीव आयो. ॥३॥

भोग सजोग मे लुब्धियो रे भाई, आई वियोगनी साईरे जीव० ।
तीर्थपती श्री मुख फरमावे, एमा शका न काईरे जीव आ. ॥४॥

एकत्व सुवी भावना भावो, नमीराज ऋषि राई रे जीव० ।
शक्रेन्द्र शुं चरचा करीने, मुक्तिपुरी तिण पाई रे जीव आ. ॥५॥

मोह सुभट धीरज गढ़ ढावे, ज्ञान बलिष्ट चूणावेरे जीव० ।
आरति कुलटानो संग छुडावे, समता रतिमन भावे रे
जीव आयो. ॥६॥

साता असाता समपरिणामें, भोगवे ते धन कहावे रे जीव० ।
कर्म खपावी मुक्ति में जावे, जेष्ट सदा गुण गावेरे जीव आ. ॥७॥

इति



[२५] ★ कर्म की सज्झाय ★

रे कर्म गति कौन सके टारीरे, कर्म गती कौन सके टारी ।
जैन दीपक प्रभु आदिनाथ जी, हुवे प्रथम अवतारी
बारे मास अन्न जल नहीं पाया, सहे परीषह भारी कर्म. ॥१॥

सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्रने, वेची पुत्र और नारी ।
ऋण चुकायो ब्राह्मण को और, भयों नीचघर वारी कर्म. ॥२॥

पांडव महावीर बलधारी, द्रोपदी नारी हारी ।
सहे बरस बारे वनके दुःख, भ्रमत फिरे ज्यूं भिखारी कर्म. ॥३॥

रावण महासुर अभिमानी, लक्ष्मण गर्दन मारी ।
वासुदेव भारत में योद्धा, नरक गयो जो भुगते कर्म. ॥४॥

इस जगमे सब स्वार्थ सगु और, मोह जाल है भारी ।
'ज्ञान' कहे सचो धर्म अंतरमे, मिले मुक्ति सुख प्यारी धर्म. ॥५॥

इति



[२६] ★ उपदेशिक पद ★

☆ धर्मदास कृत ☆

गाडी धीरे धीरे हाक रे सुजान देव ।
गाडी म्हारी रंग रंगीली, पाचोइं वैल छुगाय
पैडा थारा फूल रंगीला, हाकन वालो सुजाणवे गाडी. ॥१॥

हाथी छूटो सामने रे, धूलन धर्मी पकड ।
सब सगासा दुख पसावे, निरा गर्भ सासल रे गा. ॥२॥
गाडी अटकी मारने रे, फटकी मास्न गाड ।

आवेला कोई साधु सुज्ञानी, खैंच करेला पार रे गाडी. ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधु, यह पद छे निर्वाण ।
इस पदका जो अर्थ करे छे, वही चतुर सुजाणरे गाडी. ॥४॥



[२७] ☆ वैराग्य पद ★

इस तन धन की कोन बड़ाई, देखत नैनो में मिट्टी मिलाई टेर ।
अपने खातिर महल बनाया, आपही जंगल जाकर सोया
इस. ॥१॥
हाड जले जैसे लकडी की मोली, केस जले जैसे घास की पोली
इस. ॥२॥
कहत कबीर सुनो मेरे गुनिया, आप मुहाँ पछे डूब गई दुनिया
इस. ॥३॥

इति

---

[२८] ★ वैराग्य पद ★

काया लोक सराई रे, तज दिये प्राण । टेर

चलत प्राण काया के साथी, निकल गया निरमोही
मैं जाण्यो काया संग चलेगी, वाही कारण काया मल मल धोईरे
तजदिये प्राण. ॥१॥

बैठ सिराणे माता रोवे, बैठ पगाते गोरी ।
भुजा पकड तेरा भाई रोवे, बिछड गई सारस हंस वाकी जोडीरे
तजदिये प्राण. ॥२॥

घरमें तिरिया अपच्छरा छोडी, दोय पुत्र की जोडी ।
माल खजाना यहीं रह गया सब, साथ न चाले तेरे एकभी कोडी रे
तजदिये प्राण. ॥३॥

आठ काठ की बनी गजगजी, बनी काष्ट की घोडी ।
नदी किनारे जाय उतारी, फूंक दीनी जैसे फागुणिया की होलीरे
तजदिये प्राण. ॥४॥

गेली त्रिया रोवण बैठी, बिछड गई मेरी जोडी ।
कहत कबीर सुनो भाई साधु, स्वार्थ की सगाई रे तज. ॥५॥

इति

[२६] ☆ वैराग्य पद ★

सुमरन बिन गोता खावोगे, खावोगे पछतावोगे टेर-

क्या करनी कर आया जगतमें, क्या करनी कर जावोगे सुन. ॥१॥

गरभावास में कौल किया था, फिर भूल मत-जावोगे सुन. ॥२॥

मुट्ठी बांधकर आया जगतमें, हाथ पसारे जावोगे सुन. ॥३॥

ए देही कागज की पुडिया, खाँड लगे गल जावोगे सुन. ॥४॥

कहत कबीर सुनो साधुजन, प्रभु ध्यानसे तर जावोगे सुन. ॥५॥

इति

---

[३०] ★ काया का पद ★

कायाका पिंजरा डोलेरे, एक श्वांस का पंछी बोलेरे टेर।

आतम नगरी मन मन्दिर, परमातमा जिसके अन्दर

दो नयन है बाल समुन्दर, पापी तू पापको धोले रे काया. ॥१॥

सुत मात तात पतनी का, झगडा है जीते जीका ।
दुनिया में न कोई किसी का, क्यों जन्म को वृथा खोवे रे
काया. ॥२॥

यह दुनिया मुसाफिर खाना, जाने से क्या घबराना ।
झूठा है मिलना झुलना, क्यों भेद भँवर को खोले रे
काया. ॥३॥

इति

---

(३१) ★ चेतन की सज्झाय ★

रे चेतन मतकर जोर जवानी को, रे क्षणभर नहींरे भरोसो
जिन्दगानी को रे चेतन । टेर.

खोटी तो दुनिया ने, नाजुक जमानो प्यारे, वरतत वडो छे,
वेईमानी को चेतन. ॥१॥

मूँछ मरोड कर बांह समारे, मुख वचन उचारे ।
अभिमानी को रे चेतन. ॥२॥

सुकृत रूपी गहरो संबल लेलो साथे, आगे नहीं छे,
घर नानी को रे चेतन. ॥३॥

वार वार सद्गुरु समझावे नहीं, माने वचन गुरु-
ज्ञानी को रे चेतन. ॥४॥

आनन्दघन कहे सद्गुरु सेवो प्यारे, मारग लेवोनी-
निरवानी को रे चेतन. ॥५॥

इति

---

(३२) ★ काया की रेल का पद ★

(तर्ज—छोड़ छोड़ तू दुःखमय दुनिया.)

इस काया की रेल रेलसे, अजब निराली है—टेर—
नेम धरम की बनाके नाली, अकल सड़क उसमें से निकाली ।
मनका कांटा लगा जिधर चाहे, उधर घुमाली है इस काया. ॥१॥

पाप पुण्य के पहिए बनाकर, सत्य का लट्ठा खूब चढ़ाकर ।
ज्ञान कमानी खेंच ध्यान की, सांकल डाली है इस काया. ॥२॥

स्वास धुंआ है मुखसे जारी, मोह की लाट बनी हितकारी ।
तनका अजन लगाकर उसमे, अग्नि जाली है इस काया. ॥३॥

नब्ज का घंटा हरदम हिलता, ये टाइम उस रेल से मिलता ।
बोलकी सीटी लगी, रेल अब आने वाली है इस काया. ॥४॥

अय मुसाफिर क्यों दुःख पाता, प्रभु नामका टिकट न लेता ।
हाथका सिगल छुटा, रेल अब जाने वाली है इस काया. ॥५॥

तार खबर हिचकी जब आई, काल बदलिया सिरपर छाई ।
रेल "भॅवर" गया छूट पडा, स्टेशन खाली है इस काया. ॥६॥



(३३) ★ उपदेशक पद ★

(तर्ज—हे वीर वीर तू रटले रे तेरी.)

छोड छोड तू दुःखमय दुनिया, अंत न रोना होय—टेर—
मेरा मेरा करके म्हाला, पीछे जूता पडे नहीं भाला ।
आख उघाडी जोने चेतन, अन्त न रोना होय. ॥१॥

कूड़ कपट करी काल गमायो, संसार में आय अड्डो जमायो ।
अब तू करनी ऐसी करले, अन्त न रोना होय. ॥२॥

कुटुम्ब कवीला साथ न जावे, पुण्य पाप दोय लारे जावे ।
ऐसा जानकर धर्म तू करले, अन्त न रोना होय. छो. ॥३॥

मानव केरो जन्म तू पायो, दान पुन्य कछु नाहीं कमायो ।
अवसर पामी करले चेतन, अन्त न रोना होय. छो. ॥४॥

वीर वीर की धुन लगावो, आतम कमल में लब्धि जगावो ।
जयन्त कहे तुम ऐसा करलो, अन्त न रोना होय. ॥५॥

इति



(३४) ★ सज्झाय ★

आ संसार असार रे, जीवडा आ संसार असार—टेर—
मात पिता सुत बैन ने भाई, सहु स्वार्थ की जालरे जीवडा. ॥१॥
धन यौवन घर है दुःखदाई, धर्म तू एक संभाल रे जीवडा. ॥२॥

एक दिवस सब छोडके जाना, नाहक करे तू धमालरे जीवडा. ॥३॥
तप संयम करो है सुखदाई, छोडी सर्व जंजाल रे जीवडा. ॥४॥
आत्म कमल मे लब्धि लेनो, रमरोने दीनदयाल रे जीवडा. ॥५॥
जयन्त प्रभु को विनती करत है, भव अटवीसे निकालरे जीव. ॥६॥

इति

---

(३५) ★ सज्झाय ★

तू तो समरण करले मेरे मना, तेरी बीती जाय उमरिया
प्रभु के नाम बिना टेर ।
पंखी पंख बिन हस्ति दंत बिना, नारी कंत बिना ।
वेश्या का पुत्र पिता विहीना, ऐसा पुरुष प्रभु के नाम बिना
तू तो. ॥१॥
देह नयण बिन रयण चन्द बिन, धरती मेघ बिना ।
जैसे पण्डित वेद विहीना, ऐसा पुरुष प्रभु नाम बिना तू ॥२॥
कूप नीर बिन धेनु क्षीर बिन, मन्दिर दीप बिना ।
जैसे तरुवर फल विहीना, ऐसे पुरुष प्रभु नाम बिना तू. ॥३॥

काम क्रोध मद लोभ जो सारा, छोडी रिषी सन्त जना ।
कहे नानक साह सुनो भगवन्ता, यासे नहीं कोई अपना तू. ॥४॥

इति

---

(३६) ★ उपदेशिक सज्झाय ★

※ आनन्दघन जी कृत ※

(तर्ज–वनासरी तीन ताल)

अब हम अमर भये न मरेंगे, अमर भये न मरेंगे अब हम.टेर
या कारण मिथ्यात दियो तज, क्योंकर देह धरेगें अब हम. ॥१॥

राग द्वेष जग बंध करत है, इनका नाश करेंगे ।
मर्यो अनन्त कालते प्रानी, सो हम काल हरेंगे अब हम. ॥२॥

देह विनाशी हूं अविनाशी, अपनी गती पकरेंगे ।
नासी जासी हम थिरवासी, चोखे हैं निखरेंगे अब हम. ॥३॥

मयों अनतवार निन समझ्यो, अब सुख दु ख निसरेंगे।
आनदघन निपट निकट अचर दो, नहीं समरें सो मरेंगे
अब हम. ॥४॥

इति

---

(३७) ★ आत्मनिष्ठात्मक पद ★

(तर्ज—हमीर कल्याण)

राम कहो रहेमान कहो कोऊ, कान कहो महादेव री।
पारसनाथ कहो कोई ब्रह्मा, सकल ब्रह्म स्वयं मेव री राम. ॥१॥
भाजन भेद कहावत नाना, एक मृत्तिका रूप री।
तैसे खंड कल्पना रोपित, आप अखंड सरूप री राम. ॥२॥
निजपद रमे रामसो कहिये, रहम करे रहमान री।
करषे करम कानसो कहिये, महादेव निर्वाण री राम. ॥३॥
परसे रूप पारससो कहिये, ब्रह्म चिह्ने सो ब्रह्म री।
इह विध साधो आप आनंदघन, चेतनमय निष्कर्म री राम. ॥४॥

इति

---

(३८) ★ उपदेशिक पद ★

तर्ज—

आटलो संदेशो मारो, प्रभुजीनो कहेजो । टेर

कायानो देवल मुझने लागे छे काचो, तेनी मालवणी हमने
देजो संदेशो. ॥१॥

काया पड़सेने हंसो क्या जई समासे, ते घर वतलावी ।
असने कहेजो संदेशो. ॥२॥

तुमारे अमारे ने हमारे तुमारे, जन्मोजन्म प्रीत होजो
संदेशो. ॥३॥

धर्मनी शोभा भूमि सिरपर करता, धन धन तेवा मुनि राजरे
संदेशो मारो प्रभुजी ने. ॥४॥

इति

(३६) ☆ उपदेशिक सज्झाय ☆

(तर्ज—रे पछी बावरिया.)

भज भज भज भगवाना, कि अब तो मूढ मना ।
जाना देश पराया कि, अब तो चेत जरा टेर
दुनिया तो है आनी जानी, दो दिन की है यह महमानी ।
अरे न बन अनजाना, कि अब तो मूढ मना—भज. ॥१॥

है ममता का झूठा झगडा, छोड जगत का सारा रगडा ।
लगा प्रभुसे ध्यान, कि अबतो मूढ मना भज. ॥२॥

मात पिता भाई सुत नारी, स्वार्थ के है सब ससारी ।
सीख गुरु की मान, कि अब तो मूढ मना भज ॥३॥
नेकी के कुछ कर्म कमाले, अपना जीवन सफल बनाले ।
चाहे जो निर्वाण, कि अबतो मूढ मना भज. ॥४॥
अमृत जो सच्चा सुख पाना, सत्य धर्म को नित अपनाना ।
कर्म करे कल्याण, कि अबतो मूढ मना भज. ॥५॥

इति

---

(४०) ☆ उपदेशिक पद ☆

(तर्ज—कांई रे गुमान करे जीवडा.)

कहो चेतनजी थाने कुण भरमाया, सुमति रे जावंता कुमति-
भरमाया कांई रे जंजाल करे जीवडा कांई प्रमाद करे जीवडा. ।
जाल किया जीव जमपुर जावे, हाथ पकड़ जम खेंचले जावे
कांई रे जंजाल. ॥१॥

जाल किया जीव धर्म न पावे, लाख चौरासी में गोता खावे ।
कांई रे जंजाल. ॥२॥

आजग हे सुपने की कहानी, सुकृत सदा करले रे प्राणी
कांई रे जंजाल. ॥३॥

दिन दिन तेरी घटत आवडदा, प्रभु भजन तू करले रे बन्दा
कांई रे जंजाल. ॥४॥

मुक्ति गयाभव सुधरेला थारो, अंत समय थारो होवेला सुधारो
कांई रे जंजाल. ॥५॥

चिदानन्द दास की अर्जी, चरणोंमे चित्त राखो प्रभुजी
काई रे जजाल. ॥६॥

इति

---

(४१) ★ कर्म पर पद ★

(तर्ज—गजल)

कर्म तारी कला न्यारी, हजारोने नचावे छे ।
चढेजे चकरे तारे, सदा तेने भमावे छे टेर
होय जे काल भिखारी, आज धनवान है भाई
अरे धनवान ने पलमा, मूठी भिक्षा मगावे छे कर्म. ॥१॥
हजारो मान जे करता, राज महाराज कहाता ।
तजावी राज तू तेने, बुरा बाना बनावे छे कर्म. ॥२॥
करे बलवान ने रोगी, करे तू साधुने भोगी ।
ऊचाथी नीचनी पासे, नीच कार्यो करावे छे कर्म. ॥३॥
घडीमा तू रडावे छे, घडीमा तू हसावे छे ।
कहे शकर मकल जनने, फंदामा तू फसावे छे कर्म. ॥४॥

इति

---

(४२) ☆ उपदेशिक सज्झाय ☆

※ बुद्धि सागरजी कृत ※

(तर्ज–गुजराती गरबा–चांदनी शी खिली.)

अरे आ जिन्दगानी मनु भवनी, एले जाय छेरे ।
घड़ी क्षण वीत्यो ते तो, पाछो कदुह न आय छेरे टेर
मन चिन्ता तू कबहुन थातो, पापे भरियो जीव तरसातो
मायामां मस्तानो थई, मकलाय छेरे चेतन मायामां. ॥१॥

जन्म मरणमी नदियां वहती, खर खर चालती एम कहती ।
अस्थिर चंचल सता आयु, धनवय राय छेरे चेतन अथिर. ॥२॥

प्रभु भजन पलवार न कीधो, साधु संतने दान न दीधो ।
विषया रस विष पीने मन, हरखाय छे रे चेतन विषया. ॥३॥

सफल करीले मनुष जन्मारो, आतमराम भजिले तारो ।
भावे बुद्धि सागर चेते तो, सुख थाय छे रे चेतन–
बुद्धि सागर. ॥४॥

———

(४३) उपदेशिक सज्झाय ★

(तर्ज—ऊपर की)

खरेखर सत्य सु छे, अन्तरमा अवधारजो रे ।
माचु समझी व्हाला, विषय विकारो वारजो रे टेर
माट्टीनी मानी जे ऋद्धि, थाशे नहीं तेथी कई सिद्धि
व्हाला समजे वेगे, अन्तर्धन ने धारजो रे खरेखर. ॥१॥
वाह्य विषयमा सुखनी आशा, मोह बुद्धिना जाण तमासा।
व्हालम समजी माचु, जीवन व्यर्थ न हारजो रे खरेखर. ॥२॥
जे जे अंशे स्थिरता धारे, तेते अशे धर्म वधारे ।
तारक भव जल ऋद्धि, पोताने झट तारजो रे खरेखर. ॥३॥
सामग्री पामीने चेतो, चेते ते शिव सुखने लेतो ।
व्हालम शुद्ध स्वरूप तारु ते, दिल विचारजो रे खरेखर. ॥४॥
प्रगटे छे उद्यमथी शक्ति, क्षायिक भावे प्रगट व्यक्ति ।
व्हालम बुद्धि सागर, पोताने संभारजो रे खरेखर. ॥५॥

इति

---

(४४) ★ उपदेशिक पद ★

(तर्ज--भजले भजले भजन करले० भा.)

चेतीले झट चेतीले जीव, धार जिनवर धर्म रे ।
मायामां मस्तान थातां, लहे न शाश्वत धर्म रे चेती. ॥१॥

अस्तिनास्ति धर्म चेतन, भेदाभेद विचार रे ।
अनेकान्त छे आतमानुं रुप, समर्ज. आतम साररे चेती. ॥२॥

शुद्धरूपी साहिबो छे, अनन्तगुण आधार रे ।
शुद्ध ध्याने ध्याववाथी, आवे भवनो पार रे चेती. ॥३॥

आनन्दालय आतमा तू, जाग झटपट जागरे ।
बुद्धिसागर आत्मध्याने, धरजे दिलमां रागरे चेती. ॥४॥

इति

---

(४५) ★ अपर सज्झाय ★

(वही देशी)

जाग जीवडा जाग जीवडा, जाणी लेजे धर्म रे।
भ्रान्तिथी जंजाल राची, शीदने बांधे कर्म रे टेर–
भाई भगिनी पुत्र दारा, जूठो सहु परिवार रे
जूठा सगपण दुनियाना, साच चेतन धाररे जाग जीवडा. ॥१॥
स्वारथिया ससार मांहि, मोहे नर्नाने अधरे।
कर्म बाधे अभिनवा तू, पर रमणता सन्धरे जाग जीवडा. ॥२॥
अनन्त शक्ति माहिना तू, चेत चेतन रामरे।
शुद्ध भावे सुख अनंतु, भोगवे गुण धामरे जाग जीवडा. ॥३॥
नान, दर्शन, चरण भोक्ता, चेतन शुद्ध स्वरूपरे।
बुद्धि सागर आतम ध्याने, सिधरे भवभय रूपरे जाग जीव. ॥४॥

इति

———

(४६) ★ उपदेशिक पद ★

(तर्ज–व्हाला वीर जिनेश्वर.)

चेतन चतुर थईने मोहे, शुं मुझाय छे रे । टेर
खरेखर धन दाराथी, कहीं न शान्ति थाय छे रे टेर
माया ममताथी शुं फूले, बाह्य दृष्टिथी भवमां भूले
समज थोड़े दहाड़े शुं, चउटे लुटाय छे रे चेतन. ॥१॥

अवसर मलीयो शीदने चूके, गद्धानी पेंठे शुं तू भूंके ।
अरे जीव मलियो टाणुं, शीदने हारी जय छे रे चेतन. ॥२॥

अर्क तणा बाकुला जेवा, तन धन यौवन मन छे तेवां ।
हीरो हाथे चढ़ियो चूकी, क्या भटकाय छे रे चेतन. ॥३॥

चेत चेत आतम तू चटपट, दूर करी दुनियानी खटपट ।
प्रेमे बुद्धि सागर सुन्दरु, संगत सुहाय छे रे चेनत,
पामी अन्तर्धनने, आतमतो हरखाय छे रे चेतन. ॥४॥

इति

---

(४७) ★ सज्झाय ★

(वही देशी)

प्यारा चिद्घन चेतन, शुद्ध स्वरुप तम धारजो रे ।
पामी हीरो हाथे अलबेला, नहीं हारजो रे टेर
निराकार निःसंगी ज्ञानी, अनन्त दानादिकनो दानी
दिल आदर्शे चिदानन्द, अवधार जो रे प्यारा. ॥१॥
उपशम क्षायोपशमनी शक्ति, क्षायिक भावे प्रगटे व्यक्ति ।
निश्चल ध्याने पोताने, झट तारजोरे प्यारा. ॥२॥
अलख खलकमा साचो समजो, सुरताथी स्हेजेल्या रमजो ।
विषय विकारो वेगे दिलथी, वारजो रे प्यारा. ॥३॥
कर पोतानी प्रेमे भक्ति, खीलवजे तू निजगुण शक्ति ।
चेतन चेती झटपट कर्म, कलङ्क निवार जोरे प्यारा. ॥४॥
अलवेनो माहिन तू प्यारो, पोताने पोते ध्यानारो ।
बुद्धि सागर परम प्रभु, संभारजो रे प्यारा. ॥५॥

इति

---

(४८) ☆ आत्मास्वरूप पद ☆

(तर्ज–गजल)

समझले चित्तमां हरखी, खरेखर धर्मने परखी ।
मल्युं आ धर्मनुं टाणुं, मल्युं आ धर्मनुं नाणुं. ॥१॥

भणीने जीव शुं भूले, भणीने जीव शुं झूले ।
विचारी वात ले वीरा, धरीने धर्मने धीरा. ॥२॥

जगतमां मोहनी बाजी, रह्यो शुं तेहमां राजी ।
कायर रे मन केम कंपे, कायरनां वेण शुं जंपे. ॥३॥

जगतमां चेताजे व्हेलो, समयतो जाय छे छेलो ।
धरीने जन्म शुं वायुं, धरीने जन्म शुं वायुं. ॥४॥

विवेके वात परखाशे, तदातो सत्य सुख थाशे ।
बुद्धयब्धि धर्मनी वाटे, चलोने भव्य शिर साटे. ॥५॥

इति

---

(४९) ☆ सज्झाय ☆

मायामा मनडु मोह्यु रे, नर भवनो जीवन खोह्यु रे।
जागीने जोतो प्राणीयारे टेरे
मातानी कुखें आवि नवमास ऊंधो रह्यो, त्या दुःख अनन्तो
सह्यु रे जागीने. ॥१॥

बाल पणामा समज्यु न देव गुरु सेवा, रमवाने मीठा मेवा रे।
जागीने. ॥२॥

जुवानीमा जुवतीनो संग बहु खेल्यु, तें धर्मने पडतु मेल्यु रे।
जागीने. ॥३॥

पैसाने माटे पाप कीधा बहु भारी, ते आत्मने विसारी रे।
जागीने. ॥४॥

सुखे के दुःखे प्राणीने एक वार मरवु, न कोईने काई देवु रे।
जागीने. ॥५॥

करीए जेवु पामीस भाई तेवु, न कोई न काई लेवुरे जागीने. ॥६॥
सुपनानी जूठी बाजीमा रह्यु, शु साची न कोईने काई
जाचीने. ॥७॥

बुद्धि सागर सन्यो चेतजो विचारी, समजो नरने नारीरे जागी. ॥८॥

इति

(५०) ★ उपदेशिक सज्झाय ★

(तर्ज–गजल)

जपेंगे ईश की माला, वही नर पार होवेंगे ।
फँसेगे मोह ममता में, वही नर जन्म खोवेंगे टेर
जो करता है तेरा मेरा, नहीं कुछ भान उनको है ।
बांधकर पापकी गठडी, धर्म से हाथ धोवेंगे जपेंगे. ॥१॥

सुत मात तात और भ्राता, कि जिन्हों को सुख नजर आता ।
सोयेगा मृत्यु सैया पर, नहीं कोई साथ सोवेंगे जपेंगे. ॥२॥

यही है रीति दुनिया की, चेतलो हे मेरे भाई ।
नहीं जो अभी चेतेंगे, वही कर्मो को रोवेंगे जपेंगे. ॥३॥

कहत है ज्ञान ईश्वर को, भजे जो प्रेम से इनको ।
मिलेंगे फल उन्हें ऐसा कि, जैसा बीज बोवेंगे. ॥४॥

इति

---

(५१) ★ जीवके ऊपर पद ☆

(तर्ज–ओ माणी रे भारी नाडोना छनकारा)

ओ जीवडा रे त्हारी मती तू, केम वगाडे ।
नही धर्म प्रेम लगाडे, त्हारी काल घुघरी वागे
ओ जीवडा रे तू नर्क निगोदे फंसियो, तने क्रोध सापे डसियो
नही धर्म ध्यानमा वसीयो त्हारी काल. ॥१॥

ओ जीवडा रे तू विषया रसने पीतो, प्रभु आगलथी नहीं बीतो ।
तने लागशे कर्म पलीतो त्हारी. ॥२॥

ओ जीवडा रे केम मोह निंदमां सुता, दुःख रूप पडे शिर जुत्ता ।
तू बने विषयना कुत्ता त्हारी. ॥३॥

ओ जीवडा रे त्हारा श्वास आवेने जावे, परलोकनी वाट बतावे ।
धन कण कंचन रही जावे त्हारी. ॥४॥

ओ जीवडा रे ए देह मुसाफिर खाना, एक दिन थशु रवाना ।
तू समझी लेने शाणा त्हारी. ॥५॥

ओ जीवडा रे तू मारू मारू माने, त्हारू भान नही ठेकाणे ।
गफलतमा राचे शाने त्हारी. ॥६॥

ओ जीवड़ा रे तने कर्म नाच नचाया, छे नश्वर काची काया।
तू छोड जगतनी माया म्हारी. ॥७॥

ओ जीवड़ा रे म्हारू क्षण क्षण आयु टुटे, म्हारू आत्मधन–
मोह लूटे। अणधार्यो प्राणते छूटे म्हारो. ॥८॥

ओ जीवडा रे तू जाग लाग प्रभु धर्मे, न पडतू खोटा कर्मे।
कूटाता नाहक भर्मे म्हारी. ॥९॥

ओ जीवडारे जोता जोता केई चलिया, जई मसाण मांही मलीया।
थया राख आगथी बलीया म्हारी. ॥१०॥

ओ जीवडारे जो आत्म कमलमां रमशो, तो चौराशी नहीं भमशो।
लब्धि शिव सुखडा जमशो म्हारी. ॥११॥

इति

श्री चन्द्राजा अने गुणावली राणीना पत्र

(प्रथम चन्द्राजा लिखित पत्र)

(मेनारज मुनिवर वन वा तुम अवतार)

स्वस्ति श्री मरुदेवीना जी, पुत्रने करूं प्रणाम,
जेहथी मन वंछित फल्याजी, उपकारी गुण धाम ।
गुणवती राणी वाचज्यो लेख उदार रे ॥१॥

स्वस्ति श्री आभापुरे जी, सेन उत्तमो धीर ।
पटराणी गुणावलीजी, सज्जन गुण गम्भीर गुण. ॥२॥

श्री विमलापुर नयरे थीजी, लिखित चन्द नरिन्द ।
हित आशीर्वाद वाचजो जी, मनमा धरिय आनन्द गुण. ॥३॥

अहींया कुशलक्षेम छे जी, नाभिनन्दन सुपसाय ।
जगमाँ यश कीर्ति घणीजी, सुरनर सेवे छे पाय गुण. ॥४॥

तुम क्षेम कुशल तणांजी, कागल लखजो सदाय ।
मलवु जे परदेशमाँ जी, तेतो कागलथी रे थाय गुण. ॥५॥

समाचार एक प्रीछजो जी, मोहन गुणमणिमाल ।
इहाँ तो सूरजकुण्ड थी जी, प्रगटी छे मगलमाल गुण. ॥६॥

तेहनी हर्ष वधाईनो जी, राणी ए जाणजो लेख ।
जो मनमाँ प्रेम ज हुवे तो, हर्षज्यो कागल देख गुण. ॥७॥

तुम सज्जन गुण सांभरे जी, क्षण क्षणमाँ सो वार ।
पणते दिन नवि वीसरे जी, कणेरनी काँब वेचार गुण ॥८॥

जाणी नहीं मुझ प्रीतडीजी, थइ तू सासुने आधीन ।
ते वातो संभारता जी, शुं कहिये मन थाये छे दीन गुण. ॥९॥

पण तू शुं करे कामिनी जी, शुं कहिये तुझ नार ।
स्त्री होवे नहीं केहनीजी, इम बोले छे संसार गुण. ॥१०॥

सुता वेचे बापने जी, हणे बाघ अने चोर ।
बीहे बिलाड़ी नी आँखथी जी, एहवी नारी निठोर गुण. ॥११॥

चाले बांकी दृष्टि थी जी, मनमाँ नव नवा संच ।
ए लक्षण व्यभिचारी ना जी, पंडित बोले प्रपंच गुण. ॥१२॥

एक समझावे नयणथी जी, एक समझावे रे हाथ ।
एह चरित्र नारी तणाजी, जाणे छे श्री जगनाथ गुण. ॥१३॥

आकाशना तारा गणेजी, तोले सायर नीर ।
पण स्त्री चरित्र न कही सकेजी, सुरगुरु सरिखो रे धीर
गुण. ॥१४॥

कपटी निःस्नेही कहीजी, वलि ते नारी सर्व ।
इन्द्र चन्द्रने भोलव्याजी, आपण करिये शो गर्व गुण. ॥१५॥

नदी नीर शुजगले तरेजी, कहेवाये छे रे अनाथ ।
एक विषयने कारणेजी, हणे कन्तने निज हाथ गुण. ॥१६॥

गाममाँ गीहे श्वान थी जी, वनमाँ भाले छे नाव ।
नासे दोरडे देखिनेजी, पकडे फणिधर नाग गुण. ॥१७॥

भर्तृहरि राजा वलिनी, विक्रमराय महाभाग ।
तिण सरखा नारी तणाजी, कडियन पाम्या ताग ॥१८॥

तो राणी तुज शु कहूंजी, ए छे ससारनी रीत ।
पण हूँ एम नथी जाणतो जी, तुझने एहनी अनिर्नीत गुण. ॥१९॥

तुझने न घटे कामिनी जी, करवो अन्तर एम ।
माहरी प्रीत खरी हतीजी, तू पलटाणी केम गुण. ॥२०॥

मुझथी छानी गोठडीजी, साथथी करी जेह ।
जिम वाव्या तिमने लव्याजी, फल पामी तू एह गुण. ॥२१॥

हूँ व्हालो नथी ताहरे जी, व्हाली साथ छे एक ।
तो बहुने मारा मनी जी, मोकले म्हालजो छेक गुण. ॥२२॥

दोष किस्यो तुझ दीजिये जी, जोतां हियड़े विमास ।
भावी भाव मिटे नहीं जी, लखिया कर्म तमास गुण. ॥२३॥

भावी भाव मटे नहीं जी, मनमाँ आवे छे रोष ।
प्रीति दशा संभारतां जी, बहु उपजे छे सन्तोष गुण. ॥२४॥

कागल थोड़ो हित घणो जी, मुझथी लख्युं नवि जाय ।
सागरमाँ पाणी घणुं जी, गागरमाँ न समाय गुण. ॥२५॥

घेऊँनी[1] पेलां नीपजे जी, पीलूं तरुवर तास ।
पहले चौथी मातरा जी, ते छे तू म्हारी पास गुण. ॥२६॥

दो[2] नारी अति सामलीजी, पाणी मांहे वसन्त ।
ते तुझ सजनी देखवाजी, अलजो अति ही अनन्त गुण. ॥२७॥

मठ[3] मांहे तापस वसेजी, विचमां दीजे जीकार ।
तुम अम एहवी प्रीतड़ी जी, जाणे छे किरतार गुण. ॥२८॥

सात[4] पांचने तेरमां जी, मेलवजो दोय चार ।
तेहनी पासे तुम वस्या जी, स्नेह नहीं य लगार गुण. ॥२९॥

ए चारे समस्या तणीजी, करज्यो अर्थ विचार ।
प्रीति दशा जिम उल्लसेजी, प्रगटे हर्ष अपार गुण. ॥३०॥

---

१ जीव २ आँखे ३ मजीठ ४ जंबीरी दाता को पास जाभ, ।

कागल वाची एहनोजी, लखजो तुरत जवाब ।
मामुने न जणावशो जी, जो होय डहापण आप गुण. ॥३१॥

वली हलकारा मुखथकी जी, बहु जाणजो अवदात ।
कागल थी अधिकी घणीजी, कहेशे मुखथी वात गुण. ॥३२॥

इणिपरे चन्द नरेसरे जी, लखियो लेख श्रीकार ।
दीप विजय कहे साभलोजी, आगल वात रसाल गु०. ॥३३॥

★ द्वितीय गुणावली का लिखित पत्र ★

दोहा

श्री वरदा जग वरदिका, शारदा मात दयाल ।
सुरनर जस सेवा करे, जाणी जास रसाल ॥१॥

त्रिभुवन मे कीर्ति सदा, वाहन हंस सुसार ।
जड बुद्धि पल्लव किया, बहु पण्डित कविराय ॥२॥

पुस्तक वीणा कर धरे, श्री अजारी ग्राम ।
काश्मीर मरु अन्तमे, जेहनो ठाम निवास ॥३॥

ए जगदम्बा पद नमी, वरणावुं बीजो लेख ।
श्रोता ने सुणता थका, प्रगटे हर्ष अशेष ॥४॥

चन्द लेख वांची करी, गुणावली निजनार ।
उत्तर पाछो कंतने, लेख लखे श्री कार ॥५॥

(तर्ज—रे जीव मान न कीजिये)

स्वस्ति श्री विमलापुरे, वीरसेन कुल चन्द रे ।
राज राजेश्वर राजिया, साहिब चन्द नरीन्द रे
वांचजो लेख मुझ वालहा ॥१॥

श्री आभापुर नयर थी, हुकमी दासी सकाम रे ।
लिखित राणी गुणावली, वांचजो म्हारी सलाम रे वांच. ॥२॥

साहिब पुण्य पसाय थी, इहां छे कुशल कल्याण रे ।
व्हालाना खेम कुशल तणा, कागल लखजो सुजाण रे
वांचजो. ॥३॥

समाचार एक प्रीछजो, चत्रीसश सजीग रे ।
मुझ दासीनी ऊपरे, कृपा करी सड धीर रे वाचजो. ॥४॥

व्हाला ए लेख जे मोकल्यो, सेवक गिरधर साथे रे ।
खेमे कुशले आवियो, पहोंत्यो छे हाथो हाथ रे वाचजो. ॥५॥

व्हालाजी कागल देखीने, टलिया दु:खना वृन्द रे ।
पियुने मलवा जेटलो, उपन्यो छे आणन्द रे वाचजो. ॥६॥

आज कु डनी महेरथी, सफल थयो अवतार रे ।
ते सहु कुशल कल्याणना, आव्या छे समाचार रे वाचजो. ॥७॥

मोल वरसना वियोगनु , प्रगट्यु दु:ख अपार रे ।
कागल वाचता वाचता, चाली छे आसुनी धार रे वाचजो. ॥८॥

जे व्हाला ए लेखमा, लखिया ओलभा जेहरे ।
मुझ अवगुण जोता थका, थोडा लखिया छे एहरे वाच. ॥६॥

साहिब लखवा जोग छो, हुँ साभलवा जोगरे ।
जेहवा दव तेवी पातरी, साची कहे वात लोभ रे वाचजो. ॥१०॥

समस्या चार लखि तुमे, ते समभी छु स्वाम रे ।
मनमा अर्थ विचारता, हरखे छे आतम राम रे वाचजो. ॥११॥

हूँ तो अवगुणनी भरी, अवगुण गाडां नालरे ।
जिम कोई वायुना जोगथी, वगड़ी आंबा नालरे वांच. ॥१२॥

मुझ अवगुण जोता थकां, नावे तमने महेर रे ।
पण गिरुआ गंभीर छो, जेहवी सायर लहेर रे वांचजो. ॥१३॥

गिरुवा सहजे गुण करे, कंतम कारण जाण रे ।
जल सींची सरोवर भरे, मेघ न मागे दाणरे वांचजो. ॥१४॥

पत्थर मारे छे तेहने, फल आपछे आरे ।
तिम तुम सरिखा साहिबा, गिरुआ गुणनी लुवरे वांचजो. ॥१५॥

कापे चंदन तेहने, आपे छे सुगन्ध अपार रे ।
मुझ अवगुण न आव्या हिए. धन्य धन्य तुम अवतार रे
वांचजो. ॥१६॥

मुझ सरीखी कोई पापणी, दीसे नहीं संसारे रे ।
मान्यु सासुनो कह्यो, केतणियो भरतारे रे वांचजो. ॥१७॥

में जाणुं नहीं एहवुं, हूँ तो भोली नाररे ।
सासुने काने चढ़ी, समझी नहीं लगार रे वांचजो. ॥१८॥

में आगलथी लही नहीं, सासु एहवीं नाथरे ।
खावी मोठनी खिचड़ी, जाइ गेलानी साथ रे वांचजो. ॥१९॥

काईक काचा पुण्य थी, सद्‌ बुद्धि पण पलटाय रे ।
निम राणीने रोततुं, सासानु मन थाय रे वाचजो. ॥२०॥

करी प्रपंच इण सासुए, घणो देखाड्यो राग रे ।
पछे तो वात नथी गई, थयो पीळनो कागरे वाचजो. ॥२१॥

किहा आभा किहा विमलापुरी, जोया जेह तमाम रे ।
हामी थी खासी थई, करवा पड्या मिमाम रे वाचजो. ॥२२॥

परणयानी सहु वातडी, मुझने कही प्रभात रे ।
जो ते ठेकाणे दाटती, तो एवड नहीं थात रे वाचजो. ॥२३॥

मिठलनी सहु वातडी, म्हे कही सासुने कानरे ।
पछे तो झाल्यु नवि रह्यु, प्रगट्यु तीजू तान रे वाच. ॥२४॥

म्हाफ कर्यु मुझने नड्यु, आह न आव्यु कांपरे ।
चोरनी माता कोठीमाँ, मुख घाली जिम रोय रे वाच. ॥२५॥

पस्तावो शो करवो हवे, कयु काई न जायरे ।
पाणी पी घर पूछताँ, लोकोमा हासी थाय रे वाचजो. ॥२६॥

जे काई भावी भावमा, जे विधि लखिया लेखरे ।
ते सवि भोगववा पडे, तिहा नवि मीन न मेखरे वाच. ॥२७॥

माखना जाया विना, सोल वरस गया जेह रे ।
मुझ अवगुणनी वातडी, जाणे केवली तेह रे वाचजो. ॥२८॥

पण कुकुंटथी जे नर थया, ते विस्तरशे वात रे ।
सासु साभलशे कदा, वलि करशे उत्पात रे वाचजो. ॥२६॥